RNI.No. — GUJHIN/2012/45192

सूरत भूमि

हिन्दी दैनिक

संपादक : संजय आर. मिश्रा

वर्ष-11 अंक:157 ता. 17 दिसम्बर 2022, शनिवार , कार्यालय:114, न्यु प्रियंका टाउनशीप अपार्टमेंट, डिंडोली, डिंडोली, उधना सूरत (गुजरात) मो. 9327667842, 9825646069 पृष्ठ: 8 कीमत: 2:00 रुपये

ho@suratbhumi.com /Suratbhumi.com /Suratbhumi /Suratbhumi /Suratbhumi /Suratbhumi

शानदार खूबियों से लैस से नेवी का ये डिस्ट्रॉयर, घातक बनाती हैं ब्रह्मोस और बराक जैसी मिसाइलें

नई दिल्ली। भारतीय नौसेना के बेड़े की ताकत में और इजाफा होने वाला है। इस सप्ताह के अंत में स्टेल्थ गाइडेड मिसाइल डेस्ट्रॉयर INS Mormugao की कमीशनिंग होने वाली है। डेस्ट्रॉयर में लगाए गए 75 फीसदी उपकरण और हथियार भारत में ही बने हैं। गोवा के ऐतिहासिक बंदरगाह शहर मोरमुगाओ के नाम पर 7,400 टन वजनी INS Mormugao का नाम रखा गया है। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह 18 दिसंबर को इसे गोवा मुक्ति दिवस की पूर्व संध्या पर मुंबई में इंडियम नेवी में कमीशन करेंगे। INS Mormugao ब्रह्मोस और बराक-8 जैसी मिसाइलों से लैस है। देश के सबसे आधुनिक एडवांस्ड गाइडेड मिसाइल डिस्ट्रॉयर में इजराइल का मल्टी फंक्शन सर्विलांस थ्रेट अलर्ट रडार एमएफ-स्टार लगा है। ये कई किलोमीटर दूर से हवा में मौजूद लक्ष्य को पहचान लेगा जिससे सटीक निशाना लगाया जा सकेगा। ये डिस्ट्रॉयर उड़ते हुए विमान पर 70 किलोमीटर और जमीन या समुद्र पर मौजूद लक्ष्य पर 300 किलोमीटर दूर से निशाना लगाने में सक्षम है। INS Mormugao 127 मिलीमीटर गन से लैस है, इसमें एके-630 एंटी मिसाइल गन सिस्टम भी है। Mormugao पर दो आरबीईयू-6000 एंटी सबमरीन रॉकेट लांचर भी लगे हैं। इस पर बेहद खराब मौसम के दौरान भी नौसेना के हेलीकॉप्टर लैंड कर सकेंगे।

दुश्मन की मिसाइलों को दे सकता है चकमा

163 मीटर लंबे और 730 टन वजनी इस युद्धपोत में मिसाइलों को चकमा देने की क्षमता भी है। इस युद्धपोत पर 50 अधिकारियों समेत 250 नौसैनिक तैनात रहेंगे और इसमें 4 शक्तिशाली गैस टर्बाइन इंजन लगे हैं। समुद्र में 56 किलोमीटर प्रति घंटा (30 नॉटिकल मील) की रफ्तार से चलने वाला ये डिस्ट्रॉयर 75 हजार वर्ग किमी समुद्री क्षेत्र की निगरानी कर सकता है।

राहुल की भारत जोड़ो यात्रा उन्नीस दिसंबर को अलवर जिले में करेगी प्रवेश

अलवर। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी के नेतृत्व में कन्याकुमारी से कश्मीर तक निकाली जा रही कांग्रेस की भारत जोड़ो यात्रा 19 दिसंबर को दोपहर में अलवर जिले में प्रवेश करेगी।

पार्टी सूत्रों के अनुसार यात्रा के अलवर आगमन को लेकर की जा रही तैयारियों को अंतिम रुप दिया जा रहा है और भारत जोड़ो यात्रा के जिले में प्रवेश करने के बाद मालाखेड़ा में सभा होगी । उसी दिन रात्रि विश्राम अलवर के समीप महुआ खुर्द में होगा।

यात्रा बीस दिसंबर को अलवर शहर की कटी घाटी से सुबह छह बजे शुरू होगी जो शहर के प्रमुख मार्गो से होते हुए लोहिया का तिबारा पहुंचेगी । यहां पर दोपहर का विश्राम लेने के बाद फिर शुरू होगी और शाम को साढ़ छह बजे रामगढ़ पहुंचेगी जहां नुक्कड़ सभा होगी। इसके बाद गाड़ियों के जरिए दस किलोमीटर दूर नौगांवा के राजकीय कृषि कॉलेज पहुंचकर रात्रि विश्राम होगा। अगले दिन 21 दिसंबर को करीब चार किलोमीटर दूर नौगावा बॉर्डर से हरियाणा में यात्रा प्रवेश करेगी। राहुल गांधी की यात्रा को लेकर प्रशासन पूरा चाक-चौबंद है। करीब ढाई हजार पुलिसकर्मी व अधिकारी अलवर में यात्रा के दौरान तैनात रहेंगे । यात्रा में आईपीएस, आरपीएस, आरएएस, एसएचओ सुरक्षा में शामिल हैं। रात्रि विश्राम के लिए वाटर प्रूफ डोम बनाए जा रहे हैं और कार्यकर्ताओं को ठहरने और खाने की तीन श्रेणियों में व्यवस्था की गई है। पूर्व केंद्रीय मंत्री भंवर जितेंद्र सिंह , राज्य के कैबिनेट मंत्री टीकाराम जूली, मंत्री शकुंतला रावत, मंत्री जाहिदा खान, मेवात विकास बोर्ड के अध्यक्ष जुबेर खान, विधायक साफिया खान कांग्रेस के जिलाध्यक्ष योगेश मिश्रा , महासचिव रिपुदमन गुप्ता ,जिला प्रमुख बलवीर सिंह छिल्लर सहित कई पार्टी नेता

● यात्रा बीस दिसंबर को अलवर शहर की कटी घाटी से सुबह छह बजे शुरू होगी जो शहर के प्रमुख मार्गो से होते हुए लोहिया का तिबारा पहुंचेगी । यहां पर दोपहर का विश्राम लेने के बाद फिर शुरू होगी और शाम को साढ़ छह बजे रामगढ़ पहुंचेगी जहां नुक्कड़ सभा होगी। इसके बाद गाड़ियों के जरिए दस किलोमीटर दूर नौगांवा के राजकीय कृषि कॉलेज पहुंचकर रात्रि विश्राम होगा।

और कार्यकर्ता राहुल गांधी की यात्रा के स्वागत की तैयारियों में लगे हुए हैं । मालाखेड़ा में होने वाली सभा स्थल को भी अंतिम रूप दिया गया है । जिस पर युद्ध स्तर से काम चल रहा है । पूर्व में रामगढ़ इलाके में रात्रि विश्राम के लिए बीजवा का चयन किया गया था लेकिन परिस्थिति और सुविधा के हिसाब से अब नौगावा कृषि कॉलेज को चुना गया है । जहां-जहां रात्रि विश्राम और सभा स्थल है वहां कांग्रेस के नेता, मंत्री ,पुलिस और प्रशासनिक अधिकारियों ने निरीक्षण किया और तैयारियों का जायजा लिया। पूरी यात्रा में 50 से अधिक स्थानों पर श्री राहुल गांधी का स्वागत किया जाएगा और रात्रि विश्राम स्थलों पर मेवाती और राजस्थानी सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किए जाने का कार्यक्रम है । राहुल गांधी की यात्रा को देखते हुए अलवर शहर सहित आसपास के सभी होटल बुक हो चुके हैं।

जम्मू-कश्मीर के राजौरी में सेना के संतरी ने की फायरिंग, 2 स्थानीय लोगों की मौत

श्रीनगर। जम्मू-कश्मीर के राजौरी जिले में भारतीय सेना के एक संतरी द्वारा कथित तौर पर फायरिंग की घटना में दो नागरिकों की मौत हो गई। वहीं, एक व्यक्ति के घायल होने की भी खबर है। इस घटना के कारण पूरे इलाके में स्थिति काफी तनावपूर्ण है। सेना के अधिकारियों ने गोलीबारी की पुष्टि करते हुए कहा कि जिनकी मौत हुई है वे सेना के साथ कुलियों का काम कर रहे थे। अधिकारी के मुताबिक, वे आज सुबह करीब 6.15 बजे राजौरी में एक सैन्य शिविर के अल्फा गेट के पास आ रहे थे। इसी दौरान उन पर गोलीबारी की गई। इस घटना में राजौरी के ही रहने वाले शलिंदर कुमार और कमल किशोर की मौत हो गई। अधिकारी ने बताया कि गोलीबारी के कारणों का अभी पता नहीं चल पाया है। उन्होंने कहा कि इलाके में स्थिति तनावपूर्ण है। आक्रोशित लोगों ने शिविर पर पथराव भी किया। अधिकारियों का कहना है कि स्थिति को नियंत्रण में करने के लिए एक टीम को तुरंत मौके पर भेजा गया।

मां की कोख के बजाय फैक्टरी में पैदा होंगे बच्चे, इस सुविधा से बच्चों में मनचाही आदतें डलवा सकेंगे

नई दिल्ली। एक्टोलाइफ के वैज्ञानिकों का यह भी दावा है कि माता-पिता चाहें तो बच्चे के जीन में बदलाव भी करा सकते हैं। बच्चे की 'कोई भी खासियत' जैसे बालों का रंग, आंखों का रंग, ऊंचाई, बुद्धि और त्वचा के रंग को आनुवंशिक रूप से 300 से अधिक जीनों के माध्यम से बदला जा सकता है। एक्टोलाइफ वैज्ञानिकों और इस पूरी प्रक्रिया की शुरुआत करने वाले हासिम अल गायली ने फेसबुक पर एक वीडियो जारी किया है, जिसमें दुनिया का पहला कृत्रिम भ्रूण केंद्र दिखाया गया है। इसमें बच्चे को विकसित होते हुए देखा जा सकता है। एजेंसी

ग्रोथ पॉड्स में गर्भ की तरह पलेंगे बच्चे-एक्टोलाइफ के पास कई उच्च क्वालिटी के उपकरण वाली 75 प्रयोगशालाएं मौजूद हैं। हर प्रयोगशाला में 400 ग्रोथ पॉड्स हैं, जहां गर्भ की तरह बच्चे पल सकते हैं। एक ग्रोथ पॉड्स में एक बच्चा पलता है। हर ग्रोथ पॉड को बिल्कुल उसी तरह से तैयार किया गया है,

जैसा कि मां का पेट यानी गर्भाशय होता है।

एक्टोलाइफ के पास एक साल में सुरक्षित तरीके से 30 हजार तक बच्चों को जन्म देने की सुविधा है।

आर्टिफिशियल कोख में बच्चे पूरी तरह सुरक्षित रहेंगे-वैज्ञानिकों के मुताबिक, कृत्रिम कोख में बच्चे मां के गर्भ की तरह ही सुरक्षित रहेंगे। इस दौरान उनके खान-पान और उनसे जुड़ी बीमारियों का पूरा ध्यान रखा जाएगा। ग्रोथ पॉड में सेंसर भी होगा जो बच्चे के महत्वपूर्ण संकेतों जैसे दिल की धड़कन, रक्तचाप, सांस लेने की दर और ऑक्सीजन की निगरानी करेगा। हर पॉड (जिसमें भ्रूण पल रहा होगा) को एक स्क्रीन से जोड़ा गया है, जहां कोई भी मां-बाप अपने बच्चे के विकास की प्रक्रिया को सीधे तौर पर देख सकते हैं।

यह है उद्देश्य

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक, यह सुविधा फिलहाल वास्तव में मौजूद नहीं है लेकिन वीडियो में यह दावा किया गया है कि इसका उद्देश्य जनसंख्या में गिरावट से पीड़ित देशों की मदद करना है। 08:39 मिनट के एनीमेशन वीडियो में दावा किया गया है कि यह सुविधा पूरी तरह से अक्षय ऊर्जा से संचालित होगी। इसमें कहा गया है कि एक्टोलाइफ सुविधा के लिए प्रयोगशाला में बड़ी संख्या में पॉड्स या कृत्रिम गर्भ होंगे, जिसके अंदर बच्चों को पाला जाएगा। डब्ल्यूएचओ की एक रिपोर्ट के मुताबिक गर्भावस्था में स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के चलते दुनिया भर में हर साल 3 लाख महिलाओं की मौत होती है।

भारत ने परमाणु सक्षम अग्नि-5 मिसाइल का परीक्षण किया

नई दिल्ली। चीन के साथ वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) पर बढ़ते तनाव के बीच भारत ने 5,500 से अधिक किलोमीटर की नोटिफाइड आपरेशनल रेंज वाली अग्नि-5 अंतरमहाद्वीपीय परमाणु सक्षम बैलिस्टिक मिसाइल का सफल परीक्षण किया। मिसाइल का परीक्षण गुरुवार को ओडिशा के तट से दूर अब्दुल कलाम द्वीप से किया गया। राजधानी कटक के साथ-साथ कुछ अन्य उत्तर पूर्वी राज्यों में कई लोगों ने सोशल मीडिया पर मिसाइल के आसमान में उड़ने के वीडियो पोस्ट किए। अग्नि 5 मिसाइल हल्के वारहेड के साथ लगभग पूरे चीन अपनी मारक सीमा में ले लेती है और यह लगभग 8000 किलोमीटर तक की यात्रा कर सकती है। केंद्रीय मंत्री प्रल्हाद जोशी ने इसे ऐतिहासिक मील का पत्थर बताते हुए ट्विटर पर लिखा कि मिसाइल रक्षा क्षेत्र में बहुत बड़ी उपलब्धि है और राष्ट्रीय सुरक्षा को काफी हद तक मजबूत करेगी क्योंकि यह 5400 किलोमीटर से अधिक की यात्रा कर सकती है। उच्च स्तर की विश्वसनीयता और सटीकता सुनिश्चित करने के लिए अग्नि-5 मिसाइल 'कॉम्पैक्ट एविओनिक्स 'से लैस है। इसमें उड़ान के

दौरान होने वाली गड़बड़ी के लिए खुद को गाइड करने की क्षमता है। इससे पहले इस साल जून में, भारत ने 4,000 किलोमीटर की मारक क्षमता वाली इंटरमीडिएट रेंज बैलिस्टिक मिसाइल अग्नि-4 का सफल परीक्षण किया था।

थाने में रखी स्पिरिट से ही बनाई गई थी जहरीली शराब, 53 मौतों का जिम्मेदार कौन?

पटना। सारण में जहरीली शराब से हुई मौत में पुलिस-प्रशासन की बड़ी लापरवाही सामने आ रही है। जहरीली शराब को बनाने में थाने में जब्त स्पिरिट के इस्तेमाल की आशंका जताई जा रही है। प्रारंभिक स्तर पर जांच में यह बातें सामने आई हैं। मद्य निषेध, उत्पाद एवं निबंधन विभाग ने इस दिशा में जांच भी शुरू कर दी है। सूत्रों के अनुसार, मशरक थाने के मालखाने में रखी गई जब्त स्पिरिट के कंटेनर से ढक्कन गायब मिले हैं। कई कंटेनर से जब्त स्पिरिट भी गायब है। ऐसे में आशंका जताई जा रही है कि जब्त स्पिरिट को शराब धंधेबाजों को बेचा गया है। इसमें चौकीदार की मिलीभगत की बात भी सामने आ रही है। हालांकि पुलिस या उत्पाद अधिकारी इस बारे में कुछ भी बोलने से बच रहे हैं और जांच जारी रहने की बात कह रहे हैं। छपरा के उत्पाद अधीक्षक रजनीश कुमार ने बताया कि मशरक थाना परिसर से स्पिरिट गायब होने का मामला उनके संज्ञान में नहीं है,

लेकिन सभी थाने में जब्त कर रखी गई शराब और स्पिरिट की जांच की जा रही है। उसका सैंपल लिया जा रहा है।

साक्ष्य के लिए जब्त कर रखी गई थी स्पिरिट

शराबबंदी कानून में संशोधन के बाद जब्त शराब या स्पिरिट को तुरंत नष्ट करने का आदेश दिया गया है, लेकिन पुराने मामलों में जब्त क गई शराब या स्पिरिट अब भी साक्ष्य के रूप में रखे हुए हैं। जिस थाना क्षेत्र से अवैध शराब या स्पिरिट की खेप पकड़ी जाती थी, वहां के मालखाने में प्रदर्श के रूप में इसे रखा गया है। आशंका जताई जा रही है कि इसी जब्त स्पिरिट का शराब माफिया जहरीली शराब बनाने में इस्तेमाल कर रहे हैं।

आज सौंपी जा सकती है जांच रिपोर्ट

सारण में जहरीली शराब से मौत मामले की जांच के लिए मुख्यालय से गई दो सदस्यीय टीम शुक्रवार को अपनी रिपोर्ट सौंप सकती है। मद्य निषेध, उत्पाद एवं निबंधन विभाग के संयुक्त आयुक्त कृष्णा पासवान और उप-सचिव निरंजन कुमार सारण के अलग-अलग इलाकों में पीड़ित परिवारों, ग्रामीणों और स्थानीय अधिकारियों से बात कर अपनी रिपोर्ट तैयार करेंगे। जांच के दौरान शराब के धंधेबाजों की भी जहरीली शराब से मौत की बात सामने आई है।

सावधान! देश में शीतलहर ने दे दी दस्तक, इन राज्यों में 4 डिग्री तक गिरेगा पारा

नई दिल्ली। पहाड़ों पर हो रही बर्फबारी और मैदानी इलाकों में चली हवाओं ने पारा को लुढ़का दिया है। लोग कड़ाके की ठंड का सामना कर रहे हैं। धीरे-धीरे तापमान में गिरावट दर्ज की जा रही है। मौसम विज्ञान विभाग ने चेतावनी जारी की है कि 16 से 18 दिसंबर तक देश के कई हिस्सों में शीतलहर की संभावना बन रही है। राजस्थान में इसके सबसे अधिक असर देखने को मिल सकता है। इसके अलावा हिमाचल प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, बिहार और उत्तर प्रदेश में भी 2-4 डिग्री तक पारा गिरने की संभावना है।

मौसम विभाग के मुताहिक, अगले 24 घंटे के दौरान उत्तर पश्चिम भारत में न्यूनतम तापमान में लगभग 2 डिग्री सेल्सियस की गिरावट की संभावना है। आईएमडी ने अपने पूर्वानुमान में कहा है कि अगले 4-5 दिनों के दौरान मध्य भारत के न्यूनतम तापमान में धीरे-धीरे 2-4 डिग्री सेल्सियस की गिरावट आने की संभावना है। वहीं, अगले 2 दिनों के दौरान पूर्वी भारत में न्यूनतम तापमान में धीरे-धीरे 2-3 डिग्री सेल्सियस की गिरावट आने की संभावना है।

दिल्ली में भी बढ़ने लगी ठंड

देश की राजधानी दिल्ली में में शुक्रवार को न्यूनतम तापमान लगभग 5 डिग्री सेल्सियस और अधिकतम 23 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है। इसके कारण लोगों को रात को कड़ाके की ठंड का सामना करना पड़ सकता है। आपको बता दें कि गुरुवार को न्यूनतम तापमान सामान्य से दो डिग्री कम 6.4 डिग्री सेल्सियस और अधिकतम तापमान 23.4 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। गुरुवार को दिल्ली में न्यूनतम और अधिकतम तापमान इस मौसम में अब तक के सबसे निचले स्तर पर गिर गया। मौसम विभाग के अधिकारियों ने साफ आसमान और उत्तर-पश्चिमी हवाओं के कारण ठंड की भविष्यवाणी की। भारत मौसम विज्ञान विभाग के अधिकारियों ने सर्द रातों के लिए मुख्य रूप से ठंडी हवाओं और साफ आसमान को जिम्मेदार ठहराया है।

उत्तराखंड में सर्दी का यलो अलर्ट

उत्तराखंड के मैदानी इलाकों में पहाड़ के मुकाबले रातें ज्यादा सर्द हो गई हैं। मसूरी, मुक्तेश्वर, लैंसडौन, टिहरी के मुकाबले देहरादून, पंतनगर, बाजपुर आदि मैदानी इलाकों में रात के समय ठंड का प्रकोप है। मौसम विभाग के आंकड़ों के अनुसार, गुरुवार को मसूरी का न्यूनतम तापमान 9.4, मुक्तेश्वर का 6.7, लैंसडौन का 7.5, टिहरी का 7.4, कौसानी में 7.0 डिग्री सेल्सियस रहा। जबकि इसके मुकाबले देहरादून का न्यूनतम तापमान 4.9, पंतनगर का 3.1, बाजपुर का 3.0 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। मैदानी इलाकों में न्यूनतम तापमान सामान्य से दो से तीन डिग्री सेल्सियस कम चल रहा है। मौसम विज्ञान केंद्र देहरादून की ओर से जारी पूर्वानुमान के अनुसार, 18 दिसंबर तक ऊधम सिंह नगर में उथला कोहरा रहेगा। बाकी पूरे राज्य में मौसम साफ रहेगा। मैदानी इलाकों में रात के वक्त कड़ाके की ठंड को लेकर मौसम विभाग ने येलो अलर्ट जारी किया है।

पहाड़ के घाटी वाले इलाकों में भी ठंड

आमतौर पर पहाड़ के घाटी वाले इलाके पहाड़ी से गर्म रहते हैं। जबकि दिसंबर महीने में राज्य के घाटी वाले समतल इलाकों में ठंड का प्रकोप है। श्रीनगर, उत्तरकाशी, पिथौरागढ़ में रात के वक्त पारा काफी गिर रहा है। गुरुवार को श्रीनगर का न्यूनतम तापमान 4.1, उत्तरकाशी का 3.5 और पिथौरागढ़ का 3.6 डिग्री सेल्सियस रहा।

बिहार में भी बर्फीली हवाओं का असर

बिहार में पछुआ हवा की रफ्तार बढ़ी है। इससे पटना समेत राज्य के 17 जिलों में ठंड बढ़ी है। सुपौल और पूर्णिया में कुछ जगहों पर घना कोहरा रहा, जबकि अन्य जगहों पर आंशिक कोहरा बना हुआ है। मौसमविदों के मुताबिक पर्वतीय इलाकों में बर्फबारी की वजह से राज्य भर में ठंड बढ़ी है।

500 साल पुरानी मूर्ति की फांस में नीलामी को रोक गया डीजीपी की मुहिम ने दिखाया रंग

चेन्नई । तमिलनाडु आइडल विंग के डीजीपी जयंत मुरली ने चोरी हुई 500 साल पुरानी मूर्ति की फांस में नीलामी को रोक दिया। एलीट आइडल विंग ने पाया कि ऑक्शन हाउस ने मूर्ति को 200000 यूरो से 300000 यूरो (लगभग 1.76 करोड़ रुपये से 2.64 करोड़ रुपये) के प्राइस बैंड में नीलामी के लिए रखा था। उन्होंने ट्वीट किया नीलामी बंद करो इस हमें लौटाओ यह भारत के तमिलनाडु से चुराई गई है। जयंत मुरली ने एंटीक्विटीज कोएलिशन को भी टैग किया जो कल्चर रैकेटियरिंग और आरक्योलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया (एएसआई) के खिलाफ एक अंतरराष्ट्रीय अभियान चलाता है। पुलिस द्वारा राज्य सरकार को सूचित करने के तुरंत बाद केंद्रीय गृह मंत्रालय को संदेश भेजा गया इसके बाद पेरिस में भारतीय दूतावास के माध्यम से फ्रांसीसी अधिकारियों के साथ इस मुद्दे को उठाया। राज्यों के पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) ने बताया कि आइडल विंग ने नीलामी को रोकने के लिए राजनयिक माध्यमों का इस्तेमाल करते हुए संचार स्थापित किया। 500 साल पुरानी नटराज की मूर्ति थूथुकुडी जिले के कयाथर में श्री कोठंडा रामेश्वर मंदिर की है और 1972 में चोरी हो गई थी ।भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के अधिकारियों के अनुसार कांस्य मूर्ति विजयनगर काल (15वीं से 16वीं शताब्दी) की है। मूर्ति विंग के अधिकारियों को सूचना मिलने के बाद कि मूर्ति की नीलामी की जा रही है इंडो-फ्रेंच इंस्टीट्यूट पुडुचेरी में मूर्तियों की तस्वीरों की जांच की और पाया कि चोरी हुई मूर्ति की तस्वीरें और संस्थान के रिकॉर्ड समान हैं।

श्रीनगर जामा मस्जिद के अंदर फोटो लेने तथा पुरूषों एवं महिलाओं के साथ बैठने पर रोक

श्रीनगर । श्रीनगर की ऐतिहासिक जामा मस्जिद के प्रबंधन ने मस्जिद के अंदर फोटो लेने पर रोक लगा दी है। साथ ही पुरूष एवं महिलाओं के लॉन में साथ बैठने को प्रतिबंधित किया गया है। मस्जिद परिसर के चारों ओर लगायी गयी अधिसूचना में अंजुमन औकफ सेंट्रल जामा मस्जिद ने कहा कि अंदर फोटोग्राफी उपकरण ले जाने की भी मनाही है। उसने कहा, '' छायाकारों या कैमराकर्मियों पर मस्जिद के अंदर किसी प्रकार के फोटो लेने पर रोक है। किसी प्रकार का फोटो लेने के उपयोग में आने वाले उपकरणों को अंदर ले जाने की बिल्कुल इजाजत नहीं है और ऐसे उपकरणों को गेट पर रोक दिया जाए। '' उसने अधिसूचना में कहा, ''किसी को मस्जिद के अंदर भोजन या कोई अन्य खाद्य पदार्थ खाने की अनुमति नहीं है। ऐसे आगुंतकों को द्वार पर ही रोक दिया जाए।'' चौदहवीं सदी की इस मस्जिद के प्रबंधन ने अपने सुरक्षाकर्मियों को उसके निर्देशों को तत्काल लागू करने का निर्देश दिया है। महिलाएं मस्जिद में जा सकती हैं यदि उनके लिए पुरूषों से अलग जगह निर्धारित हो।

जिस भी सिनेमाघर में लगे पठान उस फूंक दो महंत राजू दास की लोगों से अपील

अयोध्या । शाहरुख खान और अभिनेत्री दीपिका पादुकोण की अगले साल आने वाली फिल्म पठान' को लेकर विवाद बढ़ता जा रहा है। फिल्म के पहले गाने 'बेशर्म रंग' में दीपिका के भगवा रंग की बिकिनी को लेकर देश भर में विवाद हो गया है। फिल्म के बहिष्कार करने वालो में अब नया नाम हनुमान गढ़ी (अयोध्?या) के महंत राजू दास का भी जुड़ गया है। उन्होंने कहा कि जिस भी थिएटर में पठान लगे उस फूंक दिया जाए महंत ने इस विवाद पर एक वीडियो जारी किया है। वीडियो में महंत को यह कहते हुए सुना जा सकता कि पठान फिल्म में सनातन धर्म का मजाक उड़ाया गया है और मैं लोगों से उन सिनेमाघरों को जलाने का आग्रह करता हूं जहां पठान प्रदर्शित की जाएगी। वीडियो में कहा कि सनातन धर्म का बार-बार बॉलीवुड और हॉलीवुड में मजाक उड़ाया गया है और हिंदू देवी-देवताओं का भी अपमान किया गया है। दीपिका पादुकोण ने बेशर्म रंग में भगवा रंग की बिकिनी पहनी थी जिससे संतों और पूरे देश की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंची है। इसके पहले विश्व हिंदू परिषद (विहिप) के राष्ट्रीय प्रवक्ता विनोद बंसल ने भी फिल्म पर प्रतिबंध लगाने और बहिष्कार करने की मांग की थी। बंसल ने बेशर्म रंग के बोल में दीपिका की ड्रेस पर तंज कसते हुए वीडियो शेयर किया था। बंसल ने ट्विटर पर लिखा था कि क्या इस्लाम को मानने वाला पठान मुस्लिम प्रतीकों वाली महिला के साथ इसतरह दृश्य फिल्मा सकता है!! लव जिहादियों की बेहूदगी की भी हद होती है..!!'

आप सांसद राघव चड्ढा ने संसद में उठाया भावनाएं भड़काने वाली डिबेट्स का मुद्दा

नई दिल्ली । आम आदमी पार्टी के वरिष्ठ नेता और पंजाब से राज्यसभा सांसद राघव चड्ढा संसद में कुछ चैनल्स पर होने वाली भावनाएं भड़काने वाली डिबेट्स का मुद्दा उठाया। उन्होंने कहा कि सरकार भावनाएं भड़काने वाली डिबेट्स करवाने वाले चैनल्स पर क्या कार्यवाही कर रही है। इस पर सूचना और प्रसारण मंत्री अनुराग ठाकुर ने सदन में ही उनके सवालों को जवाब दिया है। उन्होंने कहा कि ऐसी शिकायतों को निवारण तीन चरण में किया जाता है। राज्यसभा सांसद राघव चड्ढा ने कहा कि इस देश में अधिकतर चैनल्स शाम 5 बजे के बाद से लेकर रात 11 बजे तक एक भड़काऊ बहस कराके मानसिक प्रदूषण फैलाने का काम करते हैं। सरकार ऐसे चैनल्स के खिलाफ क्या एक्शन ले रही है। राघव चड्ढा के सवालों का जवाब देते हुए केंद्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर ने कहा कि अगर आपकी कोई ऐसी शिकायत है तो उसके सामाधान के लिए तीन चरण की प्रक्रिया अपनाई जाती है। उन्होंने कहा कि पहला चरण- ये शिकायत जिस चैनल के खिलाफ होती है उसके ही स्तर पर इसका समाधान कर दिया जाता है। दूसरा चरण- ऐसी कंप्लेन का निवारण एसोसिएशन स्तर पर भी होता है. अगर इन दोनों चरणों के स्तर पर भी शिकायतों का निवारण नहीं हो पाता है तो फिर इंटरनल डिपार्टमेंट अपने स्तर पर इस मामले को देखता है.

बार-बार टूट रही वंदे भारत ट्रेन की नाक रेलमंत्री ने बताया प्लास्टिक की क्वालिटी में कोई समस्या नहीं

नई दिल्ली । भारतीय रेल की प्रीमियर ट्रेन वंदे भारत देश के छह रूटों पर चल रही है। अपनी रफ्तार के साथ-साथ ये ट्रेन दुर्घटनाओं के कारण भी चर्चा में बनी हुई है। संसद में भी वंदे भारत ट्रेन हादसों का मामला पहुंच गया। सांसद ए राजा ने वंदे भारत के हादसों को लेकर सवाल कर पूछा कि क्या ट्रेन में इस्तेमाल की गई रिफंफोर्स्ड प्लास्टिक की क्वालिटी घटिया है इसकारण से बार-बार ट्रेन का अगला हिस्सा टूट रहा है। ए राजा ने पूछा कि ट्रेन में दबाव झेलने की क्षमता बनाने के लिए इस कार्बन स्टील से क्यों नहीं बनाया जा रहा है? सांसद के सवाल का जवाब देकर रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कहा कि पिछले छह महीनों में वंदे भारत के साथ 68 घटनाएं हुई है। जिसमें से एक बार ट्रेन की बियरिंग फेल होने के कारण एक्सल लॉक हुआ था और बाकी हादसे जानवरों के टकराने के कारण हुए। रेल मंत्री ने कहा कि ट्रेन में इस्तेमाल की गई

रिइनफोर्स्ड प्लास्टिक की क्वालिटी में कोई समस्या नहीं है। उन्होंने कहा कि ट्रेन का बाहरी हिस्सा हाई क्वालिटी स्टील से बनाया गया है। जबकि ट्रेन के सामने का हिस्सा इस नोज कोन के तौर पर देखा जाता है उसपर लगाया गया कपलर कवर रीइनफोर्स्ड प्लास्टिक का है। ये प्लास्टिक ट्रेन को बाहरी टक्कर के प्रभाव को झेलने की क्षमता देता है। उन्होंने कहा कि ये प्लास्टिक ट्रेन को एयरोडायनेमिक लुक देता है। रेलमंत्री ने ट्रेन में लगे किसी भी सामान के क्वालिटी इश्यू के दरकिनार किया। उन्होंने कहा कि वर्तमान में वंदे भारत ट्रेन 500 से 559 किमी की दूरी में चल रही है। वंदे भारत 2.0 के साथ इस दूरी का विस्तार होगा। उन्होंने कहा कि तकनीक को और विकसित किया रहा है और जल्द ही इस ट्रेन की रफ्तार और बढ़ेगी। रेल मंत्री ने कहा कि वंदे भारत ट्रेन में और तकनीक विकसित की जा रही है। जिसकी मदद से आने वाले दिनों में ट्रेन और एडवांस फीचर्स से लैस होगा। ट्रेन की रफ्तार बढ़ाने की दिशा में काम किया जा रहा है। आने वाले दिनों में इसतरह के फीचर्स एड किए जाएंगे जिसके बाद महज 52 सेकेंड के भीतर ही ट्रेन की रफ्तार 100 किमी प्रति घंटे तक पहुंच जाएगी। ट्रेन की मैक्सिमम रफ्तार 180 किमी प्रति घंटे की है। वंदे भारत के वजन को भी इंप्रूव करने की दिशा में काम किया जाएगा।

दिल्ली में पाक उच्चायोग के बाहर प्रदर्शन, अनुराग ठाकुर बोले- पाकिस्तान की हरकतों और मंसूबों को दुनिया देख चुकी है

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को लेकर पाकिस्तान के विदेश मंत्री बिलावल भुट्टो ने विवादित बयान दे दिया था। बिलावल भुट्टो के इस बयान के बाद से पाकिस्तान के खिलाफ भारत में विरोध एक बार फिर से तेज हो गया है। दिल्ली में पाकिस्तान उच्चायोग के बाहर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर बयान को लेकर पाकिस्तान के विदेश मंत्री बिलावल भुट्टो जरदारी के खिलाफ भाजपा कार्यकर्ताओं ने विरोध प्रदर्शन किया। इसके अलावा पाकिस्तान सरकार के खिलाफ भी जमकर नारे भी लगे। दूसरी ओर, बिलावल भुट्टो के बयान पर केंद्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर ने साफ तौर पर कहा है कि पाकिस्तान की हरकतों को पूरी दुनिया जानती है। वह आतंकवादियों को काफी लंबे समय से पनाह दे रहा है।

अपने बयान में अनुराग ठाकुर ने कहा कि पाकिस्तान की हरकतों और मंसूबों को दुनिया देख चुकी है। ये लंबे समय से आतंकियों को पनाह दे रहे हैं। उन्होंने कहा कि पीएम मोदी ने आतंकवाद के खिलाफ सख्त कार्रवाई की है। अमेरिका ने पाकिस्तान में ओसामा बिन लादेन को मार गिराया और भारत ने पाकिस्तान में सर्जिकल स्ट्राइक की। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि पाकिस्तान के विदेश मंत्री का बयान बेहद शर्मनाक था और जिस तरह 1971 में आज ही के दिन भारतीय सेना ने पाकिस्तानी सेना को परास्त किया था, उसे दोहराने की कोशिश थी। शायद वह अब भी दर्द में हैं। उन्होंने साफ तौर पर कहा कि आतंकवाद के खिलाफ लगातार कड़ी कार्रवाई किसी ने की है तो मोदी सरकार में हुई है। इस तरह के बयान किसी भी विदेश मंत्री को शोभा नहीं देती।

आपको बता दें कि बिलावल भुट्टो ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर निजी टिप्पणी करते हुए कहा कि मैं भारत को बताना चाहता हूं कि ओसामा बिन लादेन तो मर चुका है लेकिन गुजरात का कसाई अभी जिंदा है जो भारत का प्रधानमंत्री हैं। इसके साथ ही उन्होंने कहा था कि मोदी के प्रधानमंत्री बनने से पहले अमेरिका ने उनकी एंट्री पर बैन लगा दिया था। नरेंद्र मोदी और एस जयशंकर पर हमला करते हुए उन्होंने कहा कि यह दोनों भारत के नहीं, बल्कि आरएसएस के प्रधानमंत्री और विदेश मंत्री हैं। दरअसल, भारत ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (यूएनएससी) में कश्मीर मुद्दा उठाने के लिए पाकिस्तान पर पलटवार करते हुए कहा कि जिस देश ने अल-कायदा के पूर्व सरगना ओसामा बिन लादेन को सुरक्षित पनाहगाह दी और अपने पड़ोसी देश की संसद पर हमला किया, उसे संयुक्त राष्ट्र की शक्तिशाली संस्था में 'उपदेश' देने का कोई अधिकार नहीं है।

गेरुआ पर विवाद? तृणमूल बनाम बीजेपी की जंग में स्मृति ईरानी, अरिजीत सिंह भी घसीटे गए

पटना (एजेंसी)। भगवा विवाद की शुरुआत शाहरुख खान की फिल्म पठान के 'बेहसारम रंग' गाने में दीपिका पादुकोण की गेरुआ बिकनी से हुई, जिसे जनवरी 2023 में रिलीज होने से पहले बहिष्कार का सामना करना पड़ रहा है। अब इस विवाद ने बॉलीवुड गायक अरिजीत सिंह को खींच लिया है। कोलकाता इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल के उद्घाटन के मौके पर अमिताभ बच्चन और शाहरुख खान द्वारा फिल्म सेंसरशिप, सोशल मीडिया आदि के बारे में कुछ टिप्पणी करने के बाद केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी भी तृणमूल और भाजपा नेताओं को लेकर नई बहस छिड़ गई है।

क्या हुआ है

भाजपा के अमित मालवीय ने एक वीडियो साझा किया और दावा किया कि अरिजीत सिंह ने समारोह में ममता बनर्जी के सामने 'रंग दे तू मोहे गेरुआ' गाया। 'कोलकाता फिल्म फेस्टिवल में ममता बनर्जी ने अरिजीत सिंह से उनके पसंदीदा में से एक को गाने के लिए कहा और उन्होंने रंग दे तू मोहे गेरुआ चुना ... यह अहसासों की एक शाम थी। मिस्टर बच्चन से लेकर अरिजीत तक, जिन्होंने ममता बनर्जी को उनके याद दिलाया, कि बंगाल का भविष्य भगवा हैज्र्वीडियो को क्लिप किया गया था क्योंकि इसमें उन बंगाली गानों को छोड़ दिया गया था जिन्हें अरिजीत सिंह ने 'गेरुआ' गाने से पहले गाया था। इस 'गेरुआ' उपहास के लिए, तृणमूल के रिजू दत्ता ने स्मृति ईरानी की मिस इंडिया 1998

प्रतियोगिता का एक पुराना वीडियो पोस्ट किया जिसमें स्मृति ईरानी को भगवा बिकनी पहने बिकनी राउंड में चलते देखा जा सकता है।

अभिनेता से बीजेपी सांसद बने रिजू दत्ता को उनके 'मिसोयनिस्ट' टेक के लिए नारा दिया और लिखाः 'ममता बनर्जी को टीएमसी के राष्ट्रीय प्रवक्ता के रूप में ऐसे गलत पुरुषों को नियुक्त करने के लिए शर्म आनी चाहिए। उनके मन में महिलाओं और जीवन में उनके द्वारा चुने गए विकल्पों के लिए कोई सम्मान नहीं है। वे सफल होने से नाराज हैं।' महिलाएं और उनका उत्थान। उनके जैसे पुरुष महिलाओं के खिलाफ बढ़ते अपराध के लिए जिम्मेदार हैं।' 'क्या भगवा रंग बीजेपी की निजी संपत्ति है? उन्हें इस पर अधिकार कौन देता है? अगर वे भगवा रंग में अपनी पसंद के कपड़े पहनने के लिए दीपिका पादुकोण जैसी महिलाओं को गाली दे रहे हैं, तो उन्हें यह भी देखना चाहिए कि उनकी केंद्रीय मंत्री ने 1998 में भगवा रंग की बिकनी पहनी है।÷ रिजू दत्ता ने कहा कि स्मृति ईरानी क्या पहनेंगी इससे टीएमसी को कोई समस्या नहीं है, यह उनका अधिकार है। लेकिन हम बीजेपी की मॉरल पुलिसिंग और कुछ लोगों के खिलाफ चुनिंदा नाराजगी का विरोध करते हैं। मैंने उन्हें सिर्फ आईना दिखाया है।'

विजय दिवस के मौके पर रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने भारतीय सशस्त्र बलों की तारीफ की

नई दिल्ली (एजेंसी)। 16 दिसंबर का दिन भारतीय सेना के इतिहास में शौर्य और बलिदान को याद करने का दिन है। आज ही के दिन भारत ने बांग्लादेश को आजाद कराने के लिए 1971 के युद्ध में पाकिस्तान को विश्व के इतिहास के सबसे बड़े सैन्य सरेंडर की मोड़ पर ला दिया था। इस दिन को देश विजय दिवस के रूप में मनाता है। केंद्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने ट्वीट किया आज विजय दिवस पर राष्ट्र भारतीय सशस्त्र बलों के अनुकरणीय साहस वीरता और बलिदान को सलाम करता है। 1971 का युद्ध अमानवीयता पर मानवता दुराचार पर सदाचार और अन्याय पर न्याय की विजय था। भारत को अपने सशस्त्र बलों पर गर्व है। भारत की राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने भी कहा विजय दिवस पर हम कृतज्ञता के साथ 1971 के युद्ध के दौरान हमारे सशस्त्र बलों द्वारा प्रदर्शित असाधारण वीरता को याद करते हैं। राष्ट्र के लिए उनके अद्वितीय साहस और बलिदान की कहानियां हर भारतीय को प्रेरित करती रहती हैं।

विजय दिवस इस वर्ष 14-18 दिसंबर तक मनाया जा रहा है। यह अवसर हर साल भारत और बांग्लादेश में मनाया जाता है जहां लोग 1971 के मुक्ति संग्राम के शहीदों को श्रद्धांजलि देते हैं। बांग्लादेश में इसे बिजॉय डिबोस के नाम से मनाया जाता है। 1971 का भारत-पाकिस्तान युद्ध 51 साल पहले इसी दिन समाप्त हुआ था और बांग्लादेश के निर्माण का मार्ग प्रशस्त हुआ था। यह दिन दोनों देशों के लिए बहुत महत्व रखता है।

युद्ध तब शुरू हुआ जब पाकिस्तान ने भारत के 11 हवाई अड्डों पर हवाई हमले किए। पूर्व पीएम इंदिरा गांधी के निर्देशों के तहत सेना प्रमुख जनरल सैम मानेकशॉ ने पाकिस्तान के खिलाफ पूरी ताकत से युद्ध छेड़ दिया। भारत और मुक्ति बाहिनी (स्वतंत्रता सेनानियों) की सेना पाकिस्तान के लगभग 15010 किलोमीटर क्षेत्र पर कब्जा करने में कामयाब रही। यह भी पहली बार था जब तीनों भारतीय सेनाएं एक साथ लड़ीं। 13 दिनों के युद्ध के परिणामस्वरूप पाकिस्तानी सेना ने लगभग 93000 सैनिकों के साथ भारत के सामने आत्मसमर्पण कर दिया।

क्या इसका मुफ्त की रेवड़ी कहकर मजाक उड़ाना चाहिए? वाशिंगटन डीसी ने पब्लिक ट्रांसपोर्ट में सफर किया मुफ्त तो केजरीवाल ने कसा तंज

पटना (एजेंसी)। वाशिंगटन डीसी द्वारा सार्वजनिक परिवहन को मुफ्त करने की घोषणा के बाद दिल्ली के मुख्यमंत्री और आम आदमी पार्टी के संयोजक अरविंद केजरीवाल ने अपने ताजा ट्वीट में भाजपा पर तंज कसते हुए पूछा कि क्या इसे मुफ्त की रेवाड़ी बताते हुए इसका उपहास किया जाना चाहिए? अरविंद केजरीवाल ने ट्वीट करते हुए कहा कि वाशिंगटन डीसी ने सार्वजनिक परिवहन मुक्त बनाया है। क्या इसका 'मुफ्त की रेवड़ी' के रूप में उपहास करना चाहिए? नहीं। केजरीवाल ने कहा कि अपने नागरिकों पर अतिरिक्त करों का बोझ डाले बिना उन्हें सार्वजनिक सेवाएं मुफ्त प्रदान करना ईमानदार और संवेदनशील सरकार को दर्शाता है, जो पैसे बचाती है और अपने लोगों को सुविधाएं प्रदान करती है।

बता दें कि वाशिंगटन डीसी अमेरिका का सबसे बड़ा शहर है जहां आप मुफ्त में बस की सवारी कर सकते हैं। हालांकि, कुछ चेतावनी हैं- मुफ्त किराया केवल शहर की सीमा के भीतर यात्राओं पर लागू होता है, और मेट्रो सवारों को अभी भी भुगतान करना होगा। इस उपाय से शहर को सालाना लगभग 42 मिलियन का खर्च आएगा। यदि यह एक दूसरे नगर परिषद के वोट से बच जाता है, तो डीसी अल्बुकर्क, कैनसस सिटी और बोस्टन जैसे शहरों में शामिल हो जाएगा जिन्होंने महामारी के दौरान शून्य-किराया पारगमन का प्रयोग किया है।

श्रद्धा मर्डर कांड के आरोपी आफताब ने मांगी जमानत, इस दिन होगी मामले की सुनवाई

नयी दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली में दिल दहला देने वाले श्रद्धा मर्डर कांड के आरोपी आफताब पूनावाला ने साकेत कोर्ट का दरवाजा खटखटाकर जमानत की अर्जी दाखिल की है। आफताब द्वारा दायर की गई अर्जी के बाद मामले की सुनवाई 17 दिसंबर को की जाएगी।

अपनी लिव-इन पार्टनर की हत्या के मामले में आरोपी आफताब पूनावाला ने जमानत के लिए शुक्रवार को अदालत का रुख किया। आरोपी के वकील ने यह जानकारी दी। 28 वर्षीय आफताब पूनावाला ने अपनी लिव-इन पार्टनर श्रद्धा वालकर की कथित तौर पर हत्या कर उसके शव के 35 टुकड़े कर दिए थे। आफताब ने इन टुकड़ों को राष्ट्रीय राजधानी के अलग-अलग हिस्सों में फेंक दिया था। पूनावाला के वकील ने कहा कि अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश वृंदा कुमारी शनिवार को याचिका पर सुनवाई कर सकती हैं। उन्होंने कहा कि मामले की प्रारंभिक जांच पूरी हो गई है और आरोपपत्र अभी दाखिल किया जाना है इसलिए आरोपी को न्यायिक हिरासत में रखने का कोई कारण नजर नहीं आता। पूनावाला की न्यायिक हिरासत नौ दिसंबर को और 14 दिन के लिए बढ़ा दी गई थी। आफताब वर्तमान में तिहाड़ जेल में बंद है।

हड्डियों की डीएनए रिपोर्ट हुई मैच: श्रद्धा मर्डर मामले में महरौली के जंगलों से पुलिस ने जो शव के टुकड़ों के हड्डियां इकट्ठा किए थे। उसका मिलान श्रद्धा के पिता से हुआ है। श्रद्धा और उसके पिता का डीएनए का मिलान हो चुका है। सीएफएसएल ने

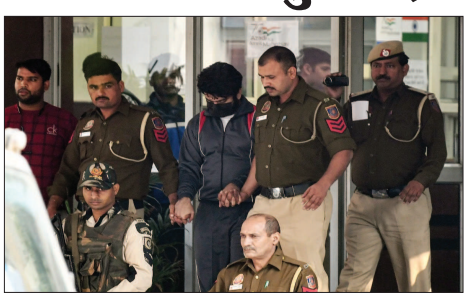

इसकी पुष्टि भी कर दी है। इसके बाद आफताब के खिलाफ पुलिस को बड़ा सबूत मिल गया है। अफताब से इस हत्याकांड को लेकर लगातार पुलिस पूछताछ कर रही है।

महाराष्ट्र सरकार बनाएगी कमेटी: श्रद्धा वॉकर हत्याकांड मामले में महाराष्ट्र सरकार ने बड़ा फैसला किया है। महाराष्ट्र में अब परिवार से बिछड़ी लड़कियों को परिवार से मिलाने के लिए खास समिति का गठन होगा। इसकी जानकारी राज्य महिला एवं बाल विकास मंत्रालय की ओर से दी गई है।

25000 वर्ष पहले विश्व की आधी आबादी का निवास भारत में

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत में कभी पूरी दुनिया की आधी आबादी रहती थी। सुनकर भले ही आपको हैरानी हो लेकिन यह सच है। यह दावा कहीं और नहीं बल्कि काशी हिंदू वि.वि के एक जीन विज्ञानी ने अपने शोध से किया है। उनके दावे के मुताबिक भले ही आधुनिक मानव की उत्पत्ति अफ्रीका में हुई हो उसका पालन पोषण भारत में हुआ। जिसके फलस्वरूप आज से 25000 वर्ष पहले विश्व की आधी आबादी का निवास भारत में था।

काशी हिंदू विवि के जंतु विज्ञान विभाग के जीन विज्ञानी और यह शोध करने वाले प्रो. ज्ञानेश्वर चौबे ने बताया कि 25000 लोगों का डीएनए रिसर्च में शामिल है। पूरे भारत से सैंपल भी कलेक्ट किया गया। डीएनए के म्यूटेशन की तुलना करके यह बताया जा सकता है कि कौन कितने साल पहले कहां से आया। दो आबादी एक दूसरे के साथ मिक्स होकर एक दूसरे के साथ कैसे इंटरएक्ट की? अध्ययन में पता चला कि भारत के किसी भी जाति-जनजाति के लोग एक कॉमन ग्रुप से जुड़े हुए हैं। 60 प्रतिशत लोग हिपलो ग्रुप एम के साथ जुड़े हुए है। अफ्रीका से मानव निकला तब भारत पहुंचा।

इस शोध के फायदों के बारे में उन्होंने बताया कि इसका बड़ा इस्तेमाल फोरेंसिक्स में होगा। मान लें कि किसी ने किसी को मारकर दफना दिया। लंबे समय बाद जमीन से उसकी हड्डियां ही मिलेंगी। जिस आधार पर यह नहीं बताया जा सकता कि वह व्यक्ति कौन है? अगला काम होता है उसके डीएनए का पता लगाने की। इसके बाद उनका यह शोध काम आएगा कि वह मृत व्यक्ति किस रीजन का है?

देश के 50 शहरों में दी जा रहीं 5जी सेवाएं, लोकसभा में अवैध खनन का मुद्दा उठा

पटना (एजेंसी)। तवांग में चीन के साथ झड़प को लेकर आज भी संसद में संग्राम जारी रहा। विपक्षी दल सरकार पर जबरदस्त तरीके से निशाना साध रहे हैं। राज्यसभा में चीनी अतिक्रमण को लेकर हंगामा जारी रहा इसकी वजह से कार्यवाही भी बाधित हुई है। इसके साथ ही संचार मंत्री अश्विनी वैष्णव ने बीएसएनएल को लेकर बड़ी बात कही। उन्होंने कहा कि यूपीए सरकार के दौरान बीएसएनएल को दुधारू गाय मानते हुए अत्याचार किया गया। इसके साथ ही पीयूष गोयल ने इस बात की भी जानकारी दी है कि भारत और ऑस्ट्रेलिया मुक्त व्यापार समझौता 29 दिसंबर से प्रभावी हो जाएगा। भाजपा के एक सांसद ने आज एक देश, एक मतदाता सूची की व्यवस्था की मांग कर दी। वहीं, राज्यसभा में अगर वुड के गैरकानूनी कारोबार पर रोक लगाने और निर्यात प्रक्रिया को सरल बनाने की मांग उठी। सरकार ने इस बात की भी जानकारी दी है कि देश के 22 राज्यों में लंपी रोग ने अपने पैर पसार लिए हैं। आज संसद में क्या कुछ हुआ है यह हम आपको बताते हैं।

- लोकसभा में शुक्रवार को कुछ देर के लिये हंगामे की स्थिति उत्पन्न हो गई, जब महिला एवं बाल विकास मंत्री स्मृति ईरानी ने एक सांसद को सदन में आमतौर पर उपयोग किये जाने वाले संबोधन ''माननीय सदस्य'' के स्थान पर ''जेंटलमैन'' कहा। कांग्रेस के अधीर रंजन चौधरी ने ईरानी द्वारा उक्त सांसद को 'जेंटलमैन' कहे जाने का विरोध किया।

- केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री मनसुख मांडविया ने शुक्रवार को लोकसभा में कहा कि सरकार की तरफ से क्षय रोग (टीबी) के खिलाफ जिस स्तर पर अभियान चलाया जा रहा है और लोगों की इसमें जिस तरह की भागीदारी हुई है, उसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि देश 2025 के आखिर तक इस बीमारी से मुक्त हो जाएगा।

- सरकार ने शुक्रवार को बताया कि एक अक्टूबर 2022 से 5जी सेवाएं शुरू हो चुकी हैं और 26 नवंबर तक देश के 50 शहरों में यह सेवाएं दी जा रही हैं। राज्यसभा को एक प्रश्न के लिखित उत्तर में संचार राज्य मंत्री देवुसिंह चौहान ने यह जानकारी देते हुए बताया कि 14 राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों... दिल्ली, महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश, तमिलनाडु, कर्नाटक, तेलंगाना, राजस्थान, हरियाणा, असम, केरल, बिहार, आंध्रप्रदेश और गुजरात के 50 शहरों में 5जी सेवाएं दी जा रही हैं।

- राज्यसभा में वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने शुक्रवार को कहा कि सरकार डिजिटल उधारी देने वाले विभिन्न चीनी एप द्वारा आम आदमी को उत्पीड़न व धोखाधड़ी से बचाने के लिए ठोस कार्रवाई कर रही है। उच्च सदन में शून्यकाल के दौरान तृणमूल कांग्रेस के सदस्य नदीमुल हक ने डिजिटल उधारी देने वाले एप द्वारा आम आदमी के साथ किए जाने धोखाधड़ी का मुद्दा उठा।

- लोकसभा में शुक्रवार को विभिन्न दलों के सदस्यों ने अपने-अपने राज्य और संसदीय क्षेत्रों में खनन से संबंधित मुद्दे उठाये और केंद्र सरकार से दुर्लभ मृदा एवं खनिज तत्वों को प्राथमिकता देने की भी मांग की। सदन में कांग्रेस के नेता अधीर रंजन चौधरी ने शून्यकाल में दुर्लभ मृदा एवं खनिज तत्वों से संबंधित मुद्दा उठाते हुए दावा किया कि केंद्र सरकार अभी तक 90 प्रतिशत से ज्यादा दुर्लभ मृदा खनिज चीन से आयातित कर रही है जिनमें परमाणु ऊर्जा समेत 20 से अधिक महत्वपूर्ण उत्पादनों में इस्तेमाल होने वाले 26 अहम खनिज हैं। वहीं, झारखंड से भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के निशिकांत दुबे ने अपने राज्य में कथित अवैध खनन किये जाने और खनन माफिया के सक्रिय होने का दावा करते हुए इसमें मुख्यमंत्री समेत अनेक अधिकारियों के संलिप्त होने का आरोप भी लगाया। उन्होंने दावा किया कि राज्य में अवैध तरीके से बालू, गिट्टी आदि के खनन का घोटाला प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के अनुसार 10,000 करोड़ रुपये से अधिक का है और इस मामले में केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (ईडी) से जांच कराई जानी चाहिए।

जापान ने आगामी वर्षों में क्रूज मिसाइल क्षमता बढ़ने की तैयारी में जुटा

-चीन और उत्तर कोरिया को बताया खतरा

तोक्यो । जापान ने राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति अपनाकर पड़ोसी देशों चीन और उत्तर कोरिया के खतरों के खिलाफ खुद को और अधिक समक्ष बनाने के वास्ते आगामी वर्षों में क्रूज मिसाइल के द्वारा अपनी क्षमता बढ़ाने संबंधी योजना की शुक्रवार को घोषणा की। द्वितीय विश्व युद्ध का जिक्र कर जापान के रणनीति संबंधी दस्तावेज में कहा गया है कि चीन उत्तर कोरिया और रूस सीधे इसके पश्चिम और उत्तर में हैं और जापान युद्ध की समाप्ति के बाद से सबसे कठिन और जटिल राष्ट्रीय सुरक्षा माहौल का सामना कर रहा है। इसमें चीन को उत्तर कोरिया और रूस से पहले ''सबसे बड़ी रणनीतिक चुनौती के रूप में बताया गया है। इसमें कहा गया है कि जापान और अंतरराष्ट्रीय समुदाय की सुरक्षा शांति और स्थिरता के लिए जापान लगातार प्रयास कर रहा है। जापान के रक्षा निर्माण को लंबे समय से देश और क्षेत्र में एक संवेदनशील मुद्दा रहा है। विशेषज्ञों का कहना है कि चीन के बढ़ते प्रभाव रूस के यूक्रेन पर आक्रमण और ताइवान के डर से जापान को अपनी क्षमता बढ़ाने की जरूरत महसूस हुई। जानकार ने कहा ताइवान आपातकाल और जापान आपातकाल अभिन्न हैं। रणनीतिक दस्तावेज में कहा गया है कि मिसाइलों का तेजी से विकास इस क्षेत्र में ''वास्तविक खतरा'' बन गया है। उत्तर कोरिया ने साल 2022 में 30 से अधिक बैलिस्टिक मिसाइलें दागीं जिसमें एक मिसाइल जापानी क्षेत्र के ऊपर से गुजरी थी। चीन ने ओकिनावा सहित जापानी दक्षिणी द्वीपों के निकट पांच बैलिस्टिक मिसाइलें दागीं। रणनीति से जुड़े नए दस्तावेज में कहा गया है कि जापान को जवाबी हमला करने और भविष्य में होने वाले हमलों को रोकने के लिए लंबी दूरी की मिसाइलों की आवश्यकता है। जापानी रक्षा अधिकारियों ने कहा कि वे अभी भी टॉमहॉक मिसाइल खरीद को लेकर बातचीत कर रहे हैं। गौरतलब है कि पिछले महीने जापान और अमेरिका ने सहयोगियों की तैयारियों को बढ़ाने के लिए दक्षिणी जापान में एक संयुक्त सैन्य अभ्यास किया था।

रुस ने ताबड़तोड़ यूक्रेन के कई शहरों में दागी 60 क्रूज मिसाइलें

कीव । रूस के साथ महीनों से जंग लड़ रहे यूक्रेन पर फिर से बमवर्षा शुरू हुई है। रूस ने ताबड़तोड़ भीषण मिसाइल हमले कर पूरे यूक्रेन में खलबली मचा दी है। बताया जा रहा है कि रूस ने ब्लैक सी से यूक्रेन पर कम से कम 60 क्रूज मिसाइलें दागी हैं। रिपोर्ट के अनुसार रूस ने नए सिरे से मिसाइल के जरिए यूक्रेन पर बमवर्षा शुरू कर दी है। माना जा रहा है कि इस बार रूस ने यूक्रेन के तीन प्रमुख शहरों को निशाना बनाया है। रूसी मिसाइल अटैक से पूरे यूक्रेन में हड़कंप मच गया है। रूसी हमलों ने खार्किव में बुनियादी सुविधाओं को निशाना बनाया है। वहीं यूक्रेनी अधिकारियों ने कम से कम 3 शहरों में विस्फोटों की रिपोर्ट दी है। यूक्रेनी अधिकारियों का कहना है कि रूस ने 'बड़े पैमाने पर मिसाइल हमले' शुरू कर दिए हैं। बता दें कि इससे पहले पूरे यूक्रेन में हवाई हमले के सायरन बजाए गए और लोगों को अपने-अपने घरों में रहने की अपील की गई थी। यूक्रेन के प्राधिकारियों ने दावा किया कि रूस ने यूक्रेन के ऊर्जा प्रतिष्ठानों और बुनियादी ढांचों पर एक और बड़ा मिसाइल हमला किया है।

मोटे अनाज पर नेपाल-भारत कृषि बैठक आयोजित

काठमांडू । भारतीय दूतावास ने दुनिया के लिए खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने में 'सुपरफूड' के महत्व और क्षमता को उजागर करने के मकसद से अंतरराष्ट्रीय मोटा अनाज वर्ष-2023 के उपलक्ष्य में भारत-नेपाल कृषि सम्मेलन सह-पूर्वावलोकन का आयोजन किया है। भारतीय दूतावास के बयान के अनुसार कृषि और प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (एपीडा) के सहयोग से आयोजित बैठक में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) सहित विभिन्न संस्थानों ने भागीदारी की। कृषि और पशुधन विकास मंत्रालय के सचिव डॉ. गोविंद प्रसाद शर्मा के नेतृत्व में नेपाली पक्ष की ओर से आयोजित कार्यक्रम में 2021 में संयुक्त राष्ट्र में अंतरराष्ट्रीय मोटा अनाज वर्ष 2023 मनाने का संकल्प लिया गया था। यह संकल्प भारत की एक पहल है और 72 अन्य देशों द्वारा इस समर्थन है। शर्मा ने नेपाल में मोटे अनाज के महत्व के बारे में बात की और कृषि क्षेत्र में द्विपक्षीय सहयोग के क्षेत्रों की भी पहचान की। इस दौरान भारतीय दूतावास में उप-प्रमुख प्रसन्ना श्रीवास्तव ने दुनिया के लिए खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने में मोटे अनाज के महत्व पर प्रकाश डाला। एपीडा के निदेशक डॉ. तरुण बजाज ने बताया कि भारत मोटे अनाज का दुनिया का सबसे बड़ा उत्पादक है। यह मोटे अनाज की नौ विभिन्न किस्मों का सालाना 1.7 करोड़ टन का उत्पादन करता है जो वैश्विक उत्पादन का लगभग 20 प्रतिशत है।

एरिक गार्सेटी भारत में अमेरिकी राजदूत के रूप में सेवाएं देने के लिए उपयुक्त - व्हाइट हाउस

वाशिंगटन। व्हाइट हाउस ने बृहस्पतिवार को कहा कि लॉस एंजिलिस के पूर्व मेयर एरिक गार्सेटी भारत में अमेरिका के राजदूत के रूप में सेवाएं देने के लिए उपयुक्त हैं। व्हाइट हाउस का यह बयान अमेरिका के प्रभावशाली सीनेटर चक ग्रैसले द्वारा गार्सेटी के नामांकन का विरोध किए जाने के कुछ दिनों बाद आया है। ग्रैसले ने एक स्टाफ सदस्य द्वारा गार्सेटी पर लगाए गए यौन शोषण के आरोपों के मद्देनजर उन्हें भारत में अमेरिका के अगले राजदूत के रूप में नामित किए जाने का विरोध किया था। उन्होंने अमेरिकी सीनेट में कहा था, 'मैं भारत में अमेरिका के राजदूत के रूप में एरिक गार्सेटी के नामांकन पर कड़ा विरोध दर्ज कराना चाहूंगा। मैं लॉस एंजिलिस के मेयर कार्यालय में उनके कार्यकाल में बड़े पैमाने पर लगे यौन उत्पीड़न और नस्लवाद के गंभीर आरोपों के कारण गार्सेटी के खिलाफ मतदान करने के लिए मजबूर हूं।' व्हाइट हाउस की प्रेस सचिव कैरीन जीन-पियरे ने बृहस्पतिवार को अपने दैनिक संवाददाता सम्मेलन में कहा कि भारत में एक राजदूत की नियुक्ति अमेरिका की प्राथमिकता है। उन्होंने कहा, 'जैसा कि आप जानते हैं, यह हमारे लिए एक प्राथमिकता है और प्राथमिकता बनी रहेगी। गार्सेटी इस महत्वपूर्ण भूमिका को निभाने के लिए पूरी तरह से योग्य और उपयुक्त हैं।' भारत में अमेरिकी राजदूत का पद लगभग दो साल से खाली है। भारत मौजूदा समय में जी-20 समूह की अध्यक्षता कर रहा है, जिसके चलते दोनों देशों के बीच राजनयिक गतिविधियां बढ़ गई हैं और बाइडन प्रशासन नयी दिल्ली में जल्द से जल्द अपने राजदूत की नियुक्ति करना चाहता है। जुलाई 2013 से दिसंबर 2022 की शुरुआत तक लॉस एंजिलिस के 42वें मेयर के रूप में सेवाएं देने वाले गार्सेटी अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन के करीबी सहयोगी माने जाते हैं।

सोशल मीडिया पर बिकनी वाली फोटों डालकर महिला ने मांगी नौकरी

लंदन । आजकल सोशल मीडिया पर कई इसतरह के ग्रुप बने हैं जिसपर लोग नौकरियां मांगते हैं। इसी कड़ी में ब्रिटेन की महिला ने बिकिनी पहने फोटो पोस्ट करते हुए नौकरी की डिमांड कर दी। लंदन की रहने वाली 24 साल की टेडी स्वान एक बैकपैकर हैं। बता दें कि आजकल यात्रा करने की एक नई विधा काफी मशहूर हो रही है इस बैकपैकिंग कहते हैं। इसके तहत यात्री एक बड़े बैग में अपनी जरूरतों का सारा सामान पीठ पर लादकर देशों की बेहद कम दाम में यात्रा करते हैं। रुकने के लिए वहां सस्ते से सस्ते होटल या लॉज ही खोजते हैं। टेडी ऑस्ट्रेलिया के टूर पर निकली हैं और अपने खर्चों को कम करने के लिए एक बार में काम कर रही हैं।

वहां पिछले 6 हफ्तों से वेट्रेस के तौर पर बार में काम कर रही थीं पर अब उन्हें दूसरी नौकरी चाहिए। इस वजह से उन्होंने फेसबुक पर नौकरी मांगने के लिए एक पोस्ट लिखा। उन्होंने एक ऑस्ट्रेलियन ग्रुप बैकपैकर्स जॉब पर ये पोस्ट कर लिखा मैं नए साल में नई नौकरी की तलाश कर रही हूं और घर के साथ नौकरी चाहती हूं। मेरे पास कार है इसलिए मैं कहीं भी नौकरी के लिए मूव कर सकती हूं। इससे पहले मैंने फार्मेसी रीटेल चाइल्डकेयर नर्स और एम्बुलेंस ड्राइवर के तौर पर काम किया है।

टेडी ने नौकरी के पोस्ट के साथ अपनी बिकिनी पहने तस्वीरें भी डाल दीं। एक तस्वीर में वहां कुत्ते के साथ नजर आ रही हैं। लोगों ने उनके पोस्ट पर लिखा कि नौकरी के लिए ऐसी फोटोज डालना ठीक नहीं है। एक ने कहा कि अगर वहां नौकरी खोजती तब अपनी बिकिनी में फोटो कभी नहीं डालती।

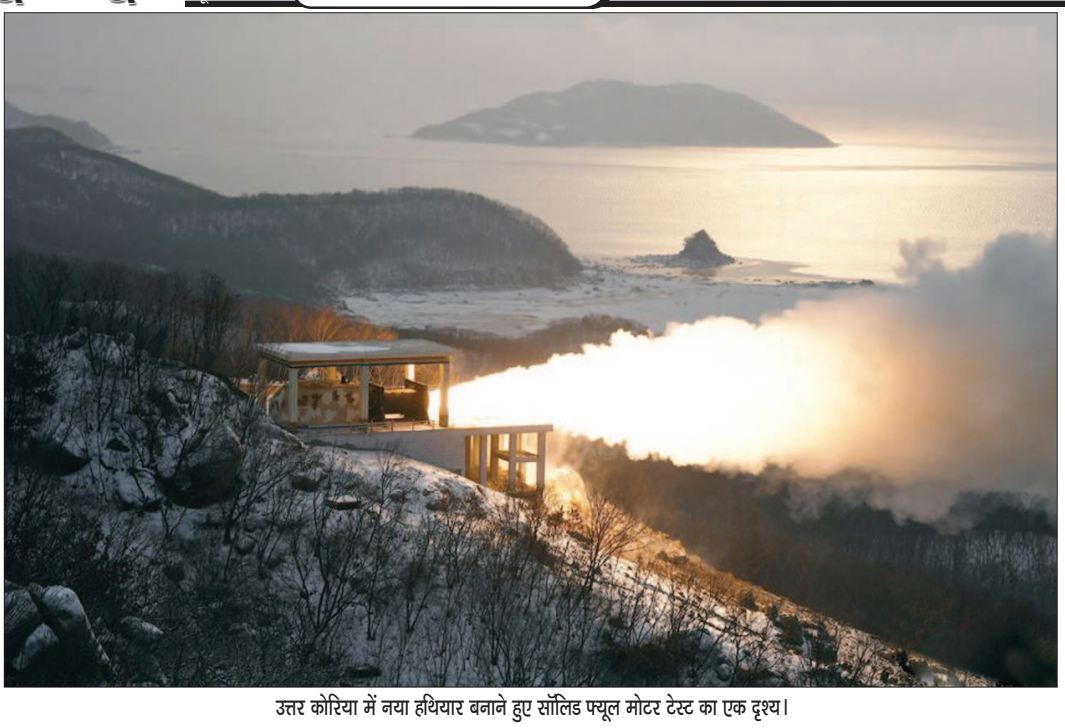

उत्तर कोरिया में नया हथियार बनाने हुए सॉलिड फ्यूल मोटर टेस्ट का एक दृश्य।

मलेशिया में पर्यटक शिविर स्थल पर भूस्खलन, नौ लोगों की मौत, 25 लापता

कुआलालंपुर। मलेशिया की राजधानी कुआलालंपुर के बाहरी इलाके में एक पर्यटक शिविर स्थल पर बृहस्पतिवार देर रात हुए भूस्खलन में नौ लोगों की मौत हो गई, जबकि 25 अन्य लापता बताए जा रहे हैं। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। जिला पुलिस प्रमुख सुफियन अब्दुल्ला ने बताया कुआलालंपुर से करीब 50 किलोमीटर दूर मध्य सेलांगोर के बतांग काली में एक 'कैंपसाइट' पर भूस्खलन हुआ। ऐसा माना जा रहा है कि घटना के समय वहां करीब 94 लोग मौजूद थे। 'कैंपसाइट' ऐसे स्थान को कहते हैं, जहां लोग समय बिताने के लिए तंबू लगाकर रहते हैं। स्थानीय लोगों के बीच ऐसे स्थान काफी लोकप्रिय हैं। सुफियन के मुताबिक, मृतकों में पांच साल का एक बच्चा भी शामिल है। घटना में घायल हुए सात लोगों को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। बचावकर्मी करीब 25 लोगों की तलाश में जुटे हैं। उन्होंने बताया कि लगभग 53 लोगों को सुरक्षित बचाया गया है। खोज एवं बचाव अभियान में करीब 400 कर्मी जुटे हैं। सेलांगोर के दमकल विभाग के अनुसार, देर रात दो बजकर 24 मिनट पर घटना की सूचना मिलने के करीब आधे घंटे बाद ही दमकलकर्मी मौके पर पहुंचने लगे। करीब तीन एकड़ क्षेत्र में भूस्खलन हुआ। समाचार एजेंसी 'बर्नामा' ने कुछ तस्वीरें साझा की हैं, जिसमें बचावकर्मी तड़के अंधेरे में टॉर्च की रोशनी में मलबा हटाते दिख रहे हैं। उसने एक वीडियो भी साझा किया है, जिसमें कर्मी मौके से बचाए गए लोगों को नजदीक के एक थाने में ले जाते दिख रहे हैं।

चीन में नए ओमिक्रोन सब वेरिएंट से हालात विस्फोटक -सड़कें हुई खाली फिर से दुनिया पड सकती है संकट में

बीजिंग (एजेंसी)। कोरोना वायरस के नए ओमिक्रोन सब वेरिएंट से पडोसी देश चीन में हालात विस्फोटक हो गए हैं। बीजिंग में इस भयानक हालात को रोकने के लिए अभी भी जोरो कोविड नीति लागू है लेकिन यह बुरी तरह से फेल साबित हुई है। कोरोना के बढते संकट के चलते राजधानी बीजिंग की सड़कें खाली हो गई हैं। बाजारों में सूनसान हैं और लोग एक-दूसरे से मिलने से कन्नी काट रहे हैं।

चीन के वुहान शहर से फैले कोरोना वायरस के बाद पहली बार ऐसा हुआ है जब राजधानी बीजिंग में हालात इतने ज्यादा खराब हो गए हैं। विशेषज्ञों के मुताबिक कोरोना के ओमिक्रोन वेरिएंट के साल 2021 में आने के बाद अब यह तेजी से बदल रहा है और कई सबवेरिएंट में तब्दील हो चुका है। इसका एक सबवेरिएंट बीएफ.7 बीजिंग में तबाही मचाए हुए है। इसी वेरिएंट की वजह से पूरे चीन में हालात बहुत खराब होते जा रहे हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि चीन में जिस तेजी से यह वेरिएंट फैल रहा है वह चिंताजनक है लेकिन यह दुनिया में कहीं और नहीं फैल रहा है। बीएफ.7 वेरिएंट ओमिक्रोन के बीए.5 वेरिएंट का ही एक रूप है। बीएफ.7 वेरिएंट के वही लक्षण हैं जो ओमिक्रोन से संक्रमित लोगों में पाए जाते हैं।कोरोना संक्रमित मरीजों को बुखार आ रहा है कफ है गले में दिक्कत नाक बहना और थकावट बनी हुई है। कई लोगों को उल्टी और डायरिया भी हो रहा है। विशेषज्ञों के मुताबिक बीएफ.7 वेरिएंट से

उन लोगों को गंभीर बीमारी हो रही है जिनका इम्यून सिस्टम कमजोर है। उन्होंने कहा कि ओमिक्रोन विकसित हुआ है और नए सबवेरिएंट आए हैं जो वैक्सीन से मिलने वाली इम्युनिटी को भी फेल कर दे रहे हैं।

कोरोना के इस वेरिएंट का बीजिंग में खौफ है और सड़कें वीरान हो गई हैं। लोग बीमार हो रहे हैं जिससे ऑफिसों में कामकाज ठप पड़ रहा है। चीन से आ रही खबरों में यह संकेत मिल रहा है कि इस ओमिक्रोन वेरिएंट में संक्रमण फैलाने की बहुत ज्यादा क्षमता है और यह तेजी से एक से दूसरे में फैल रहा है। इसमें अच्छी बात यह है कि जल्दी ठीक हो जाता है। यह वैक्सीन लगवा चुके और नहीं लगवाने वाले दोनों ही लोगों को संक्रमित करने में सक्षम है। यह इतना तेजी से फैल रहा है कि चीन इसे रोकने में फेल साबित हो रहा है।

भारत की जी20 अध्यक्षता के दौरान खाद्य सुरक्षा के समक्ष मौजूद चुनौतियों से निपटेंगे : अमेरिका

वाशिंगटन। (एजेंसी)। अमेरिका की वित्त मंत्री जेनेट येलेन ने बृहस्पतिवार को अफ्रीकी नेताओं से कहा कि भारत की जी20 अध्यक्षता के दौरान खाद्य सुरक्षा को लेकर जारी चुनौतियों का समाधान किया जाएगा। खाद्य सुरक्षा पर अमेरिकी-अफ्रीकी नेताओं के शिखर सम्मेलन 'अमेरिका-अफ्रीका लीडर्स समिट - हेड्स स्टेट सेशन ऑन फूड सिक्योरिटी' में येलेन ने कहा, ''जी20 देशों के नेताओं ने हाल ही में एक मजबूत वैश्विक खाद्य सुरक्षा प्रतिक्रिया के महत्व पर प्रकाश डाला।''

उन्होंने कहा, ''भारत की जी20 अध्यक्षता के दौरान हम किसी भी कमी की पहचान करने और खाद्य एवं ऊर्जा असुरक्षा के अप्रत्यक्ष प्रभावों का विश्लेषण करने के लिए मौजूदा नीति प्रतिक्रियाओं का मानचित्रण करेंगे और विचार करेंगे कि इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए जी20 अर्थव्यवस्थाओं द्वारा 'मैक्रो-पॉलिसी टूल्स' का उपयोग कैसे किया जा सकता है।'' अमेरिका की वित्त मंत्री पिछले महीने अपनी भारतीय समकक्ष निर्मला सीतारमण के साथ द्विपक्षीय बैठकों के लिए भारत आई थीं।

भारत वर्तमान में जी20 की अध्यक्षता कर रहा है। इससे पहले, दिन में अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन ने कहा कि उनके देश ने अफ्रीका में खाद्य असुरक्षा के जवाब में मजबूत और तेज प्रतिक्रिया दी है और आगे भी ऐसा करता रहेगा। येलेन ने कहा, ''हम लोग यह आपके और अफ्रीकी नेताओं के साथ भागदारी में तथा द्विपक्षीय और बहुपक्षीय माध्यमों से कर रहे हैं।

एस जयशंकर ने लगाई लताड़ तो बौखलाया पाकिस्तान, पीएम मोदी के खिलाफ बिलावल भुट्टो ने कर दी अपमानजनक टिप्पणी

वाशिंगटन (एजेंसी)। जम्मू कश्मीर को लेकर पाकिस्तान हमेशा अंतरराष्ट्रीय मंचों का दुरुपयोग करने की कोशिश करता है। पाकिस्तान भारत के खिलाफ नापाक साजिश भी रचता है। यही कारण है कि हाल में ही विदेश मंत्री एस जयशंकर ने पाकिस्तान को आईना दिखाया था। इसके बाद पाकिस्तान को इतनी मिर्ची लग गई कि उसके विदेश मंत्री बिलावल भुट्टो ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और विदेश मंत्री एस जयशंकर के खिलाफ आपत्तिजनक टिप्पणी कर दी। बिलावल भुट्टो ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर निजी टिप्पणी करते हुए कहा कि मैं भारत को बताना चाहता हूं कि ओसामा बिन लादेन तो मर चुका है लेकिन गुजरात का कसाई अभी जिंदा है जो भारत का प्रधानमंत्री हैं। पाकिस्तान ने मर्यादाओं की सारी हदें लांघ दी। इतना ही नहीं, बिलावल भुट्टो ने तो यह भी कह दिया कि मोदी के प्रधानमंत्री बनने से पहले अमेरिका ने उनकी एंट्री पर बैन लगा दिया था। नरेंद्र मोदी और एस जयशंकर पर हमला करते हुए उन्होंने कहा कि यह दोनों भारत के नहीं, बल्कि आरएसएस के प्रधानमंत्री और विदेश मंत्री हैं। इतना ही नहीं, भुट्टो ने तो भारत को हिटलर से प्रभावित बता दिया। उन्होंने कहा कि भारत सरकार गांधीजी के विचारधारा में विश्वास करने की वजह कातिल के सिद्धांतों में विश्वास करती है। पाकिस्तान में आतंकवादी हमलों को लेकर भी बिलावल भुट्टो ने भारत को जिम्मेदार बता दिया और कहा कि उन्हें पड़ोसी देश से सपोर्ट मिल रहा है। हालांकि, भारत की ओर से इसे पाकिस्तान की बौखलाहट बताई जा रही है। भारत का कहना है कि हमने पाकिस्तान को एक्सपोज किया तो वह बौखला गया है।

जयशंकर ने लगाई थी क्लास

भारत ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (यूएनएससी) में कश्मीर मुद्दा उठाने के लिए पाकिस्तान पर पलटवार करते हुए कहा कि जिस देश ने अल-कायदा के पूर्व सरगना ओसामा बिन लादेन को सुरक्षित पनाहगाह दी और अपने पड़ोसी देश की संसद पर हमला किया, उसे संयुक्त राष्ट्र की शक्तिशाली संस्था में 'उपदेश' देने का कोई अधिकार नहीं है। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने कहा कि दुनिया पाकिस्तान को आतंकवाद के ''केंद्र'' के रूप में देखती है और पाकिस्तान को अपनी हरकतों में सुधार कर एक अच्छा पड़ोसी बनने की कोशिश करनी चाहिए। विदेश मंत्री जयशंकर ने अमेरिकी नेता हिलेरी क्लिंटन के भारत के पड़ोसी देश पर दिए बयान को भी दोहराया, जिसमें उन्होंने कहा था कि जो लोग अपने आंगन में सांप पालते हैं, वह एक दिन उसे ही काट खाता है।

एनडीएए का मकसद भारत-अमेरिका के बीच मजबूत रक्षा संबंध

वाशिंगटन (एजेंसी)। अमेरिकी सीनेट द्वारा पारित 858 अरब डॉलर के रक्षा बिल का मकसद भारत और अमेरिका के बीच रक्षा संबंधों को और मजबूत बनाना, रूस निर्मित सैन्य उपकरणों पर नयी दिल्ली की निर्भरता घटाने के प्रयासों को समर्थन देना और चीन द्वारा अमेरिका की राष्ट्रीय सुरक्षा के समक्ष उत्पन्न चुनौतियों से निपटने के उपाय करने के लिए अरबों डॉलर की मदद मुहैया करना है। अमेरिकी सीनेट ने बृहस्पतिवार को राष्ट्रीय रक्षा प्राधिकार अधिनियम (एनडीएए) को 11 के मुकाबले 83 मतों से मंजूरी दे दी थी। प्रतिनिधि सभा में यह बिल आठ दिसंबर को 80 के मुकाबले 350 वोटों से पारित हो गया था।

अब इस बिल को कानून की शक्ल देने के लिए राष्ट्रपति जो बाइडन की स्वीकृति के वास्ते भेजा गया है। एनडीएए का मकसद अमेरिका के रक्षा एवं वित्त विभागों को भारत के साथ उभरती प्रौद्योगिकी, संयुक्त अनुसंधान एवं विकास और रक्षा एवं साइबर क्षमता निर्माण सहित अन्य क्षेत्रों में भागीदारी एवं सहयोग बढ़ाने तथा रूस निर्मित रक्षा उपकरणों पर निर्भरता घटाने में नयी दिल्ली की मदद करने का

निर्देश देकर अमेरिका-भारत संबंधों को और मजबूती प्रदान करना है। सीनेट की सशस्त्र सेवा समिति के अध्यक्ष जैक रीड ने कहा कि एनडीएए अमेरिका की सुरक्षा के लिए अहम प्रमुख गठबंधनों और साझेदारियों को मजबूत करता है। उन्होंने कहा, इस वर्ष के एनडीएए में लक्षित निवेश, आवश्यक सुधार और ऊनत सोच शामिल है।

यह बिल हमारे जहाजों, विमानों और अन्य उपकरणों के आधुनिकीकरण के अलावा हाइपरसोनिक, एआई (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) और क्वांटम कंप्यूटिंग जैसी विघटनकारी प्रौद्योगिकियों और चीन तथा रूस के साथ रणनीतिक प्रतिस्पर्धा सहित अन्य महत्वपूर्ण मुद्दों को संबोधित करता है। एनडीएए की धारा-1260 के अनुसार, भारत के साथ रक्षा सहयोग को विस्तार देने के लिए जिन क्षेत्रों पर ध्यान दिया जाना चाहिए, उनमें खुफिया जानकारियां जुटाने की क्षमता, मानव रहित विमान, चौथी एवं पांचवीं पीढ़ी के लड़ाकू विमान, डिपो-स्तरीय रखरखाव, पांचवीं पीढ़ी का वायरलेस संचार, ओपन रेडियो एक्सेस नेटवर्क प्रौद्योगिकियां, साइबर सुरक्षा क्षमता और उभरती हुई प्रौद्योगिकियां शामिल हैं।

भारत की रुस पर से रक्षा निर्भरता कम करने अमेरिकी सीनेट ने पास किया एनडीएए बिल

वाशिंगटन (एजेंसी)। (ईएमएस)। अमेरिकी सीनेट द्वारा पारित 858 अरब डॉलर के रक्षा बिल का मकसद भारत और अमेरिका के बीच रक्षा संबंधों को और मजबूत करना रूस निर्मित सैन्य उपकरणों पर भारत की निर्भरता घटाने के प्रयासों को समर्थन देना और चीन द्वारा अमेरिका की राष्ट्रीय सुरक्षा के समक्ष उत्पन्न चुनौतियों से निपटने के उपाय करने के लिए अरबों डॉलर की मदद मुहैया करना है। अमेरिकी सीनेट ने राष्ट्रीय रक्षा प्राधिकार अधिनियम (एनडीएए) को 11 के मुकाबले 83 मतों से मंजूरी दे दी थी। प्रतिनिधि सभा में यह बिल आठ दिसंबर को 80 के मुकाबले 350 वोटों से पारित हो गया था। अब इस बिल को कानून की शक्ल देने के लिए राष्ट्रपति जो बाइडन की स्वीकृति के वास्ते भेजा गया है।

एनडीएए का मकसद अमेरिका के रक्षा एवं वित्त विभागों को भारत के साथ उभरती प्रौद्योगिकी संयुक्त अनुसंधान एवं विकास और रक्षा एवं साइबर क्षमता निर्माण सहित अन्य क्षेत्रों में भागीदारी एवं सहयोग बढ़ाने तथा रूस निर्मित रक्षा उपकरणों पर निर्भरता घटाने में भारत की मदद करने का निर्देश देकर अमेरिका-भारत संबंधों को और मजबूती प्रदान करना है। सीनेट की सशस्त्र सेवा समिति के अध्यक्ष जैक रीड ने कहा कि एनडीएए अमेरिका की सुरक्षा के लिए अहम प्रमुख गठबंधनों और साझेदारियों को मजबूत करता है। यह बिल हमारे जहाजों विमानों और अन्य उपकरणों के आधुनिकीकरण के अलावा हाइपरसोनिक एआई (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) और क्वांटम कंप्यूटिंग जैसी विघटनकारी प्रौद्योगिकियों और चीन तथा रूस के साथ रणनीतिक प्रतिस्पर्धा सहित अन्य महत्वपूर्ण मुद्दों को संबोधित करता है।

अमेरिका की चिंताओं की अनदेखी कर सऊदी ने की चीनी कंपनी हुआवेई के साथ डील

बीजिंग (एजेंसी)। चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग की इस महीने सऊदी अरब की हाई प्रोफाइल यात्रा ने कई रणनीतिक सौदों पर हस्ताक्षर करने के लिए वैश्विक ध्यान आकर्षित किया है। इसमें विवादास्पद चीनी तकनीकी दिग्गज हुआवेई भी शामिल है। सऊदी मीडिया ने कहा कि विवादित हुआवेई टेक्नोलॉजीज पर सौदा सऊदी शहरों में क्लाउड कंप्यूटिंग, डेटा सेंटर और उच्च तकनीक परिसरों के निर्माण से संबंधित है। चीन-सऊदी सौदा अमेरिका द्वारा हाल ही में राष्ट्रीय सुरक्षा जोखिमों का हवाला देते हुए चीन की हुआवेई टेक्नोलॉजीज और जेडटीई से नए दूरसंचार उपकरणों के अनुमोदन पर प्रतिबंध लगाने के बाद आया था।

चीनी नेता शी की सऊदी अरब की तीन दिवसीय यात्रा और महत्वपूर्ण खाड़ी सहयोग परिषद के नेताओं के साथ उनकी बातचीत, साथ ही रियाद के साथ दर्जनों समझौतों पर हस्ताक्षर से पता चलता है कि बीजिंग इस क्षेत्र में अपना प्रभाव बढ़ाने की कोशिश कर रहा है। हालांकि, क्षेत्रीय विश्लेषक जॉन सोलोमो के अनुसार, यह पहल अमेरिकी सुरक्षा भूमिका को दबाने के लिए काफी नहीं होगी और सऊदी अरब अमेरिका और चीन के साथ अपने संबंधों को पुनर्गठित कर रहा है। सऊदी क्राउन प्रिंस मोहम्मद बिन सलमान (एमबीएस) द्वारा पिछले जुलाई में अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन को दिए गए ठंडे स्वागत के विपरीत, चीनी नेता का रियाद पहुंचने पर धूमधाम और समारोह के साथ गर्मजोशी से स्वागत किया गया था।

शी की यात्रा को दोनों देशों के बीच संबंधों में 'एक मील का पत्थर' के रूप में वर्णित किया गया था और इसे वाशिंगटन के लिए एक स्नब के रूप में देखा गया है, जिसने बार-बार सऊदी अरब और खाड़ी देशों से आग्रह किया है कि वे चीन द्वारा पेश किए गए वाणिज्यिक 'गाजर' से लुभाएं नहीं। यूक्रेन पर आक्रमण के लिए रूस के खिलाफ पश्चिम द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों में शामिल हों। चीनी नेता ने 86 वर्षीय किंग सलमान बिन अब्दुलअज़ीज़ और क्राउन प्रिंस मोहम्मद बिन सलमान के साथ बातचीत की, जो सऊदी अरब के वास्तविक शासक हैं। चीनी नेता ने बताया कि सऊदी अरब के साथ अपने देश के संबंधों को विकसित करना उसके विदेशी संबंधों और मध्य पूर्व में कूटनीति की प्राथमिकता है। शी और किंग सलमान ने 'व्यापक रणनीतिक साझेदारी समझौते' पर हस्ताक्षर किए। चीनी नेता ने कहा कि समझौते ने दोनों देशों के बीच संबंधों में 'एक नए युग' की शुरुआत की।

संपादकीय

भ्रष्टाचारियों से कैसे निपटें?

जैसे गवाहों से पूछें बैंक के खाते तलाशें रिश्वतखोरों की चल अचल-संपत्तियों का ब्यौरा इकट्ठा करवाएं उनके परिवारों के रहन-सहन और खर्चों का कच्चा चिट्ठा तैयार करवाएं सरकारी कागजातों को खंगलवाएं आदि कई प्रमाणों के आधार पर रिश्वत के लेन-देन को पकड़ा जा सकता है। अब तक रिश्वत के कई मामले रास्ते में ही बिखर जाते रहे हैं लेकिन रिश्वत विरोधी कानून की इस नई व्याख्या के कारण अब ज्यादा मामले पकड़े जा सकेंगे।

(लेखक-डॉ. वेदप्रताप वैदिक)

सर्वोच्च न्यायालय ने रिश्वतखोर सरकारी नौकरों के लिए नई मुसीबत खड़ी कर दी है। अब उनका अपराध सिद्ध करने के लिए ऐसे प्रमाणों की जरूरत नहीं होगी कि रिश्वत देनेवाला और लेनेवाला खुद स्वीकार करे कि मैंने रिश्वत दी है और मैंने रिश्वत ली है। यदि वे खुद स्वीकार न करें या अपने कथन से पलट जाएं या उनमें से कोई मर जाए तो भी अदालत को न्याय जरूर करना होगा। अदालतों को चाहिए कि वे दूसरे प्रमाणों की खोज भी करें। जैसे गवाहों से पूछें बैंक के खाते तलाशें रिश्वतखोरों की चल अचल-संपत्तियों का ब्यौरा इकट्ठा करवाएं उनके परिवारों के रहन-सहन और खर्चों का कच्चा चिट्ठा तैयार करवाएं सरकारी कागजातों को खंगलवाएं आदि कई प्रमाणों के आधार पर रिश्वत के लेन-देन को पकड़ा जा सकता है। अब तक रिश्वत के कई मामले रास्ते में ही बिखर जाते रहे हैं लेकिन रिश्वत विरोधी कानून की इस नई व्याख्या के कारण अब ज्यादा मामले पकड़े जा सकेंगे। लेकिन भारत में रिश्वतखोरी याने भ्रष्टाचार तो राजनीतिक शिष्टाचार बन चुका है। इसका बोलबाला तो हमारे पड़ौसी देशों में इतना ज्यादा है कि हम भारतीय उसकी कल्पना भी नहीं कर सकते। कुछ देशों के नेताओं फौजियों और अफसरों के ठाठ-बाट देखकर आप अपने आप से पूछेंगे कि ये लोग क्या अरबपति या खरबपति हैं? नेताओं की चोटी से निकली भ्रष्टाचार की वैतरणी नदी सरकार के चपरासी तक सबको गंदा करती चली जाती है। सर्वोच्च न्यायालय ने इस स्थिति पर गंभीर चिंता जताई है। स्वयं न्यायपालिका भी भ्रष्टाचार की इस वैतरणी में गोता खाने से बाज नहीं आ पाई है। भ्रष्टाचार ने हमारी राजनीति प्रशासन न्याय और सार्वजनिक जीवन को भी अपनी गिरफ्त में ले लिया है। सर्वोच्च न्यायालय ने फिलहाल जो कानूनी सुधार सुझाया है उसका थोड़ा-बहुत असर जरूर होगा लेकिन भ्रष्टाचार को यदि जड़-मूल से खत्म करना है तो हमें कई अत्यंत कठोर कदम उठाने होंगे। सबसे पहले तो नेताओं और अफसरों और उनके परिजन की चल-अचल संपत्ति तथा आय-व्यय का ब्यौरा प्रतिवर्ष सार्वजनिक करना अनिवार्य किया जाए। दूसरा भ्रष्ट नेताओं और अफसरों पर चलनेवाले मुकदमों के फैसलों की समयावधि तय की जाए। तीसरे कुछ अत्यंत भ्रष्ट नेताओं अफसरों और भ्रष्टाचार करनेवालों को आजीवन कारावास और फांसी की सजा भी दी जाए ताकि भावी भ्रष्टाचारियों के रोंगटे खड़े हो जाएं। चौथा देश में सादगी और अपरिग्रह के आदर्शों का प्रचार खुद राजनेता संपन्न सेठ लोग नौकरशाह धर्मध्वजीगण भी करें और अपना जीवन वैसा ही बनाकर लोगों के सामने जीवंत उदाहरण भी पेश करें।

सूक्ति

बुद्धि के सिवाय विचार प्रचार का कोई दूसरा शास्त्र नहीं है क्योंकि ज्ञान ही अन्याय को मिटा सकता है।- शंकराचार्य

मनुष्य का सच्चा जीवन साथी विद्या ही है जिसके कारण वह विद्वान कहलाता है।
- स्वामी दयानन्द

लॉफिंग ज़ोन

संता: बंता, बताओ एक को एक से कैसे जोड़ें कि दो से अधिक हो जाए?

बंता: अरे यार इतना भी नहीं जानते। उनकी शादी कर देनी चाहिए।

☺ ☺ ☺

रामू: क्या स्वर्ग में हर चीज मिल जाती है?

बंटी: हां , लगभग हर चीज।

रामू: अच्छा, सिगरेट भी मिल जाती है ?

बंटी: हां, लेकिन माचिस या लाइटर के लिए तुम्हें नरक में जाना पड़ेगा।

☺ ☺ ☺

पत्नी पति से : पता है अपने पड़ोस में एक डॉक्टर साहब रहने आए हैं। हमें उनसे मेलजोल बढ़ाना चाहिए। पता नहीं कब काम आ जाएं।

पति : तुम्हें पता नहीं कि वह सिर्फ पोस्टमॉर्टम करते हैं।

☺ ☺ ☺

गब्बर सांभा से : अरे ओ सांभा , अड्डे के इधर-उधर के मच्छर मरवा दो।

सांभा : ठीक है सरदार।

दूसरे दिन मच्छर भिनभिनाने लगे , तो गब्बर ने सांभा से कहा , अरे ओ सांभा मच्छर को नहीं मारा क्या ?

सांभा : सरदार , मच्छरों को मार दिया यह तो उनकी विधवाओं रो रही हैं।

☺ ☺ ☺

सहरा में चीन की जड़ें सींच आये शी

पुष्परंजन

शी चिनफिंग सऊदी अरब की तीन दिवसीय यात्रा से लौट आये। सऊदी अरब ने 'वन चाइना' सिद्धांत पर मुहर लगा दी है। सऊदी अरब ने मान लिया कि ताइवान चीन का अविभाज्य हिस्सा है। बदले में चीन ने सऊदी अरब के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप न करने का वादा किया है। सऊदी अरब भी शिन्चियांग में उईगुर मुसलमानों पर सितम का सवाल नहीं उठायेगा। अमेरिकी लॉबी का प्रमुख देश सऊदी अरब एक नये समीकरण के साथ चीन से बगलगीर है, जिसमें बहरीन, कुवैत, ओमान, कतर, संयुक्त अरब अमीरात के नेताओं का साथ है। रियाद में चीन-खाड़ी सहयोग परिषद (जीसीसी) की बैठक में इन देशों के सभी शिखर नेता शी के नये रोडमैप से सहमत थे। इस रोडमैप में ऊर्जा, वित्तीय निवेश, एयरोस्पेस, अधोसंरचना, नई तकनीक को रेखांकित किया गया है। शी ने प्रस्ताव दिया है कि अगले तीन से पांच वर्षों तक इन पांच क्षेत्रों में सहयोग को हम सब मिलकर साकार करेंगे। 'जीसीसी' उस इलाके का अंतरसरकारी आर्थिक संगठन है, जिसमें बहरीन, कुवैत, ओमान, कतर, सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात शामिल हैं। शी ने कहा कि आने वाले दिनों में जीसीसी देशों से चीन कच्चा तेल और लिक्विफाइड नेचुरल गैस का आयात बढ़ाएगा। खाड़ी देशों से यह कारोबार चीनी मुद्रा रनमिनपी (युआन) में हुआ करेगी। मतलब साफ है कि इस इलाके में डॉलर के विकल्प के रूप में युआन को स्वीकार करा लेना राष्ट्रपति शी का एक बड़ा लक्ष्य था। चीनी राष्ट्रपति विगत बुधवार को सऊदी अरब पहुंचे। उसके प्रकारांतर चीनी राष्ट्रपति शी जिनफिंग और सऊदी किंग सलमान ने कई रणनीतिक सौदों पर हस्ताक्षर किए, जिसमें दिग्गज चीनी टेक कंपनी हुआवेई भी शामिल है। हुआवेई वही कंपनी है, जिसका फाइव-जी नेटवर्क पूरी दुनिया में इस बात के लिए कुख्यात है कि चीनी सेना और अन्य खुफिया एजेंसियां उसे जासूसी के लिए इस्तेमाल करती हैं। हुआवेई पर अमेरिका, ब्रिटेन समेत कई यूरोपीय देशों ने प्रतिबंध लगा रखा है। चीन और सऊदी अरब के बीच 29.26 अरब डॉलर के उभयपक्षीय समझौते हुए हैं, उसमें ऊर्जा सहयोग सर्वोपरि है। सऊदी अरब के ऊर्जा मंत्री प्रिंस अब्दुल अज़ीज बिन सलमान ने कहा कि चीन विश्व का सबसे बड़ा एनर्जी कंज्यूमर है, और हमारा देश टॉप ऑयल एक्सपोर्टर है, दोनों मिलकर विश्व भर में तेल बाज़ार को संतुलित करेंगे। सऊदी ऊर्जा मंत्री के कहे इन शब्दों के निहितार्थ, न सिर्फ़ अमेरिका, बल्कि रूस भी ढूंढ़ने का प्रयास करेगा। चीन, रियाद की बैठक में यह भी चुग्गा छोड़ गया कि शांघाई कॉरपोरेशन आर्गेनाइजेशन और ब्रिक्स का विस्तार करेंगे, जिसमें इच्छुक अरब देश सदस्य बन सकेंगे। सवाल यह है कि शी जिस रोडमैप को लेकर खाड़ी देशों में चल रहे हैं, क्या उस पर पुतिन की सहमति है? अमेरिका को नुकसान आने वाले दिनों में यह हो सकता है कि डॉलर की वकअत धीरे-धीरे कम होगी। भारत खाड़ी देशों से तेल व गैस का आयात करता रहा है, युआन की तरह यहां के करेंसी बास्केट में भारतीय रुपये का प्रवेश क्यों नहीं होना चाहिए? 2021-22 में भारत से गल्फ देशों का व्यापार 154.73 डॉलर का रहा है। 2021-22 में जीसीसी देशों से भारत ने 48 अरब डॉलर का कच्चा तेल और एलएनजी-एलपीजी 21 अरब डॉलर का आयात किया था। यों भारत सरकार की तरफ से रुपये में पेमेंट ईरान को हो रहा था, मगर प्रतिबंध और तेल के आयात पर रोक की वजह से उसमें भी बाधा आ गई। रूस में यही दिक़्क़त ग्राज़प्रोम बैंक और यूको बैंक के वोस्त्रो अकाउंट्स के साथ दरपेश हो रही थी। 2021 में भारतीय रिज़र्व बैंक ने क्रास करेंसी के रूप में युआन को आगे बढ़ाने का निर्णय लिया था। अब भारत सरकार बताए कि रूस समेत दूसरे देशों से आयात के वास्ते पेमेंट में रनमिनपी (युआन) का हम कितना इस्तेमाल कर रहे हैं? यह दीगर है कि युआन भी विनिमय की दृष्टि से डॉलर की तरह रुपये के मुक़ाबले महंगा होता गया है। दुनिया भर में सऊदी अरब की छवि यह बनी हुई है कि वह इस्लाम और दीन के मार्ग पर चलने वालों का रक्षक देश है। मगर, चीन के संदर्भ में गहराई से पड़ताल करें, तो लगेगा कि सऊदी अरब सबसे पहले अपना बिज़नेस इंटरेस्ट देखता है। चीन, सिल्क रोड के अतीत को पुनर्जीवित कर अपनी कूटनीति साध रहा है। नये रेशम मार्ग की चर्चा जब चीनी कूटनीतिक मंचों पर करते हैं, अरब देशों से चीन के दो हज़ार साल पुराने व्यापार को रेखांकित करने से नहीं चूकते। चीनी रणनीतिकारों ने 'एकै साधे, सब सधै' के सनातन सिद्धांत पर चलते हुए सबसे पहले सऊदी अरब साधा है। 21 जुलाई, 1990 को सऊदी अरब और चीन के बीच कूटनीतिक संबंध स्थापित हुए। उससे पहले सऊदी अरब ताइवान को अपनी परियोजनाओं में प्राथमिकता देता रहा। 1973 में ताइवान की कंपनी 'आरएसईए' को मक्का में राजमार्ग बनाने का अवसर मिला था। ताइवानी टेक कंपनियां, डाक्टर-नर्स खासी संख्या में सऊदी अरब आये। 1990 के बाद सऊदी अरब में ताइवान धीरे-धीरे हाशिये पर चला गया। चीनी राष्ट्रपति शी दूसरी बाद 2022 में सऊदी अरब आये हैं। इससे पहले 2016 में जब शी चिनफिंग रियाद आये, तब कई महत्वपूर्ण समझौतों पर हस्ताक्षर हुए थे। उनमें से नियोम प्रोजेक्ट सबसे महत्वाकांक्षी माना गया था। इस परियोजना के तहत उत्तर-पश्चिम सऊदी शहर ताबुक को यूरोप व अफ्रीक़ा से सड़क मार्ग के ज़रिये जोड़ना था। ताबुक में सऊदी अरब का सबसे वृहदाकार एयरबेस है। नियोम प्रोजेक्ट से चीनी कंपनियों के वारे-न्यारे हुए। इसके प्रकारांतर जिज़ान क्षेत्र में कई चीनी कंपनियां अधोसंरचना व ऊर्जा के क्षेत्र में कमाई के वास्ते उतर आईं। चीन की आर्थिक गतिविधियां केवल सऊदी अरब तक सीमित नहीं रहीं। 'चाइना-इजिप्ट टेडा स्वेज इकोनॉमी ट्रेड कोऑपरेशन ज़ोन', 'चाइना-ओमान इंडस्ट्रियल पार्क', 'चाइना-यूएई इंडस्ट्रियल कैपासिटी कोऑपरेशन डेमोंस्ट्रेशन पार्क' जैसे चंद उदाहरण हैं। 2021 में चीन ने अरब देशों से 'स्पेस एंड सेटेलाइट नेवीगेशन प्लान' पर हस्ताक्षर किये थे। इन सारी परियोजनाओं को साकार करने में सऊदी अरब की सबसे बड़ी भूमिका रही थी। चीन आज की तारीख़ में आधे से अधिक तेल और गैस का आयात होरमुज जलडमरूमध्य से कर रहा है। उसे पर्शियन खाड़ी में कोई पंगा नहीं चाहिए, चुनांचे ईरान, ओमान, यूएई व मुसन्दम प्रशासन से भी शक्ति संतुलन बनाये रखना है। जो लोग सऊदी अरब को इस्लाम का रक्षक मानते हैं, उन्हें जुलाई, 2019 में संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार आयोग को भेजे उस प्रस्ताव को पढ़ लेना चाहिए, जिसमें सऊदी अरब समेत 37 देशों ने हस्ताक्षर कर मान लिया था कि शिन्चियांग में उईगुर मुसलमानों पर चीन किसी तरह का जुल्मों-सितम नहीं कर रहा है।

लेखक ईयू-एशिया न्यूज़ के नयी दिल्ली संपादक हैं।

पेसा एक्टः जनजातियों के समग्र विकास का संकल्प

लेखक- निलय श्रीवास्तव

मुख्यमंत्री शिवराजसिंह चौहान ने खुले तौर पर चेताया है कि पेसा एक्ट जनजातियों के हितों की रक्षा करने के लिए लागू किया गया है। जनजातीय समाज को अब तक लूटा जा रहा था उस पर रोक लगेगी। जल जमीन और जंगल पर उनका पूरा अधिकार होगा। इस सोच के साथ मध्यप्रदेश में ग्राम सभाओं को अधिक अधिकार सम्पन्न बनाया गया है। जनजातीय समाज के उत्पादों की खरीद-बिक्री अब ग्राम सभाओं के माध्यम से हो सकेगी। पेसा एक्ट के तहत् अब कोई भी व्यक्ति जनजातीय बंधुओं की जमीन पर कब्जा नहीं कर सकेगा। मध्यप्रदेश सरकार दो दशकों से जनजातीय समाज की बेहतरी के लिए कार्य कर रही है और इस दिशा में पेसा एक्ट लागू कर एक ठोस कदम उठाया गया है। जो लोग जनजातीय समाज की आड़ में राजनीति कर अपनी रोटी सेंक रहे थे अब वे भी चुप हो गए हैं। मुख्यमंत्री शिवराजसिंह चौहान समूचे मध्यप्रदेश का दौरा कर लोगों को पेसा एक्ट के बारे में जागरूक कर रहे हैं। जनजातीय समाज की बेहतरी की दिशा में इस प्रयास की सर्वत्र सराहना की जा रही है। मध्यप्रदेश की उपलब्धियों की श्रृंखला में एक और कड़ी जनजातीय गौरव दिवस के रुप में जुड़ गयी है। पेसा अधिनियम के अंतर्गत समूचे अधिकार देकर जनजातीय समाजों की ग्राम सभाओं को अत्यधिक ताकत दी गई है। संविधान के भाग 9 के पंचायतों से जुड़े प्रावधानों को जरूरी संशोधनों के साथ अनुसूचित क्षेत्रों में विस्तारित करने का लक्ष्य है। गरीबी उन्मूलन और अन्य कार्यक्रमों के लिये लाभार्थियों को चिन्हित करने तथा चयन के लिये भी ग्राम सभा ही उत्तरदायी होंगी। संविधान के भाग 9 के अंतर्गत जिन समुदायों के संबंध में आरक्षण के प्रावधान हैं उन्हें अनुसूचित क्षेत्रों कीं प्रत्येक पंचायत में उनकी जनसंख्या के अनुपात में आरक्षण दिया जाएगा। साथ ही यह शर्त भी है कि अनुसूचित जनजातियों का आरक्षण कुल स्थानों के 50 प्रतिशत से कम नहीं होगा तथा पंचायतों के सभी स्तरों पर अध्यक्षों के पद अनुसूचित जनजाति के लिये आरक्षित रहेंगे। मध्यप्रदेश पेसा एक्ट कानून लागू करने वाला सातवां राज्य बन चुका है। इससे पहले हिमाचल प्रदेश आंध्र प्रदेश तेलंगाना राजस्थान गुजरात और महाराष्ट्र ने ही अपने पेसा कानून बनाये हैं। पेसा एक्ट कानून का उद्देश्य जनजातीय समाज को स्वशासन प्रदान करने के साथ ही ग्राम सभाओं को सभी गतिविधियों का मुख्य केन्द्र बनाना है। यहाँ बता दें कि देश में पेसा कानून 24 दिसम्बर 1996 को लागू हुआ था लेकिन देश में सबसे अधिक आदिवासियों के घर यानी मध्यप्रदेश में यह कानून लागू नहीं हो सका था। हांलाकि मध्यप्रदेश में लम्बे समय से पेसा एक्ट सभी प्रावधानों के साथ पूरी तरह लागू करने की मांग की जा रही थी।

पेसा कानून के जरिए ग्राम सभाओं को और अधिक अधिकार मिले हैं। गैर जनजातीय व्यक्ति या कोई भी अन्य व्यक्ति छल कपट से बहला फुसलाकर विवाह करके जनजातीय भाई-बहनों की जमीन पर गलत तरीके से कब्जा करने या खरीदने की कोशिश करें तो ग्राम सभा इसमें हस्तक्षेप कर सकेंगीं। यदि ग्राम सभा को यह पता चलता है कि वह उस जमीन का कब्जा फिर से जनजातीय भाई-बहनों को दिलवाएगी तो अधिसूचित क्षेत्रों में ग्राम सभा की अनुशंसा के बिना खनिज के सर्वे पट्टे देने या नीलामी की कार्यवाही नहीं हो सकेगी। अब तेदुपत्ता तोड़ने और बेचने का अधिकार भी ग्राम सभाओं को दिया जाएगा। गांव में मनरेगा और अन्य कामों के लिए आने वाले धन से कौन सा काम किया जाएगा इसे पंचायत सचिव नहीं बल्कि ग्राम सभा तय करेगी। पेसा एक्ट के तहत् अनुसूचित क्षेत्रों में पंचायतों को स्वशासन की संस्थाओं के तौर पर कार्य करने के लायक बनाने के लिये अपेक्षित शक्तियाँ और अधिकार देते हुए राज्यों के विधानमंडल यह सुनिश्चित करेंगें कि ग्रामसभा और पंचायतों को निश्चित रूप से इस तरह शक्तियाँ प्रदान की गई हों जिनमें किसी भी मादक पदार्थ की बिक्री या उपभोग को प्रतिबंधित या सीमित करने की शक्ति होगी। गौण वन उत्पादों का स्वामित्व भी मिलेगा। एक्ट में प्रावधान किया गया है कि अनुसूचित क्षेत्रों में भूमि के हस्तांतरण को रोकने की शक्ति और किसी अनुसूचित जनजाति की अवैध रूप से हस्तांतरित की गई भूमि को वापस लेने के लिये उचित कार्यवाही करने की अनुमति होगी। अब कोई भी नयी शराब भांग की दुकान ग्रामसभा की अनुमति के बिना नहीं खुलेगी। यदि 45 दिन में ग्राम सभा कोई निर्णय नहीं लेती है यह स्वमेव मान लिया जाएगा कि नयी दुकान खोलने के लिए ग्रामसभा सहमत नहीं है और फिर दुकान नहीं खोली जाएगी। यदि कोई शराब या भांग की दुकान गांव के अस्पताल स्कूल धार्मिक स्थल आदि के आस-पास हो तो उसके स्थान परिवर्तन की अनुशंसा ग्रामसभा सरकार को भेज सकेगी। ग्रामसभा किसी स्थानीय त्योहार पर शराब दुकान बंद करने की अनुशंसा कलेक्टर से कर सकती है। एक वर्ष में कलेक्टर चार शुष्क दिवस घोषित करने के लिए अधिकार के अंतर्गत दुकान को उस क्षेत्र के लिए बंद कर सकेंगे। नशे की लत को हतोत्साहित करने के लिए ग्रामसभा न केवल किसी सार्वजनिक स्थान पर शराब का उपयोग प्रतिबंधित कर

सकती है बल्कि व्यक्तिगत रूप से उपयोग किए जाने वाले मादक द्रव्यों की सीमा भी कम कर सकती है। गांव में अवैध शराब के विक्रय को रोकने का काम भी ग्रामसभा द्वारा किया जाएगा।

मध्यप्रदेष में जनजातियों के उत्थान के लिए मुख्यमंत्री षिवराजसिंह चौहान कृतसंकल्पित हैं। वे चाहते हैं कि प्रदेष का यह एक बड़ा वर्ग सर्वसम्पन्न एवं हर तरह से आत्मनिर्भर हो। इस दिषा में पेसा एक्ट ग्राम पंचायतों को अत्यंत शक्तिशाली बनाकर उन्हें व्यापक अधिकार देता है। निश्चित रूप से इस एक्ट से आदिवासियों के जीवन में व्यापक बदलाव आयेगा। उन्हें खुद निर्णय लेने और अपना विकास करने के अवसर मिलेंगे। मध्यप्रदेश सरकार ने जनजातियों के उत्थान की दिशा में जो सशक्त कदम उठाया है वह स्वागत करने योग्य है। शिक्षा स्वास्थ्य से लेकर रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने तक की गारंटी खुद मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने दी है।

(चिंतन-मनन)

प्रकृति की तीन शक्तियां

प्रकृति में तीन शक्तियां हैं- ब्रह्म शक्ति विष्णु शक्ति और शिव शक्ति। प्रायः तुममें कोई भी एक शक्ति अधिक प्रबल होती है। ब्रह्म शक्ति वह ऊर्जा है जो नव-निर्माण करती है; विष्णु शक्ति ऊर्जा का पालन करती है और शिव शक्ति वह ऊर्जा है जो रूपांतरण करती है- नया जीवन देकर या संहार कर। तुममें से कुछ हैं जिनमें ब्रह्म शक्ति प्रबल है। तुम सृष्टि तो कर सकते हो पर अपनी रचना को सुरक्षित नहीं रख पाते। हो सकता है तुम तुरंत ही नए मित्र बना लो परंतु वह मित्रता अधिक समय तक टिकती नहीं। तुममें कुछ और लोग हैं जिनमें विष्णु शक्ति है। तुम रचना नहीं कर सकते परंतु जो है उसे अच्छी तरह संभालकर रखते हो। तुम्हारी सभी पुरानी दोस्ती बहुत स्थायी होती है परंतु तुम नए मित्र नहीं बना पाते। और तुममें कुछ ऐसे भी लोग हैं जिनमें शिव शक्ति प्रबल है। वे नव-जीवन लाते हैं या रूपांतरण या जो है उसे खत्म करते हैं। गुरु शक्ति में ये तीनों शक्तियां पूर्ण रूप से प्रफुल्लित हैं। पहले यह पहचानो कि तुममें कौन-सी शक्ति प्रबल है और फिर गुरु शक्ति की आकांक्षा करो प्रार्थना करो। संपूर्ण सृष्टि सरलता और बुद्धिमत्ता के मंगलमय लय से प्रकृति के नियमों पर चल रही है। यही मंगल ही दिव्यता है। शिव वह सामंजस्यपूर्ण सरलता है जो कोई नियंत्रण नहीं जानती। शिव का विपरीत है वशी यानी नियंत्रण। नियंत्रण मन का होता है। नियंत्रण का अर्थ है दो द्वैत कमजोरी। वशी का अर्थ है स्वाभाविकता से कुछ करने के बजाए दबाव द्वारा कुछ करना। प्रायः लोग समझते हैं कि उनका जीवन परिस्थितियां उनके नियंत्रण में उनके वश में हैं; परंतु नियंत्रण एक भ्रम है मन में क्षणिक ऊर्जा का दबाव नियंत्रण है। यह है वशी। शिव इसका विपरीत है। शिव ऊर्जा का स्थाई और अनंत स्रोत है सत्ता की अनंत अवस्था वह एक जिसका कोई दूसरा नहीं। द्वैत भय का कारण है और वह सामंजस्यपूर्ण सरलता द्वैतवाद को विलीन करती है। जब एक क्षण पूर्ण है संपूर्ण है; तब वह क्षण दिव्य है। वर्तमान क्षण में होने का अर्थ है- न भूतकाल का पछतावा न भविष्य की कोई मांग। समय रुक जाता है मन रुक जाता है। तुम्हारे शरीर के प्रत्येक कोष में पांचों इंद्रियों की क्षमता है। आंखों के बिना तुम देख सकते हो दृष्टि चेतना का अंश है; इसीलिए स्वप्न में तुम आंखों के बिना देख सकते हो।

ब्रोकली की खेती

कर किसान कमाएं अधिक मुनाफा

ब्रोकली गोभीय वर्गीय सब्जियों के अंतर्गत एक प्रमुख सब्जी है। यह एक पौष्टिक इटालियन गोभी है। जिसे मूलतः सलाद, सूप, व सब्जी के रूप में प्रयोग किया जाता है। ब्रोकली दो तरह की होती है - स्प्राउटिंग ब्रोकली एवं हेडिंग ब्रोकली। इसमें से स्प्राउटिंग ब्रोकली का प्रचलन अधिक है। हेडिंग ब्रोकली बिलकुल फूलगोभी की तरह होती है, इसका रंग हरा, पीला अथवा बैंगनी होता है। हरे रंग की किस्म ज्यादा लोकप्रिय है। इसमें विटामिन, खनिज लवन (कैल्शियम, फास्फोरस एवं लौह तत्व) प्रचुरता में पाये जाते हैं।

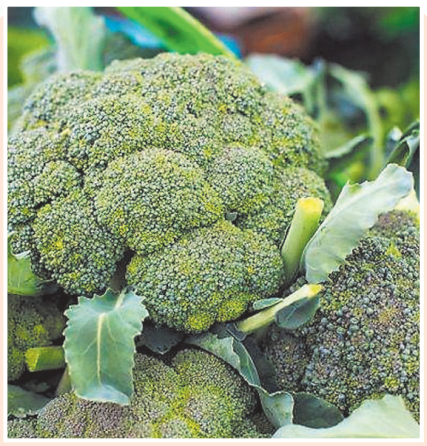

पौष्टिकता से भरपूर होने के कारण गर्भवती महिलाओं के लिए अधिक फायदेमंद है। देश के बड़े शहरों में इसकी अत्यधिक मांग होने के कारण इसकी खेती पर्वतीय क्षेत्रों में विशेषकर हिमाचल प्रदेश में बड़े पैमाने पर की जाने लगी है। उत्तराखंड में भी इसकी लोकप्रियता बढ़ रही है। इसका बाजार भाव अधिक होने के कारण किसानों को अधिक आय प्रदान कर सकती है। अधिक मुनाफा देने के कारण किसान समाधान इसकी जानकारी लेकर आया है।

खेत की तैयारियां

ब्रोकोली के लिए दुमट अथवा बलुई - दुमट मिटटी वाली भूमि सर्वोतम मणि जाती है। अधिक अम्लीय भूमि इसके लिए अच्छी नहीं होती है। भूरी मिटटी एवं उपजाऊपन वाले खेत भी इसकी खेती हेतु उपयुक्त होते हैं, किन्तु उनमें जल निकास का उचित प्रबंध होना चाहिए। खेत में पानी रुकना नहीं चाहिए अन्यथा पौधों की बढवार रुक जाती है और पौधे पीले पड़कर सड़ने लग जाते हैं। खेत की तैयारी के लिए दो जुताई पर्याप्त होती हैं, जिसमें अच्छी साड़ी गोबर की खाद दो कुन्तल प्रति नाली की दर से मिलाकर रोपाई हेतु भली - भाँति तैयार करना चाहिए।

बीज बुवाई का समय

अच्छे शीर्षों के निकलने एवं विकास के लिए 12 - 16 डिग्री सेन्टीग्रेट तापमान उपयुक्त होता है। अतः बीज की बुवाई एवं रोपाई के समय का निर्धारण उचित तापमान तथा क्षेत्र विशेषकर एवं वातावरणीय प्रस्थिति को ध्यान में रखते हुये किया जाना चाहिए।

निचले पर्वतीय क्षेत्र - सितम्बर अन्त से अक्तूबर
मध्य पर्वतीय क्षेत्र - मध्य अगत से सितम्बर
वेमौसमी खेती हेतु नवम्बर से मध्य जनवरी
ऊँचे पर्वतीय क्षेत्र - मार्च अथवा अप्रैल

बीज दर

ब्रोकोली के लिए 400 - 500 ग्राम बीज प्रति हैक्टेयर (8 - 10 ग्राम प्रति नाली) पर्याप्त होता है।

पौधशाला की तैयारी

जमीन से 15 सेमी. उठी हुयी नर्सरी की क्यारी में अच्छी साड़ी हुयी गोबर / कम्पोष्ट खाद तथा 50 - 60 ग्राम प्रति वर्गमीटर की दर से सिंगल सुपर फास्फेट मिलाकर भूमि की तैयारी करनी चाहिए। पौधशाला में भूमिगत कीटों एवं व्याधियों से बचाव के इए यह उपाय अपनायें।

क्यारी में 5 ग्राम थायरम प्रति वर्गमीटर की दर से अच्छी प्रकार मिलाकर 5 - 7 सेमी. की दुरी पर 1.5 - 2 सेमी. गहरी कतारें निकालें। तत्पश्चात कवकनाशी 10 ग्राम ड्राईकोडर्मा या एक ग्राम कार्बेन्डाजिम अथवा 2.5 ग्राम थाइरम प्रति किलोग्राम बीज के हिसाब से शोधित बीज की बुवाई करें तथा जमने तक हल्की सिंचाई फव्वारे द्वारा करें। अधिक वर्ष से बचाव हेतु नर्सरी की क्यारी को घासफूस की छपर अथवा पालीथीन शीट से ढकने का प्रबन्ध रखना चाहिए। बेमौसमी खेती हेतु पौध पालीहाउस अथवा पालिटनल के अन्दर तैयार करनी चाहिए। पालीहॉउस अथवा पालीटनल के अन्दर भी पौधशाला में जड़ों में तापमान आवश्यकता से कम होने पर पालीहाउस में हीटर लगा दें। इससे बीजों का जमाव शीघ्र होने में मदद मिलेगी।

रोपाई

रोपाई हेतु 25 - 30 दिन की पौध उपयुक्त होती है। अतः पौध तैयार होने पर रोपाई शीघ्र करें। रोपाई से पूर्व नत्रजन की आधी मात्रा तथा फास्फोरस एवं पोटाश की पूरी मात्रा और 500 ग्राम थीमेट प्रति नाली की दर से खेत में छिड़क कर अच्छी तरह खेत तैयार कर लें। उसके बाद कतार से कतार की दूरी 45 - 50 सेमी. तथा पौध की दुरी 45 - 50 सेमी. रखते हुये पौध रोपाई कर हल्की सिंचाई करें। यदि कुछ पौधे मर गये हों अथवा बढवार अच्छी न हो तो उनके स्थान पर नई पौध की पुन : रोपाई एक हफ्ते के अन्दर कर दें। रोपाई के एक माह बाद शेष आधी नत्रजन मात्रा छिड़क कर पौधों के चारों तरफ मिटटी चढायें।

खाद या उर्वरक

उर्वरको का प्रयोग मृदा परीक्षण के आधार पर करना उपयुक्त रहता है। अच्छी उपज के लिए प्रति हैक्टेयर 15 - 20 टन गोबर / कम्पोष्ट खद, 100 किलोग्राम नत्रजन, 100 किलोग्राम फास्फोरस तथा 50 किलोग्राम पोटाश का प्रयोग किया जाना अनुकूल होता है।

खरपतवार नियंत्रण

शुरू के डेढ़ से दो माह तक खेत से खरपतवार निकलते रहें जिससे पौधों की बढवार अच्छी हो सके। इसके लिए आवश्यकतानुसार दो से तिन निराई - गुडाई पर्याप्त होगी।

जड़ विगलन

इस रोग के कारण रोपाई के उपरान्त कुछ पौधों की बढ़वार रुकी हुई दिखायी पड़ती है। पौधों को उखाड़कर देखने पर पत्ता चलता है कि इनकी जड़ें गलकर केवल एक तार की तरह हो गई हैं। इसकी रोकथाम के लिए बीज उपचार आर्द्रगलन रोग जैसा करें, रोपाई के समय पौध को दावा के घोल में डुबोकर लगायें तथा रोग के लक्षण खेत में दिखाई देने पर कार्बेन्डाजिम का 0.1 प्रतिशत की दर (एक ग्राम / लीटर पानी) से घोल बनाकर पौधों की जड़ों के पास छिड़काव करें तथा उचित फसलचक्र भी अपनायें।

कलि पर्णीचती रोग व मृदुल आसिता :-

इस रोग के कारण पत्तियों पर काले या भूरे धब्बे दिखाई देते हैं। इसके नियंत्रण हेतु मैंकोजेब 2.5 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से पौधों में छिड़काव करें।

कीट नियंत्रण

माहू :- इस कीट के व्यस्क तथा शिशु दोनों ही मुलायम पत्तियों से रस चूसकर पौधों को हानि पहुंचाते हैं। पत्तियां पिली पद कर सूखने लगती हैं। प्रकोप अधिक होने पर गोभी के शीर्षों में भी माहू दिखायी पड़ते हैं। इसके नियंत्रण हेतु एजेडारेकटीन 1 - 2 मिली. अथवा इमिडाक्लोप्रिड 0.3 मिली. प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

गोभी की तितली

यह एक सफ़ेद रंग की तितली हैं, जिसके पीले रंग के अंडे गुच्छे में पत्तियों के पिछली स्थ पर बहुतायत में दिखाई पड़ते हैं। अंडो से निकलने वाली शुरुआती अवस्था से ही पत्तियों को भरी मात्रा में क्षति पहुंचती हैं। इसके नियंत्रण हेतु सबसे अंडों को चुनकर नष्ट कर दें फिर नियंत्रण हेतु इंडोसल्फान 35 ई.सी.का 2 मिली. अथवा इंडोक्साकार्ब 14.5 ई.सी. का 0.2 मिली. या बैसिलस थुरिंजीयेन्सिस का 1.5 - 2.0 ग्राम दवा प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

फसल की कटाई

ब्रोकोली के शीर्ष की कटाई शीर्ष की कलियों के खुलने से पहले ही की जाती है। शीर्ष को 10 - 20 से.मी. तने (डंठल) के साथ काट लिया जाता है। इसके पश्चात् निचले पत्तों के कक्षों से नई कोपलें निकलती है जिनमे छोटे - छोटे शीर्ष बनते हैं। इन्हें भी समय - समय पर काट लेना चाहिए।

उपज

ब्रोकोली की औसत उपज 150 - 200 कुन्तल प्रति हैक्टेयर (3 - 4 कुन्तल प्रति नाली) है।

अनुमोदित किस्में

के.टी.एस.-1 :-

इस किस्म के शीर्ष हरे रंग के कोमल डंठल युक्त होते हैं, जिनका औसत वजन 200 - 300 ग्राम होता है और रोपाई के लगभग 80 - 90 दिनों बाद काटने योग्य हो जाता है। मुख्य शीर्ष काटने के कुछ दिनों बाद छोटे - छोटे शीर्ष शाखाओं की तरह मुख्य भाग के रूप में पत्तियों के कक्षों से निकलते हैं उन्हें भी काटकर उत्पादन को बढ़ाया जा सकता है।

पालक समृद्धि

यह किस्म भी हरे शीर्ष वाली स्प्राउटिंग ब्रोकोली किस्म है। जिसका शीर्ष भाग बड़ा एवं लम्बे कोमल डंठल युक्त होता है। प्रत्येक शीर्ष का औसत वजन 25- - 300 ग्राम होता है। मुख्य शीर्ष को काटने के बाद छोटे - छोटे शीर्ष पत्तों के कक्षों से निकलते हैं। यह किस्म 85 - 90 दिनों में रोपाई के बाद कटाई योग्य हो जाती है। इसमें येलो आई रोग एवं ब्रैक्टिंग विकार के लिए प्रतिरोधिता पायी जाती है।

एन.एस.- 50

यह मध्यम अवधि में तैयार होने वाली संकर किस्म है। इनके हेड गठीले, समरूप एवं गुम्बदाकार होते हैं। यह किस्म कैट आई से रहित है। इसके पौधे मृदुरोमिल आसिता एवं काला सडन रोग के प्रति सहनशील है। इसका बीज नामधारी मार्क से बाजार में मिलता है।

ब्रोकोली संकर - 1 :

इसकी परिपक्वता रोपाई के 60 - 65 दिन बाद होती है। इसके शीर्ष हरे रंग के गठीले होते हैं, जिसका औसत वजन 600 - 800 ग्राम होता है। इसके बीज राष्ट्रीय बीज निगम द्वारा किसानों को उपलब्ध कराये जाते हैं।

टी.डी.सी. - 6 :

इसके शीर्ष हरे रंग के होते हैं, जिसका औसत वजन 600 - 800 ग्राम होता है। इसकी फसल रोपाई के 65 - 70 दिन बाद तैयार हो जाती है। इसकी बुवाई दर 300 - 350 ग्राम प्रति हैक्टेयर अनुमोदित की गयी है। इस प्रजाति के बीज उत्तराखंड तराई बीज निगम, पंतनगर द्वारा किसानों को उपलब्ध कराये जाते है।

रोग नियंत्रण

इस फसल में बीमारियों का प्रकोप अधिक नहीं होता है किन्तु रोपाई के बाद कुछ कीटों एवं व्याधियों का प्रकोप हो सकता है।

आर्द्रपतन

पौध जमीन की स्थ से गलकर मरने लगती है। इसके उपचार एवं रोकथाम के लिए निम्न उपाय अपनाने चाहिए।

भूमि में जल निकास का उचित प्रबन्ध करें।
नर्सरी का स्थान ऊँची जगह पर चुने एवं हर वर्ष बदलते रहें।
कार्बेन्डाजिम एक ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से बीजोपचार कर बुवाई करें अथवा जैविक विधि से बीज उपचार हेतु ट्राइकोडर्मा विरिडी (4 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज) अथवा ट्राइकोडर्मा हरजियानम 10 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज अथवा 25 ग्राम ट्राइकोडर्मा एवं 2.5 किलोग्राम गोबर की खाद में मिलाकर प्रति नाली की दर से पौधशाला की मिटटी में मिलायें।
नर्सरी में बीज की घनी बुवाई न करें और बुवाई कतारों में करें।
पौधशाला को सौर्यकरण द्वारा निर्जिविकरण करें।
बुवाई के 10 दिन बाद कार्बेन्डाजिम की 1 ग्राम दवा प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर क्यारियों को तर करें तथा पुः 15 - 20 दिन बाद इसी दावा के घोल से क्यारी को ट्र कर लें।

चीकू की आधुनिक खेती कैसे करें?

चीकू की खेती भारत के आंध्रप्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक तथा तमिलनाडु राज्यों में की जाती है। हाल के वर्षों में इसकी खेती अलग - अलग राज्यों में होने लगी है। इसकी खेती में कम लगत में अधिक मुनाफे के कारण तेजी से लोकप्रिय हो रही है। इस फल के लिए एक खास बात यह है की इसकी खेती के लिए कम सिंचाई के साथ - साथ रख - रखाव आसान है। सबसे बड़ी बात है की इसकी अधिक मांग रहने से बाजार आसानी से उपलब्ध हो जाता है। लेकिन उन्नत तरह से खेती करने से चीकू का उत्पादन अधिक होता है।

उन्नत किस्में

बड़े फल तथा पतले छिलके के साथ गुदा मीठा अच्छे चीकू का पहचान है इसलिए इसकी उन्नत किस्मों का अधिक ध्यान रखना जरुरी है। चीकू की उन्नत किस्में क्रिकेट बाल, कलि पत्ती, भूरी पत्ती, पी.के.एम.1, डीएसएच - 2 झुमकिया, आदि किस्में अति उपयुक्त है। क्रिकेट की बाल, कालीपट्टी, कलकत्ता राउंड, कीर्तिभारती, द्वारापुड़ी, पाला, पीकेएम -1, जोनावालासा ढ़ु और ढ़ुढ़ु, बैंगलोर, वावी वलसा आदि परन्तु उत्तरभारत में बारहमासी किस्म ज्यादा फेमस है।

पौध प्रवर्धन

चीकू की पौध बीज तथा कलम, भेट कलम से तैयार की जाती है लेकिन व्यवसायिक खेती के लिए किसान को शीर्ष कलम, तथा भेंट कलम विधि द्वारा तैयार पौधों को ही बोना चाहिए। पौध तैयार करने की सबसे उपयुक्त समय मार्च - अप्रैल है।

पौधों की रोपाई

पौधों की रोपाई वर्ष ऋतू में उपयुक्त रहती है। पौधों की रोपाई से पहले पौधों के लिए जड़ों को तैयार जरुर कर लेना चाहिए। इसके लिए गर्मी के दिनों में ही 7 - 8 मी. दुरी वर्गाकार विधि से 90 से.मी. गहरा आकार के गड्ढे तैयार कर लेना चाहिए। गड्ढों को भरते समय मिट्टी के साथ लगभग 30 किलोग्राम गोबर की अच्छी तरह सड़ी खाद, 2 किलोग्राम करंज की खली एवं 5 - 7 कि.ग्रा. हड्डी का चुरा प्रत्येक गद्दे में डालकर भर देना चाहिए। पौधों को बोने के बाद जड़ों में मिट्टी भरकर थाला बना लें।

खाद एवं उर्वरक का उपयोग

पेड़ों में समय - समय पर खाद देते रहना चाहिए, जिससे पौधों का विकास 10 वर्षों तक होता रहे। पोधों के रोपाई के एक वर्ष बाद 4 - 5 टोकरी गोबर की खाद, 2 - 3 कि.ग्रा. अरण्डी / करंज की खली एवं 50:25:25 ग्रा. एन.पी.के. प्रति वर्ष डालते रहना चाहिए। यह मात्रा 10 वर्ष तक बढ़ाते रहना चाहिए तत्पश्चात 500:250:250 ग्रा. एन.पी.के. की मात्रा प्रत्येक वर्ष देना चाहिए। इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए की खाद और उर्वरक का उपयोग केवल जून तथा जुलाई में ही करना चाहिए। खाद सीधे जड़ में नहीं डालें बल्कि इसके लिए पौधे से दूर एक नाली बना लें उस नाली से खाद का घोल बनाकर दें।

सिंचाई

बरसात के मौसम में सिंचाई की जरुरत नहीं पड़ती है लेकिन गर्मी के मौसम में 7 दिन पर तथा सर्दी के मौसम में 15 दिन पर सिंचाई करने से पौधों में फल तथा फूल अच्छे लगते है।

पौधों की देख रेख तथा काट छांट

चीकू के पौधों को विशेष रूप से सर्दी के मौसम में पाले से बचाना जरुरी रहता है। यह खास ध्यान पौधों की रोपाई के 3 वर्ष तक रखने की जरुरत है। इसके लिए छोटे पौधों को बचाने के लिए पुआल या घास के छप्पर से इस प्रकार ढक दिया जाता है कि वे तीन तरफ से ढके रहते हैं और दक्षिण - पूर्व दिशा धूप एवं प्रकाश के लिए खुली रहती है। पौधों की रोपाई के समय मूल वृत्त पर निकली हुई टहनियों को काटकर साफ कर देना चाहिए। पेड़ का क्षत्रक भूमि से 1 मी. ऊँचाई पर बनने देना चाहिए। जब पेड़ बड़ा हो जाता है, तब उसकी निचली शाखायें झुकती चली जाती है और अन्त में भूमि को चुने लगती है तथा पेड़ की ऊपर की शाखाओं से ढक जाती है। इस शाखाओं में फल लगने भी बंद हो जाते हैं। इस अवस्था में इन शाखाओं को छीलकर निकाल देना चाहिए।

पुष्पन एवं फलन

शीर्ष कलम तथा भेंट कलम के द्वारा तैयार पौधों में 2 वर्षों के बाद फूल एवं फल आना आरम्भ हो जाता है। इसमें फल साल में 2 बार आते है। पहली फ़रवरी से जून तक और दूसरा सितम्बर से ऑक्टोबर तक। फूल लगने से लेकर फल पककर तैयार होने में लगभग चार महीने लग जाते हैं। चीकू के पौधों से फल को गिरने से रोकने के लिए फूल के समय जिबरेलिक अम्ल के 50 से 100 पी.पी.एम. अथवा फल लगने के तुरंत बाद प्लैनोफिक्स 4 मिली./ली. पानी के घोल का छिड़काव करने से फलन में वृद्धि एवं फल गिरने में कमी आती है।

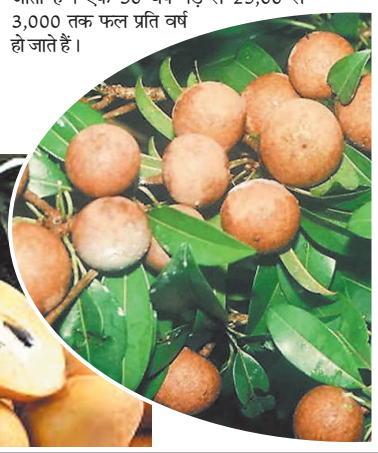

रोग एवं कीट नियंत्रण

चीकू की पौधों में एक विशेषता यह रहती है की इस पर रोगों तथा कीटों का प्रकोप कम होता है। इसके बाबजूद भी पर्ण दाग रोग तथा कलि बेधक, तना बेधक, पत्ती लपेटक एवं मिलीबग आदि कीटों का प्रभाव देखा जाता है। इसके नियंत्रण के लिए मैंकोजेब 2 ग्रा./ लीटर तथा मोनोक्रोटोफास 1.5 मिली./ लीटर के घोल का छिड़काव करना चाहिए।

उपज

चीकू में रोपाई के दो वर्ष फल मिलना प्रारम्भ हो जाता है। जैसे - जैसे पौधा पुराना होता जाता है। उपज में वृद्धि होती जाती है। एक 30 वर्ष पेड़ से 25,00 से 3,000 तक फल प्रति वर्ष हो जाते हैं।

रिलायंस कंज्यूमर ने गुजरात में लॉन्च किया स्वदेशी मेड-फॉर-इंडिया

अहमदाबाद । रिलायंस रिटेल वेंचर्स लिमिटेड के पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक एफएमसीजी कंपनी रिलायंस कंज्यूमर प्रोडक्ट्स लिमिटेड ने शुक्रवार को गुजरात में अपना स्वदेशी मेड-फॉर-इंडिया कंज्यूमर पैकेज्ड गुड्स ब्रांड इंडिपेंडेंस लॉन्च कर दिया है। इसे अक्षरधाम में प्रमुख स्वामी महाराज के शताब्दी समारोह के अवसर पर लॉन्च किया गया है। यह ब्रांड उपभोक्ताओं और किराना भागीदार के लिए खोला गया है। यह ब्रांड हाई क्वालिटी और किफायती दामों में खाद्य तेल दालें अनाज पैकेज्ड फूड और दैनिक जरूरत के अन्य उत्पादों की एक बड़ी रेंज उपलब्ध कराता है। कंपनी का कहना है कि रिलायंस इंडस्ट्रीज के लोकाचार पर आधारित रिलायंस कंज्यूमर प्रोडक्ट्स लिमिटेड का उद्देश्य स्वदेशी रूप से विकसित उत्पादों के साथ भारतीयों को सशक्त बनाना है। कंपनी अपने एफएमसीजी कारोबार को देशभर में पहुंचाने से पहले गुजरात को गो-टू-मार्केट राज्य के रूप में डेवलप करने की योजना बना रही है। आने वाले महीनों में कंपनी पूरे गुजरात में एफएमसीजी खुदरा विक्रेताओं को कवर करने के लिए इस लॉन्च को आगे बढ़ाने की योजना बना रही है।

तमिलनाडु : टांगेडको ने 31 को स्वैच्छिक उपभोक्ता संगठनों के साथ एक बैठक बुलाई

चेन्नई। तमिलनाडु जनरेशन एंड डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी (टांगेडको) ने 31 दिसंबर को उत्तरी चेन्नई क्षेत्र में कार्यरत स्वैच्छिक उपभोक्ता संगठनों के साथ एक बैठक बुलाई है। उपभोक्ता संगठनों और जनता से अपने प्रदर्शन के बारे में फीडबैक लेने के मकसद से यह बैठक बुलाई गई है। बैठक का महत्व इसलिए भी है क्योंकि स्वैच्छिक संगठन पावर यूटिलिटी के कामकाज पर मामूली बिंदुओं को भी सामने लाएंगे जो संगठन को बिजली वितरण की बेहतरी के लिए अपने प्रदर्शन में सुधार करने में और मदद करेगा। तांगेडको ने कोरोना वायरस महामारी की शुरूआत के बाद से बिजली क्षेत्र में काम कर रहे स्वैच्छिक उपभोक्ता संगठनों के साथ बातचीत नहीं की है। तांगेडको के सूत्रों ने आईएएनएस को बताया कि पावर यूटिलिटी और उपभोक्ता संगठनों के बीच पहले की बातचीत ने तांगेडको को अपना प्रदर्शन सुधारने में मदद की है। तमिलनाडु पावर यूटिलिटी को अपने कामकाज को लेकर कई तरह कि शिकायतें मिल रही हैं। स्वैच्छिक क्षेत्र में उपभोक्ता संगठनों और पावर यूटिलिटी के बीच बातचीत से तांगेडको के द्वारा अपनी कार्यशैली में सुधार के लिए उठाए गए कदमों में से एक रही है क्योंकि विभाग उपभोक्ताओं द्वारा प्रसारित अधिकांश आलोचनाओं को पूरा करने में सक्षम था। उपभोक्ता संरक्षण और पावर सेक्टर के क्षेत्र में कार्यरत स्वैच्छिक उपभोक्ता संगठन बिजली के वितरण, बिजली की विफलता और पावर यूटिलिटी के कामकाज से संबंधित अन्य मुद्दों के बारे में कई मुद्दों को व्यक्त करते रहे हैं। चेन्नई में 41 वर्षीय कोकिला कुमारी दिनाकर ने आईएएनएस से बात करते हुए कहा कि तांगेडको द्वारा स्वैच्छिक संगठनों को आमंत्रित करना एक अच्छा कदम है क्योंकि इससे पावर यूटिलिटी की विश्वसनीयता बढ़ेगी।

एमएफ इनोवेंशस में हिस्सेदारी खरीदेगी श्रीराम पिस्टंस

नई दिल्ली । वाहन कलपुर्जा कंपनी श्रीराम पिस्टंस एंड रिंग्स ने इलेक्ट्रिक मोटर डिजाइन एवं विनिर्माण कंपनी ईएमएफ इनोवेशंस में बहुलांश हिस्सेदारी खरीदने का अधिग्रहण करने की घोषणा की है। इसके साथ ही कंपनी इलेक्ट्रिक वाहन क्षेत्र में आपूर्ति शुरू करने की तैयारी कर रही है।इस हिस्सेदारी का अधिग्रहण कंपनी की पूर्ण स्वामित्व वाली अनुषंगी एसपीआर इंजिनियस लिमिटेड (एसईएल) करेगी। सौदे के वित्तीय पहलू की जानकारी नहीं दी गई है। ईएमएफ इनोवेशंस (ईएमएफआई) की सह-स्थापना इंजीनियरिंग उद्यमियों ने पर्याप्त शोध एवं विकास के बाद की है। इसका भारत और सिंगापुर में परिचालन है। श्रीराम पिस्टंस एंड रिंग्स (एसपीआरएल) के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) कृष्णकुमार श्रीनिवासन ने कहा कि यह एक रणनीतिक निवेश है और कंपनी इलेक्ट्रिक वाहन क्षेत्र में अपनी उपस्थिति बढ़ाना चाहती है। कंपनी का इरादा दोपहिया तिपहिया यात्री वाहन और वाणिज्यिक वाहनों के लिए इलेक्ट्रिक पावरट्रेन कलपुर्जों मसलन मोटर और कंट्रोलर की आपूर्ति का है।

शेयर बाजार गिरावट के साथ बंद

मुंबई ।

मुम्बई शेयर बाजार शुक्रवार को गिरावट के साथ बंद हुआ है। सप्ताह के अंतिम कारोबारी दिन बाजार में ये गिरावट दुनिया भर के बाजारों से मिले कमजोर संकेतों के साथ ही बिकवाली हावी रहने से आई है। इसके साथ ही विभिन्न देशों के केंद्रीय बैंकों की नीतिगत दर को लेकर आक्रामक रुख से भी बाजार पर दबाव पड़ा है। इससे पहले गत दिवस भी बाजार गिरावट पर बंद हुआ था। यह सिलसिला आज दूसरे दिन भी बरकरार रहा। दिन भर के कारोबार के बाद तीस शेयरों पर आधारित बीएसई सेंसेक्स 461.22 अंक करीब 0.75 फीसदी नीचे आकर 61337.81 अंक पर बंद हुआ।

वहीं दूसरी ओर पचास शेयरों वाला नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी भी 145.90 अंक तकरीबन 0.79 फीसदी टूटकर 18269 अंक पर बंद हुआ। सेंसेक्स के शेयरों में महिंद्रा एंड महिंद्रा एशियन पेंट्स डॉ. रेड्डीज टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज भारतीय स्टेट बैंक विप्रो पावरग्रिड और टाइटन के शेयरों को सबसे ज्यादा नुकसान हुआ जबकि हिंदुस्तान यूनिलीवर एचडीएफसी बैंक और नेस्ले इंडिया के शेयर लाभ के साथ ही ऊपर आये हैं। बाजार जानकारों के अनुसार फेडरल रिजर्व के नीतिगत दर में 0.5 फीसदी की बढ़त के बाद यूरोपीय केंद्रीय बैंक और बैंक ऑफ इंग्लैंड द्वारा ब्याज दरों में बढ़ोतरी और मुद्रास्फीति को नियंत्रण में लाने के लिये अपनाये गये आक्रामक रुख से भी दुनिया भर के बाजारों में गिरावट आई है।'' वहीं एशियाई बाजारों की बात करें तो दक्षिण कोरिया का कॉस्पी जापान का निक्की और चीन का शंघाई कंपोजिट नुकसान में रहे जबकि हांगकांग के हैंगसेंग में बढ़त रही। यूरोपीय बाजारों में गिरावट का माहौल रहा। इसके अलावा अमेरिकी शेयर बाजार में भी गिरावट रही। दूसरी ओर अंतरराष्ट्रीय तेल मानक ब्रेंट क्रूड 2.25 फीसदी की गिरावट के साथ 79.38 प्रति डॉलर पर बंद हुआ।

रुपया गिरावट के साथ बंद

मुंबई । अमेरिकी डॉलर के मुकाबले शुक्रवार को भारतीय रुपये में गिरावट आई है। अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में रुपया शुक्रवार को नौ पैसे टूटकर 82.85 (अस्थायी) प्रति डॉलर पर बंद हुआ। विदेशों में डॉलर के मजबूत होने से भी रुपये पर दबाव पड़ा है हालांकि कच्चे तेल कीमतों में गिरावट से रुपये के नुकसान पर कुछ हद तक अंकुश लगा है। अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में रुपया 82.84 के स्तर पर खुला और कारोबार के अंत में यह नौ पैसे की गिरावट के साथ ही 82.85 रुपये प्रति डॉलर पर बंद हुआ जबकि कारोबार के दौरान रुपया 82.73 के उच्चस्तर और 82.89 के निचले स्तर पर पहुंचा। वहीं इससे पिछले कारोबारी सत्र में रुपया 82.76 प्रति डॉलर पर बंद हुआ था। इसी बीच विश्व की छह प्रमुख मुद्राओं की तुलना में डॉलर की मजबूती को दिखाने वाला डॉलर सूचकांक 0.13 फीसदी बढ़कर 104.69 पहुंचा गया।

सीएआईटी ने ई-कामर्स कंपनी फ्लिपकार्ट के खिलाफ खोला मोर्चा

- तुरंत कार्रवाई के लिए दिल्ली पुलिस कमिशनर से लगाई गुहार

नई दिल्ली । ऑल इंडिया ट्रेडर्स कन्फेडरेशन (सीएआईटी) ने ई-कॉमर्स कंपनी फ्लिपकार्ट के खिलाफ मोर्चा खोल दिया है। दिल्ली के द्वारका में एक लड़की पर तेजाब से हमला किया गया था और बताया जा रहा है कि ये तेजाब फ्लिपकार्ट से ही खरीदा गया था। इसके बाद से ही ई-कॉमर्स मंच विभिन्न एनजीओ व सरकारी प्राधिकरणों के निशाने पर आ गया है। सीएआईटी के महासचिव प्रवीण खंडेलवाल ने दिल्ली पुलिस कमिशनर संजय अरोड़ा से इस मामले का संज्ञान लेते हुए फ्लिपकार्ट के खिलाफ त्वरित कानूनी कार्रवाई शुरू करने का आग्रह किया है। उन्होंने कहा कि फ्लिपकार्ट का तेजाब बेचना पूरी तरह अवैध है। सीएआईटी के अध्यक्ष बीसी भरतिया ने कहा है कि अगर इसी तरह का काम किसी छोटे दुकानदार या किराना स्टोर मालिक से हुआ होता तो अब तक पुलिस उसके खिलाफ मामला दर्ज कर चुकी होती लेकिन अमेजन और फ्लिपकार्ट जैसी बड़ी ई-कॉमर्स कंपनियां आए दिन कानून तोड़ रही हैं और बच जा रही हैं। सरकार को ई-कॉमर्स कंपनियों के लिए नियमों को सख्त करना होगा और ऐसी गलतियों के लिए उनकी जवाबदेही तय करनी होगी। सीएआईटी ने कहा है कि इन कंपनियों को आईटी अधिनियम के सेक्शन 79 के कारण बचने नहीं दिया जाना चाहिए जो डाटा इंटरमीडियरीज को सुरक्षा प्रदान करता है। ऐसी गलती होने पर इनका ई-कॉमर्स लाइसेंस रद्द होना चाहिए और इन पर भारी जुर्माना लगना चाहिए।

2024 तक, भारतीय सड़कें अमेरिकी सड़कों की तरह दिखेंगी : नितिन गडकरी

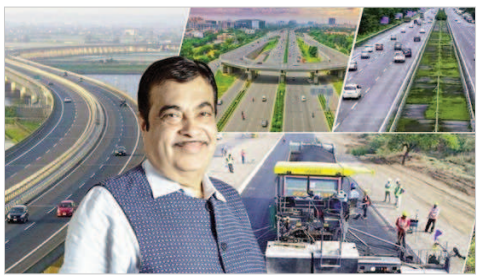

नई दिल्ली।

केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने शुक्रवार को कहा कि रसद लागत, जो वर्तमान में सकल घरेलू उत्पाद का 16 प्रतिशत है, 2024 तक एकल अंकों में गिर जाएगी।मंत्री ने आगे कहा कि 2024 समाप्त होने से पहले, भारत की सड़क संरचना अमेरिकी सड़कों की संरचना जैसी होगी। मंत्री फिक्की के वार्षिक सम्मेलन और 95वें एजीएम को संबोधित कर रहे थे। यह कहते हुए कि अब हमारे व्यापार और अंतरराष्ट्रीय बाजार में उपस्थिति बढ़ाने का समय है। मंत्री ने कहा, यह हमें और अधिक निर्यात प्राप्त करने में मदद करने जा रहा है। गडकरी ने कहा कि भारत दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्था है और 2024-25 तक 5 ट्रिलियन डॉलर जीडीपी हासिल करने के लिए तैयार है। उन्होंने कहा कि भारत सतत विकास हासिल करने के लिए निवेश, आर्थिक विकास और रोजगार सृजन को बढ़ावा देकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दृष्टिकोण का पालन करते हुए एक समावेशी भारत के निर्माण की राह पर है। उन्होंने कहा, हालांकि, हमें सभी हितधारकों के बीच सहयोग, समन्वय और संचार की आवश्यकता है। इसके अलावा, गडकरी ने बैटरी केमिस्ट्री में शोध का उल्लेख किया और कहा, हमें इस क्षेत्र में अग्रणी होना चाहिए। उन्होंने कहा कि सरकार का लक्ष्य ऑटोमोबाइल क्षेत्र को दोगुना कर 15 लाख करोड़ रुपये करना है। यह नई नौकरियां पैदा करेगा और भारत को दुनिया के सबसे बड़े ऑटोमोबाइल निर्माताओं में से एक बना देगा। इसके अलावा, निर्माण क्षेत्र में स्थिरता के महत्व को रेखांकित करते हुए, उन्होंने कहा, हम फ्लाई ऐश, तेल स्लैग, वेस्ट प्लास्टिक जैसे विकल्पों को अपनाकर निर्माण कार्य में सीमेंट और स्टील के उपयोग को कम करने की कोशिश कर रहे हैं। मंत्री गडकरी ने फिक्की को सभी क्षेत्रों के लिए अगले पचास वर्षों के लिए एक व्यापक विकास योजना तैयार करने के लिए आमंत्रित किया। इस अवसर पर फिक्की के अध्यक्ष संजीव मेहता ने कहा, सरकार की सर्व-समावेशी, सर्व-व्यापक और सर्वांगीण विकास पहल भारत को बदल रही है, प्रत्येक कदम देश को आत्मनिर्भर भारत के करीब ला रहा है। राष्ट्रीय रसद नीति आर्थिक विकास की दिशा में एक एकीकृत मार्ग बनाने में सहायक होगी। इसके अलावा, उन्होंने कहा कि बुनियादी ढांचे के विकास पर खर्च बढ़ने से अर्थव्यवस्था में कुल मांग को फिर से जीवंत करने में गुणक प्रभाव पड़ रहा है। उन्होंने कहा, 2030 तक गैर-कृषि नौकरियों में वृद्धिशील वृद्धि में अकेले बुनियादी ढांचे के निर्माण में 25 प्रतिशत योगदान करने की क्षमता है।

कोटक महिंद्रा बैंक ने सात दिन में तीसरी बार बढ़ाई एफडी पर ब्याज दर

- बैंक अब 390 दिनों की एफडी पर दे रहा है 7 फीसदी की दर से ब्याज

नई दिल्ली।

निजी क्षेत्र के बैंक कोटक महिंद्रा बैंक ने सात दिनों में तीसरी बार एफडी पर ब्याज दरों में इजाफा कर दिया है। बैंक 9 दिसंबर से अब तक तीन बार एफडी की दरों को बढ़ा चुका है। कोटक महिंद्रा बैंक ने अपनी कुछ एफडी स्कीम पर ब्याज को 0.25 फीसदी तक बढ़ाया है। बैंक अभी एफडी पर अधिकतम 7.50 फीसदी की ब्याज दर ऑफर कर रहा है। बौरतलब है कि रिजर्व बैंक ने 7 दिसंबर को हुई मॉनेटरी पॉलिसी की मीटिंग में रेपो रेट को 35 आधार अंकों से बढ़ाकर 6.25 प्रतिशत कर दिया था। रिजर्व बैंक द्वारा रेपो रेट बढ़ाने के बाद लगभग सभी बैंकों ने एफडी पर ब्याज की दरों को बढाया है। बैंक ज्यादा से ज्यादा ग्राहकों को आकर्षित करने के लिए दर बढा रहा है। ज्यादातर बैंक लोन और एफडी पर ब्याज बढ़ा रहे हैं। कोटक महिंद्रा बैंक पिछले सात दिनों में तीन बार अपनी एफडी की दरों को बढ़ा चुका है। 15 दिसम्बर को एफडी की दरों में 0.25 फीसदी की वृद्धि करने से पहले 10 दिसंबर और 14 दिसंबर को भी बैंक ने एफडी की दरें बढ़ाई थी। बैंक की नई दरें 2 करोड़ रुपए से कम राशि वाली एफडी पर लागू होंगी। बैंक अब 390 दिनों की एफडी पर 7 फीसदी की दर से ब्याज दे रहा है। कोटक बैंक की ये नई एफडी दरें 15 दिसंबर से प्रभावी हो गई हैं। बैंक अब 7 से 14 दिन की एफडी पर आम लोगों को 2.75 फीसदी और सीनियर सिटीजन को 3.25 फीसदी का ब्याज ऑफर कर रहा है। वहीं 15-30 दिन के लिए आम लोगों को 3 फीसदी और सीनियर सिटीजन के लिए 3.50 फीसदी की दर से ब्याज दे रहा है। इसी तरह 390 दिन (12 महीने 25 दिन) की एफडी पर आम जनता के लिए 7 फीसदी तो वहीं सीनियर सिटीजन के लिए 7.50 फीसदी की दर से ब्याज ऑफर कर रहा है।

5 साल से 10 साल तक की एफडी पर बैंक आम जनता को 6.20 फीसदी तो वहीं सीनियर सिटीजन के लिए 6.70 फीसदी की दर से ब्याज दे रहा है।

होंडा जनवरी से अपने वाहनों के दाम 30000 तक बढ़ाएगी

नई दिल्ली । जापान की कार कंपनी होंडा जनवरी से अभी सभी मॉडलों के दाम 30000 रुपए तक बढ़ाने पर विचार कर रही है। कंपनी ने शुक्रवार को कहा कि उत्पादन की बढ़ती लागत और आगामी सख्त उत्सर्जन नियमों के अनुरूप अपने उत्पादों को ढालने के लिए उसे यह फैसला लेना पड़ रहा है। कंपनी भारत में अपनी पूर्ण स्वामित्व वाली अनुषंगी के जरिये कारोबार करती है। इसके साथ ही होंडा पहले ही अपने वाहनों के दाम बढ़ाने की घोषणा करने वाली कंपनियों मारुति सुजुकी हुंदै टाटा मोटर्स मर्सिडीज बेंज ऑडी रेनो किआ इंडिया और एमजी मोटर की सूची में शामिल हो गई है। होंडा कार्स इंडिया के उपाध्यक्ष (बिक्री एवं विपणन) कुणाल बहल ने कहा कि कच्चे माल की कीमतों के उत्पादन लागत पर प्रभाव और आगामी नियामकीय जरूरतों का आकलन करने के बाद हमने 23 जनवरी से अपने वाहनों के दाम बढ़ाने का फैसला किया है। यह मूल्यवृद्धि 30000 रुपए तक होगी। प्रत्येक मॉडल के लिए कीमत वृद्धि भिन्न होगी। भारत चरण-छह उत्सर्जन नियमनों के अनुसार वाहनों में ऐसा उपकरण लगाने की जरूरत होगी जो वाहन के चलते समय उत्सर्जन का स्तर बताएगा। यह नियम अप्रैल 2023 से लागू होगा।

देश में आईफोन का हब बनने की तैयारी शुरू

- फॉक्सकॉन 60 हजार कर्मचारियों के लिए बना रही मेगा हॉस्टल

मुंबई ।

चेन्नई के पास ताइवानी कॉन्ट्रैक्ट मैन्युफैक्चरर फॉक्सकॉन मेगा हॉस्टल का निर्माण करा रही है। एक रिपोर्ट के मुताबिक करीब 20 एकड़ की जमीन पर मेगा हॉस्टल बन रही है। इसमें कई बड़े छात्रावास ब्लॉक होंगे। कॉन्ट्रैक्ट मैन्युफैक्चरर फॉक्सकॉन देश में आईफोन 14 से हित एप्पल फोन बनाती है। मौजूदा समय में फॉक्सकॉन के श्रीपेरंबदूर में इलेक्ट्रॉनिक्स कॉरिडोर में 15 हजार कर्मचारी काम कर रहे हैं। इसमें से अधिकांश महिलाएं हैं। चीन में आईफोन की फैक्ट्री में बीते दिनों हुए हंगामे के बाद अब फॉक्सकॉन की तैयारी भारत में ही आईफोन का उत्पादन और बढ़ाने की है। फॉक्सकॉन ताइवान की इलेक्ट्रॉनिक्स के स्वामित्व वाली एक इंडिया बेस्ड कॉर्पोरेट इकाई है। फॉक्सकॉन की योजनाओं की जानकारी रखने वाले एक वे रिष्ठ अधिकारी ने बताया कि आने वाले 18 महीनों में इन इकाइयों में कुल कर्मचारियों की संख्या 70 हजार से भी ज्यादा हो सकती है। इन कर्मचारियों को रहने के लिए फॉक्सकॉन की ओर से इस मेगा हॉस्टल का निर्माण कराया जा रहा है। इसमें नए कर्मचारियों के लिए आवास सुविधाओं का पूरा इंतजाम रहेगा। रिपोर्ट के मुताबिक करीब 20 हजार बेड वाला एक छात्रावास करीब दस महीने में तैयार हो सकता है। रिपोर्ट के मुताबिक दोनों छात्रावास निर्माणाधीन हैं और दोनों के बीच यह करीब 60 हजार कर्मचारियों के रहने के लिए पर्याप्त होगा। रिपोर्ट के मुताबिक ताइवान की कंपनी अपने कैंपस में दो नए मैन्युफैक्चरिंग प्लांट भी बना रही है यहां पर स्मार्टफोन बनाए जाएंगे। इन प्लांट के पास श्रमिकों के रहने के लिए क्वार्टर भी होंगे। इसी मॉडल को फॉक्सकॉन ने चीन में भी अपनाया था।

दिल्ली हवाई अड्डे पर यात्रियों की भीड़ के नियंत्रण के लिए 5 और एक्सरे मशीन लगाई गई

नई दिल्ली।

दिल्ली के इंदिरा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर बढ़ती भीड़ के बीच यात्रियों के प्रवाह को व्यवस्थित करने के लिए पांच और एक्स-रे मशीनें लगाई गई हैं।शुक्रवार को एक ट्वीट में नागरिक उड्डयन मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने कहा- 9 दिनों के भीतर, दिल्ली हवाई अड्डे ने सुरक्षा-जांच क्षेत्र में 5 एक्स-रे मशीनें स्थापित की हैं। अब यहां कुल 18 एटीआरएस/एक्स-रे मशीनें हो गई हैं। इसके चलते टी3 पर भीड़ कम हो गई है। कई लोगों ने टी3 टर्मिनल पर सुचारू संचालन के बारे में ट्वीट भी किया। शरद अग्रवाल ने कहा, वर्तमान में मैं दिल्ली हवाई अड्डे के टर्मिनल 3 पर हूं। कोई भीड़ नहीं है, सभी काउंटर सुचारू रूप से और व्यवस्थित रूप से काम कर रहे हैं।

आपने समयबद्ध और अच्छे प्रबंधन के साथ भीड़ को बहुत व्यवस्थित तरीके से संभाला। एक अन्य यूजर आनंद ने कहा, दिल्ली हवाईअड्डे पर मैंने अब तक का सबसे सहज अनुभव किया है। 5 मिनट से भी कम समय में काम हो गया।

विमान से कार तक 30 मिनट में पहुंच गया। बधाई हो। टी3 टर्मिनल पर यात्रियों के प्रवाह में सुधार के लिए उपायों के निदेशरें के बाद, हवाईअड्डे ने लोगों को प्रवेश द्वारों पर प्रतीक्षा समय के बारे में सूचित करना भी शुरू कर दिया है। नागरिक उड्डयन मंत्रालय ने मंगलवार को एयरलाइनों को सभी चेक-इन और बैगेज ड्रॉप काउंटरों पर पहले से ही पर्याप्त मैनपावर की तैनाती के लिए लिखा था। मंत्रालय ने संबंधित प्रवेश द्वारों पर प्रतीक्षा समय के संबंध में एयरलाइंस के सोशल मीडिया फीड पर रीयल टाइम डेटा डालने का भी अनुरोध किया था।

वैश्विक मंदी के कारण 2023-24 में भारत की ग्रोथ धीमी होने का अनुमान

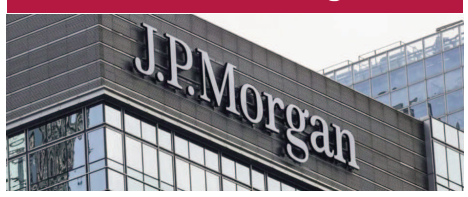

नई दिल्ली।

जेपी मॉर्गन ने एक रिपोर्ट में कहा है कि इस साल 2022-23 में भारत की जीडीपी ग्रोथ 7 फीसदी के करीब रहने का अनुमान है।जेपी मॉर्गन ने कहा कि 2023-24 में विकास दर धीमी होने की उम्मीद है। इसका कारण वैश्विक मंदी है, जो निर्यात पर भार डाल रही है और प्रगतिशील राजकोषीय और मौद्रिक नीति सामान्य हो रही है। रिपोर्ट में कहा गया कि हाल के वर्षों की तुलना में कॉर्पोरेट और बैंक बैलेंस शीट बहुत बेहतर आकार में दिखाई देते हैं। कॉरपोरेट कर्ज/जीडीपी 2006 के बाद से सबसे निचले स्तर पर है और बैंक उधार देने के लिए कहीं अधिक इच्छुक हैं। लेकिन एक व्यापक निजी निवेश चक्र को उच्च वैश्विक अनिश्चितता, धीमी वृद्धि, मौद्रिक स्थितियों को कड़ा करने, विनिर्माण उपयोगिता दरों के अभी भी 80 प्रतिशत से कम होने के बीच फलने-फूलने में समय लगेगा। चालू खाता घाटा (सीएडी) इस वर्ष सकल घरेलू उत्पाद के 3 प्रतिशत से अधिक रहने का अनुमान है क्योंकि निर्यात धीमा हो गया है। सीएडी को स्थायी स्तरों पर वापस लाना 2023 में एक प्रमुख नीतिगत अनिवार्यता होगी।हम उम्मीद करते हैं कि केंद्र इस साल बजटीय राजकोषीय घाटे को जीडीपी के 6.4 प्रतिशत तक रखने में सक्षम होगा और अगले साल इसमें 0.5 प्रतिशत की कमी करेगा।

राजकोषीय संतुलन को बनाए रखने के लिए कैपिटल एक्सपेंडीचर बढ़ाने और घाटे को कम करना होगा। 2023-24 में मुद्रास्फीति स्थिर रहने की उम्मीद है क्योंकि विकास धीमा है और इनपुट मूल्य दबाव कम हो गया है। रिपोर्ट में कहा गया है कि 2022 में आरबीआई द्वारा दरों में लगभग 300 बीपीएस की बढ़ोतरी और तरलता को मजबूत करने के साथ, हम उम्मीद करते हैं कि एमपीसी एक विराम के करीब पहुंच रही है।

कीमतों में कमी की सूचना देगा गूगल क्रोम

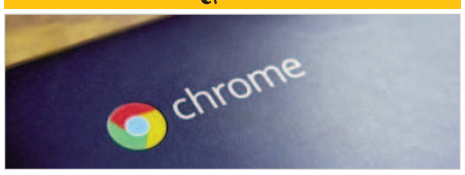

सैन फ्रांसिस्को।

टेक दिग्गज गूगल ने घोषणा की है कि उसका वेब ब्राउजर क्रोम अब यूजर्स को प्रॉडक्ट्स की कीमतों में गिरावट की सूचना देगा।यूजर्स को किसी भी प्रोडक्ट की कीमत देखने के लिए हर दिन पेज को रिफ्रेश करने की जरूरत नहीं है। तकनीकी दिग्गज ने गुरुवार को एक ब्लॉगपोस्ट में कहा कि कीमत में गिरावट होने पर वे क्रोम से ईमेल या मोबाइल नोटिफिकेशन प्राप्त करने के लिए ऑप्ट-इन कर सकते हैं। यह फीचर यूएस में डेस्कटॉप और एंड्रॉइड डिवाइस पर उपलब्ध है और क्रोम एड्रेस बार में ट्रैक प्राइस का चयन करके इसे चालू किया जा सकता है। कीमतों में गिरावट की सूचनाओं के अलावा, गूगल ने अन्य नए फीचर्स भी पेश किए। जब उपयोगकर्ता अपने शॉपिंग कार्ट में आइटम जोड़ते हैं, तो क्रोम खुदरा विक्रेता से उपलब्ध डिस्काउंट कोड ढूंढेगा और उन्हें स्वचालित रूप से चेकआउट पर दिखाएगा। इसके अतिरिक्त, उपयोगकर्ता किसी भी समय नया टैब पेज खोल सकते हैं जब उन्हें मौजूदा शॉपिंग कार्ट को ट्रैक करने की आवश्यकता होती है और उन्हें वहां उपलब्ध छूट भी दिखाई देगी। दोनों फीचर्स अब डेस्कटॉप पर उपलब्ध हैं, जो सबसे पहले यूएस में शुरू हुए। डेस्कटॉप पर क्रोम की मदद से, उपयोगकर्ता अब एक इमेज पर राइट-क्लिक कर सकते हैं और साइड पैनल में तुरंत परिणाम प्राप्त करने के लिए सर्च इमेज विद गूगल लेंस का चयन कर सकते हैं। परिणाम खुदरा विक्रेताओं के समान विकल्प और उपयोगकर्ता के बजट में फिट होने वाली कीमतों को दिखाएंगे। यह यह भी दिखाएगा कि आइटम स्टॉक में है या बैकऑर्डर किया गया है। क्रोम यूजर्स के पते या गूगल पे से भुगतान विवरण जैसी पहले से सहेजी गई जानकारी के साथ स्वचालित रूप से सब कुछ भरकर समय बचाने में उपयोगकर्ताओं की मदद करेगा। टेक दिग्गज ने कहा, हमने हाल ही में 67 और देशों में आपके भुगतान जानकारी को आपके गूगल खाते में सेव करने की क्षमता का विस्तार किया है।

आईपीएल नीलामी में चहल रशीद और जांपा पर लग सकती है बड़ी बोली

मुम्बई । इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के 16 वें सत्र में इस बार स्पिनर युजवेंद्र चहल आदिल रशीद और एडम जांपा की अच्छी मांग रहेगी। सभी टीमें इन तीनों खिलाड़ियों को अपने साथ लाने के लिए लिए तैयारियां शुरू हो गई हैं। आईपीएल 2023 के लिए मिनी नीलामी कोच्ची में 23 दिसंबसर को होगी। आईपीएल के 15वें सत्र में राजस्थान रॉयल्स के स्पिनर युजवेंद्र चहल ने सबसे अधिक 27 विकेट लिए थे और पर्पल कैप अपने नाम की थी। इंग्लैंड के अनुभवी स्पिनर आदिल रशीद ने टी20 विश्व कप में शानदार प्रदर्शन कर अपनी टीम को जीत दिलाने में अहम भूमिका निभाई थी। रशीद ने 6 मैचों में 6.12 की इकोनॉमी से 4 विकेट अपने नाम किए थे। रशीद ने जिस तरह से टी20 विश्व कप में गेंदबाजी की उसे देखते हुए कहा जा सकता है कि उन्हें इस बार लेने के लिए टीम में होड़ रहेगी। आदिल ने आईपीएल 2023 ऑक्शन में अपना बेस प्राइस 2 करोड़ रुपये रखा है। उनके हाल के फॉर्म को देखते हुए वह नीलामी में सभी फ्रेंचाइजी की नजरों रहेंगी।ऑस्ट्रेलियाई लेग स्पिनर एडम जांपा को आईसीसी टी20 विश्वकप 2021 में 13 विकेट लेने के बाद भी पिछले आईपीएल नीलामी में कोई खरीदार नहीं मिला था। जांपा आईपीएल में पहली बार साल 2016 में राइजिंग पुणे सुपर जॉयंट्स की ओर से खेले थे.

बांग्लादेश को जीत के लिए चाहिये 471 रन

भारत 404 और 258 रन पारी घोषित बांग्लादेश 150 और 42

चटगांव ।

मेजबान बांग्लादेश को यहां भारत के खिलाफ पहले क्रिकेट टेस्ट में जीत के लिए 471 रन चाहिये जबकि अभी दो दिनों का समय है। मेजबान टीम ने इसका पीछा करते हुए तीसरे दिन का खेल समाप्त होने के समय तक अपनी दूसरी पारी में बिना किसी नुकसान के 42 रन बना लिए थे। खेल समाप्त होने के समय नजमुल हुसैन शांटो 25 और जाकिर हुसैन 17 रन बनाकर क्रीज पर मौजूद थे। इससे पहले भारतीय टीम ने कुलदीप याव की शानदार गेंदबाजी से मेजबान बांग्लादेश को पहली पारी में 150 रनों पर समेट दिया। भारतीय टीम ने बांग्लादेश को फालोऑन नहीं देते हुए दूसरी पारी शुरु कर दी। भारतीय टीम ने अपनी दूसरी पारी शुभमन गिल के शतक 110 रनों और चेतेश्वर पुजारा के नाबाद शतक 102 रनों की सहायता से दो विकेट पर 258 रनों पर घोषत कर दी। भारतीय टीम ने पहली पारी में 404 रन बनाये थे जबकि बांग्लादेश की टीम 150 रन ही बना पायी थी। ऐसे में पहली पारी की 254 रनों की बढ़त के आधार पर भारतीय टीम की बढ़त बढ़कर 512 रन की हो गई। इस प्रकार भारतीय टीम ने मेजबान टीम को जीत के लिए 513 रनों का लक्ष्य दिया। इस इस मैच में भारतीय टीम की कप्तानी करते हुए लोकेश राहुल ने दूसरी पारी में शुभमन और पुजारा के शतक पूरा होते ही पारी घोषित की। दूसरी पारी में विराट कोहली 19 रन बनाकर नाबाद रहे। तीसरे दिन का आकर्षण शुभमन ओर पुजारा की बल्लेबाजी रही। शुभमन ने इस मैच में टेस्ट क्रिकेट में पहला शतक लगाया। राहुल के आउट होने के बाद शुभमन ने पुजारा के साथ मिलकर 113 रन बनाये। शुभमन ने तेजतर्रार पारी खेली और 152 गेंदों पर 110 रन की पारी में 11 चौके और तीन छक्के लगाये। शुभमन ने संयमित पारी खेली और शॉर्ट गेंदों पर अच्छे शॉट्स लगाए। वहीं राहुल खालेद अहमद के खिलाफ कट लगाने के प्रयास में कैच हो गय। शुभमन मेहदी हसन की गेंद पर शतक लगाने के बाद पेवेलियन लौटे। इसके बाद पुजारा अपने तेज से शतक पूरा करने के प्रयास में लगे रहे। पुजारा ने 130 गेंदों में अपना शतक पूरा किया।

वहीं पुजारा ने लगभग 4 साल के बाद यह शतक लगाया है। पुजारा ने चटगांव में बांग्लादेश के खिलाफ टेस्ट सीरीज के पहले दिन के तीसरे दिन अपना 19वां टेस्ट शतक लगाया। पुजारा ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ जनवरी 2019 में सिडनी टेस्ट के बाद शतक से दूर थे। पुजारा के पिछले 3 साल बिना शतक के चले गए क्योंकि उनका फॉर्म उतार-चढ़ाव भरा रहा। पुजारा ने 29 टेस्ट 52 पारियों और 47 महीनों बाद शतक लगाया है। आज सुबह दूसरे दिन के आठ विकेट पर 133 रनों से आगे खेलते हुए मेजबान टीम ने बचे हुए दो विकेट 17 रनों के अंदर खो दिये। तीसरे दिन का खेल शुरू होते ही कुलदीप ने इबादत को पेवलियन भेजकर बांग्लादेश का 9वां विकेट गिरा दिया। इसके बाद अक्षर पटेल ने मेंहदी हसन का विकेट लेकर बांग्लादेश की टीम को पहली पारी में 150 रनों पर ही आउट कर दिया। । इससे पहले भारतीय टीम ने चेतेश्वर पुजारा और श्रेयस अय्यर के बीच हुई शतकीय साझेदारी से भारतीय टीम को एक बड़े स्कोर तक पहुंचाने में सहायता की। इसके बाद कुलदीप और आर अश्विन के बीच सातवें विकेट के लिए 92 रन की साझेदारी हुई जिससे भारतीय टीम एक बड़े स्कोर तक पहुंची। भारत की ओर से अय्यर और पुजारा के अलावा अश्विन ने भी अर्धशतक लगाया।

अंडर-19 विश्व कप के लिए घोषित अमेरिकी महिला टीम में सभी भारतीय

न्यूयार्क ।(एजेंसी)

अमेरिका ने जनवरी में दक्षिण अफ्रीका में होने वाले आईसीसी अंडर-19 महिला टी-20 विश्व कप के लिए अपनी टीम घोषित कर दी है। इस टीम में शामिल सभी खिलाड़ी भारतीय हैं। 15 सदस्यीय अमेरिकी टीम की कप्तानी गीतिका कोडाली करेंगी जबकि अनिका कोलन को उप-कप्तान बनाया गया है। क्रिकेट यूएसए ने इसके साथ ही पांच रिजर्व खिलाड़ियों की भी घोषणा की है। अमेरिकी टीम को प्रशिक्षण वेस्टइंडीज के पूर्व क्रिकेटर शिवनारायण चंद्रपॉल देंगे।।

महिला अंडर-19 विश्व कप के लिए अमेरिकी टीम इस प्राकर है :

गीतिका कोडाली (कप्तान) अनिका कोलन (विकेटकीपर और उप-कप्तान) अदिति चुडासमा भूमिका भद्रीराजू दिशा ढींगरा इसानी वाघेला जीवना अरस लास्य मुल्लापुडी पूजा गणेश (विकेटकीपर) पूजा शाह रितु सिंह साई तनमयी आईयुन्नी स्निग्धा पॉल सुहानी थडानी तरनम चोपड़ा। वहीं आईसीसी के अनुसार अमेरिका ने हाल के संयुक्त अरब अमीरात दौरे में खेलने वाली 15 में से 14 खिलाड़ियों को बरकरार रखा गया है जबकि 16 वर्षीय बल्लेबाज तरनम चोपड़ा को भी टीम में शामिल किया गया है। आईसीसी के अनुसार यूएसए ने दक्षिण अफ्रीकी टूर्नामेंट के लिए एक अच्छी टीम बनायी है जिसका पहला मैच 14 जनवरी को बेनोनी के विलोमूर पार्क में श्रीलंका के खिलाफ होगा।

शारजाह में होगी एशिया कप तीरंदाजी

नई दिल्ली। तीरंदाज आकाश मलिक अगल माह 25 दिसंबर से शारजाह में होने वाले एशिया कप तीरंदाजी टूनार्मेंट में भारतीय तीरंदाजी टीम का प्रतिनिधित्व करेंगे। युवा ओलंपिक में रजत पदक विजेता आकाश ने हरियाणा के सोनीपत में आयोजित तीन दिवसीय ट्रायल में एशिया कप के लिए अपनी भागीदारी हासिल की। आकाश के अलावा जिन तीन अन्य खिलाड़ियों को शामिल किया गया है। वे हैं महाराष्ट्र सेवा खेल नियंत्रण बोर्ड और झारखंड से हैं। आकाश ने कहा मैं ट्रायल में अपने प्रदर्शन से उत्साहि हूं। इससे मुझे कड़ी मेहनत करने और एशिया कप में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने की प्रेरणा मिलेगी। अपने देश का प्रतिनिधित्व करना गर्व की बात है और टूनार्मेंट में मैं सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन का प्रयास कर पदक जीतने उतरुंगा।

फीफा विश्वकप फुटबॉल के खिताबी मुकाबले में मेसी ओर एमबापे पर रहेंगी सभी की नजरें

दोहा।(एजेंसी)

फीफा विश्वकप फुटबॉल का खिताबी मुकाबला रविवार को अर्जेंटीना और फ्रांस के बीच होगा। दोनो ही टीमें शानदार प्रदर्शन करते हुए यहां तक पहुंची हैं। खिताबी मुकाबले में सभी की नजरें अर्जेंटीना के कप्तान लियोनेल मेसी और फ्रांस के स्टार खिलाड़ी कालियान एमबापे पर रहेंगी। मेसी इसस विश्वकप के बाद खेल को अलविदा कह देंगे। ऐसे में उनके पास खिताब जीतने का यह अंतिम अवसर है। मेसी ने अपने अब तक के करियर में सभी खिताब जीते हैं पर विश्वकप अभी तक उनके हाथ नहीं आया है। मेसी विश्व के शीर्ष फुटबॉलरों में से एक हैं। वहीं दूसरी ओर एमबापे एक युवा खिलाड़ी हैं। फ्रांस ने 2018 में रूस में हुए वर्ल्ड कप के फाइनल में क्रोएशिया को हराकर खिताब जीता था। अब उसकी नजर लगातार दूसरी बार खिताब जीतने पर रहेंगी। उसके स्टार खिलाड़ी एमबापे अच्छे फॉर्म में भी हैं। ऐसे में खिताबी मुकाबले में मेसी और एमबापे के बीच रोमांचक मुकाबला देखने को मिलेगा। वहीं कमाई के लिहाज से देखें तो मेसी 2022 में सबसे अधिक कमाई वाले खिलाड़ी रहे। उनकी कमाई लगभग 1073 करोड़ रुपए की रही। वह सबसे अधिक सात बार सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी रहे हैं और बैलेन डिओर के अवॉर्ड से सम्मानित हैं। अगस्त 2021 में वे स्पेनिश फुटबॉल क्लब बार्सिलोना को छोड़कर पेरिस सेंट जर्मेन से खेलने लगी। वहीं एमबापे की बात करें तो उन्होंने साल 2022 में लगभग 350 करोड़ रुपए कमाये। इस प्रकार कमाई के मामले में वह मेसी से काफी पीछे हैं. मौजूदा वर्ल्ड कप की बात करें तो दोनों ही खिलाड़ियों ने सबसे अधिक 5-5 गोल किये हैं। सेमीफाइनल की बात करें तो अर्जेंटीना ने क्रोएशिया को 3-0 से मात दी थी। वहीं फ्रांस ने मोरक्को को 2-0 से हराया। दोनों ही टीमों ने 2-2 बार विश्वकप जीता है।

अर्जेंटीना को लंबे समय से खिताब का इंतजार है। उसने अंतिम बार 1986 में डिएगो माराडोना की कप्तानी में खिताब जीता था। इस प्रकार 36 साल बाद मेसी भी टीम को जीत दिलाकर माराडोना की बराबरी करना चाहेंगे।

संक्षिप्त समाचार

भारत के लिए पहला टेस्ट शतक बहुत खास है: शुभमन गिल

चटगांव। बांग्लादेश के खिलाफ पहले टेस्ट में भारत की दूसरी पारी में शानदार शतक बनाने वाले युवा ओपनर शुभमन गिल ने कहा है कि भारत के लिए पहला टेस्ट शतक बहुत खास है। गिल ने 152 गेंदों में 10 चौकों और तीन छक्कों की मदद से शानदार 110 रन बनाये। शुभमन ने तीसरे दिन के खेल के बाद शुक्रवार को कहा, यह शतक मेरे, मेरे परिवार और मेरा समर्थन करने वाले सभी लोगों के लिए स्पेशल है। भारत के लिए पहला टेस्ट शतक बहुत खास है। उन्होंने अपने पहले शतक के लिए कहा, मुझे लगा कि शतक काफी लंबे समय पहले आना चाहिए था। मैं विराट भाई से बात कर रहा था कि मुझे मेरा पहला शतक नहीं मिल रहा था। आज मैं शुरूआत के कठिन समय को पार करना चाहता था। मैं ज्यादा सोच नहीं रहा था। मैं फील्ड के अनुसार खेल रहा था और रन बना रहा था। शुभमन ने तीसरे दिन के खेल के बाद शुक्रवार को कहा, यह शतक मेरे, मेरे परिवार और मेरा समर्थन करने वाले सभी लोगों के लिए स्पेशल है। भारत के लिए पहला टेस्ट शतक बहुत खास है।

फीफा विश्व कप: पोलैंड के मार्सिनियाकअर्जेंटीना और फ्रांस के फाइनल में रेफरी होंगे

फीफा विश्व कप: पोलैंड के रेफरी सजीमोन मार्सिनियाक रविवार को लुसैल स्टेडियम में फ्रांस और अर्जेंटीना के बीच फीफा विश्व कप फाइनल की कमान संभालने वाले अपने देश के पहले खिलाड़ी के रूप में इतिहास रचेंगे। मार्सिनियाक, जिन्होंने डेनमार्क पर फ्रांस की ग्रुप-स्टेज जीत और आस्ट्रेलिया की अर्जेंटीना के हाथों राउंड 16 की हार को देखा, को हमवतन पावेल सोकोलनिकी और टॉमाज लिस्टकिविक्ज द्वारा बहुप्रतीक्षित फाइनल के लिए सहायता प्रदान की जाएगी। 41 वर्षीय मार्सिनियाक के पास यूईएफए चैंपियंस लीग का व्यापक अनुभव है और वह पिछले सीजन में विलारियल पर लिवरपूल की पहले चरण की सेमीफाइनल जीत में मैदान में थे। मार्सिनियाक 2016 यूईएफए यूरो में तीन मैचों में रेफरी बने थे। इस बीच, कतर के अब्दुलरहमान अल जसीम शनिवार को खलीफा इंटरनेशनल स्टेडियम में मोरक्को और क्रोएशिया के बीच तीसरे स्थान के लिए प्ले-आफ का संचालन करेंगे। 35 वर्षीय, टूर्नामेंट के दूसरे दिन संयुक्त राज्य अमेरिका और वेल्स के 1-1 ग्रुप स्टेज ड्रा के लिए रेफरी थे। उन्होंने दिसंबर 2019 में लिवरपूल और फ्लेमेंगो के बीच फीफा क्लब विश्व कप फाइनल का संचालन किया था। इस बीच, कतर के अब्दुलरहमान अल जसीम शनिवार को खलीफा इंटरनेशनल स्टेडियम में मोरक्को और क्रोएशिया के बीच तीसरे स्थान के लिए प्ले-आफ का संचालन करेंगे।

कुलदीप बांग्लादेश में सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले भारतीय स्पिनर बने

कुंबले और अश्विन को पीछे छोड़ा

चिटगांव ।(एजेंसी)

टीम इंडिया के स्पिनर कुलदीप यादव ने बांग्लादेश के खिलाफ पहले क्रिकेट टेस्ट मैच में शानदार गेंदबाजी करने के साथ ही एक नया रिकार्ड अपने नाम किया है। बाएं हाथ के कलाई के स्पिनर कुलदीप ने बांग्लादेश की पहली पारी में 40 रन देकर 5 विकेट लिए और इसी के साथ ही वह बांग्लादेश में सबसे अधिक विकेट लेने वाले भारतीय स्पिनर बन गये हैं। पहले यह रिकार्ड अनिल कुंबले और आर अश्विन के नाम था। कुलदीप ने पहले टेस्ट के तीसरे दिन यह उपलब्धि हासिल की।

22 महीनों बाद अपने पहले ही टेस्ट मैच में कुलदीप ने जिस प्रकार का प्रदर्शन किया है। उससे सभी हैरान हैं। कुलदीप ने अंतिम बार फरवरी 2021 में भारत के लिए एक टेस्ट में हिस्सा लिया। उन्होंने लंबे समय बाद मिले अवसर का पूरा लाभ उठाया। यह तीसरी बार है जब इस गेंदबाज ने किसी पारी में पांच विकेट लिए हैं। उन्होंने इससे पहले ऑस्ट्रेलिया और वेस्टइंडीज के खिलाफ एक पारी में पांच विकेट लिए थे।

कुलदीप के बांग्लादेश के खिलाफ इस शानदार प्रदर्शन के साथ ही 18 साल बाद कुंबले का रिकॉर्ड भी टूटा है। कुंबले ने साल 2004 में बांग्लादेश के खिलाफ 55 रन देकर चार विकेट लिए थेथा। वहीं अश्विन ने 2015 में फतुल्लाह में 87 रन देकर 5 विकेट लिए थे हालांकि बांग्लादेश में सबसे अधिक विकेट लेने का रिकार्ड तेज गेंदबाज जहीर खान के नाम है जहीर ने साल 2007 में मीरपुर में 87 रन देकर सात विकेट लिए थे।

अर्जुन से कहा था शतक लगाने का प्रयास करना : सचिन

मुम्बई । महान बल्लेबाज सचिन तेंदुलकर अपने बेटे अर्जुन तेंदुलकर के रणजी में शानदार पदार्पण से उत्साहित हैं। अर्जुन ने भी पिता की तरह ही अपनी पहले ही मैच में शतक लगाया है। अर्जुन ने इसी साल रणजी खेलने के लिए गोवा का रुख किया था और ये फैसला उनके लिए लाभदायक रहा। अर्जुन ने गोवा की ओर से पहले ही मैच में शतक लगाया। अर्जुन ने 207 गेंद में 120 रन बनाये। अर्जुन की इस सफलता से खुश सचिन ने कहा कि शतक से एक रात पहले जब अर्जुन से बात हुई तो मैंने उससे कहा कि शतक की कोशिश करना तब वो 4 रन पर खेल रहा था। सचिन से जब अर्जुन के शतक के बारे में पूछा गया तो सचिन ने अपने पिता रमेश तेंदुलकर से जुड़ी एक कहानी साझा की। उन्होंने कहा 'मुझे याद है कि जब मैंने भारत के लिए खेलना शुरू किया था तब मेरे पिताजी ने किसी को यह कहते सुना था कि यह सचिन के पिता हैं। तब उन्होंने मुझसे कहा था कि यह मेरी जिंदगी के सबसे खास पलों में से एक है। जब आपका बेटा कामयाब होता है तो काफी खुशी होती है। हर पिता यही चाहता है कि उसे बच्चों के काम के कारण ही पहचाना जाए।' इसके बाद सचिन ने कहा 'अर्जुन का बचपन सामान्य नहीं रहा है। एक क्रिकेटर का बेटा होने के कारण उसपर काफी दबाव रहता था।. यही इकलौती वजह है कि जब संन्यास के बाद मुंबई में मीडिया ने मुझे सम्मानित किया था तब मैंने यही कहा था कि उसे क्रिकेट से प्यार करने दीजिए। उसके ऊपर मेरे नाम का दबाव नहीं होना चाहिए। मैं उसे आजादी से क्रिकेट खेलते देखना चाहता हूं। मेरी हमेशा कोशिश रहती है कि वो किसी तरह का दबाव नहीं ले।' उन्होंने सुनील गावस्कर के बेटे रोहन का उदाहरण देते हुए कहा कि अर्जुन के लिए यह सफर आसान नहीं रहा।

पाकिस्तान के बल्लेबाज अजहर अली ने टेस्ट क्रिकेट से संन्यास की घोषणा की

मुल्तान । पाकिस्तान टीम के बल्लेबाज अजहर अली ने टेस्ट क्रिकेट से संन्यास की घोषणा कर दी है। अजहर ने कहा कि वह इंग्लैंड के खिलाफ अपने करियर का अंतिम टेस्ट खेलेंगे। उन्होंने इंग्लैंड के खिलाफ पहले टेस्ट मैच की पहली पारी में 40 और दूसरी में 27 रन बनाए थे। अजहर ने टेस्ट क्रिकेट में साल 2010 में पदार्पण किया था। वह शुरुआत में पाक टेस्ट टीम के अहम बल्लेबाज थे पर पिछले कुछ समय से खराब फार्म के कारण आलोचना का केन्द्र बने हुए थे। टेस्ट करियर में उन्होंने 3 दोहरे शतक और एक तिहरा शतक भी लगाय है। इसके अलावा उनके नाम 19 शतक और 35 अर्धशतक हैं। इस बल्लेबाज ने 95 टेस्ट में 7097 रन बनाये हैं। उन्हें श्रीलंका के खिलाफ टेस्ट में अंतिम ग्यारह में जगह नहीं मिली थी पिछले आठ साल में यह पहली बार था जब वह टीम से बाहर हुए थे। पिछली 9 पारियों में वह केवल एक बार अर्धशतक लगा पाये हैं। अजहर ने अपने करियर को लेकर कहा 'सर्वोच्च स्तर पर अपने देश के लिए खेलना मेरे लिए सम्मान और सौभाग्य की बात है। यह तय करना कि संन्यास कब लिया जाये काफी कठिन होता है पर काफी विचार करने के बाद मुझे एहसास हुआ कि मेरे लिए टेस्ट क्रिकेट से संन्यास लेने का यह सही समय है।'

पूर्व क्रिकेटर मुनाफ पटेल के दो बैंक खाते सीज 52 लाख रुपयों की वसूली

यूपी रेरा के तहत नोएडा जिला प्रशासन ने की कार्रवाई

नोएडा । (एजेंसी)

नोएडा जिला प्रशासन ने भारतीय टीम के पूर्व क्रिकेटर मुनाफ पटेल के दो बैंक खातों को सीज करने के साथ ही उनसे 52 लाख रुपयों की वसूली की है। एक अधिकारी के अनुसार उत्तर प्रदेश भू-संपदा विनियामक प्राधिकरण (यूपी रेरा) द्वारा जारी वसूली प्रमाणपत्र (आरसी) के आधार पर मुनाफ के खिलाफ यह कार्रवाई की गयी है। मुनाफ बिल्डर कंपनी निवास प्रमोटर्स प्राइवेट लिमिटेड में निदेशक हैं। यूपी रेरा ने मुनाफ की कंपनी द्वारा निवेशकों की रकम नहीं लौटाने के आरोप में उनके खिलाफ ये कार्रवाई की है। जिलाधिकारी गौतम बुद्ध नगर सुहास एलवाई ने बताया कि यूपी रेरा की आरसी के आधार पर बिल्डर मुनाफ के खिलाफ कार्रवाई की गई है। मुनाफ निवास प्रमोटर्स कंपनी में निदेशक हैं। विधिक सलाह के बाद राजस्व टीम ने बैंक खाता सीज कर आरसी का पैसा वसूला। इसके साथ ही बची हुई धनराशि की वसूली का भी प्रयास किया जा रहा है।

जिलाधिकारी ने कहा ग्रेटर नोएडा वेस्ट सेक्टर-10 में निवास प्रमोटर्स प्राइवेट लिमिटेड के तहत वनलीफ ट्रॉय नामक एक परियोजना पर काम हो रहा है जिसके खरीदारों ने परियोजना समय पर पूरा नहीं होने पर यूपी रेरा में शिकायत की थी। शिकायत के आधार पर सुनवाई के बाद यूपी रेरा ने बिल्डर के खिलाफ आदेश जारी किया था। उन्होंने कहा कि आदेश का पालन नहीं करने पर यूपी रेरा ने बिल्डर को आरसी जारी कर दी थी। जिला प्रशासन के पास बिल्डर के खिलाफ 10 करोड़ रुपये की 40 से अधिक आरसी लंबित है। एलवाई ने बताया इस मामले में दादरी तहसील की टीम ने वसूली का प्रयास किया लेकिन बिल्डर ने पैसे नहीं दिए। इसके बाद तहसील की टीम ने विधिक सलाह लेने के बाद कंपनी के निदेशकों से वसूली शुरू कर दी।

टी20 में छाये रहे सूर्यकुमार

नई दिल्ली । टीम इंडिया के आक्रामक बल्लेबाज सूर्यकुमार यादव की इस साल टी20 में धूम रही। सूर्या ने साल में सबसे ज्यादा रना बनाने के के साथ ही कई और रिकार्ड अपने नाम किये और इससे वह आईसीसी बल्लेबाजी रैंकिंग में भी नंबर एक स्थान पर पहुंच गये। इस बल्लेबाज ने इस साल 31 टी20 में लगभग 188 के स्ट्राइक रेट से कुल 1164 रन बनाए हैं। सूर्यकुमार इस प्रारुप में एक साल में एक हजार या इससे ज्यादा रन बनाने वाले भारत के पहले जबकि विश्व के दूसरे बल्लेबाज हैं। सूर्यकुमार ने टी20 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में दो शतक लगाये हैं। उन्होंने इस दौरान टीम इंडिया के कप्तान रोहित शर्मा के रिकॉर्ड की बराबरी की जिन्होंने साल 2018 में यह उपलब्धि हासिल की थी। सूर्यकुमार ने इस साल इंग्लैंड में 117 रन की शानदार पारी खेली थी जबकि न्यूजीलैंड के खिलाफ 111 रन की मैच विजेता पारी खेली। सूर्यकुमार न्यूजीलैंड के खिलाफ टी20 शतक लगाने वाले पहले भारतीय बल्लेबाज हैं। उन्होंने पिछले महीने यानी नवंबर 2022 में न्यूजीलैंड टीम के खिलाफ 111 रन की नाबाद पारी खेली थी। सूर्यकुमार ने टी20 में इस साल कई यादगार पारियां खेली हैं। इसके कारण ही उन्हें 7 बार मैन ऑफ द मैच का अवॉर्ड दिया गया। इस दौरान उन्होंने टीम इंडिया के पूर्व कप्तान विराट कोहली को भी पीछे छोड़ा। इससे पहले यह रिकॉर्ड कोहली के नाम था जिन्हें साल 2016 में 6 बार मैन ऑफ द मैच चुना गया था। सूर्यकुमार यादव ने इस दौरान रोहित शर्मा और केएल राहुल (चरु ऋड्डद्धह्वद्य) के विशेष क्लब में शामिल हो गए। सूर्यकुमार ने एक कैलेंडर ईयर में सबसे ज्यादा छक्के जड़ने का रिकॉर्ड भी अपने नाम कर लिया है. सूर्यकुमार ने एक कैलेंडर ईयर में सबसे ज्यादा 68 सिक्स लगाए हैं।

अमित शाह ने आगामी ओलंपिक 2036 का मेजबान बनने की प्रारंभिक तैयारियों की समीक्षा की

गांधीनगर ।

गुजरात ने आगामी ओलंपिक 2036 का मेजबान बनने की प्रारंभिक तैयारियां शुरू कर दी हैं। केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह की अध्यक्षता में इस संबंध में एक उच्चस्तरीय बैठक मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल और खेल मंत्री हर्ष संघवी की उपस्थिति में शुक्रवार को अहमदाबाद में आयोजित हुई। इस बैठक में ओलंपिक 2036 में शामिल खेलों के आयोजन के लिए अहमदाबाद और गांधीनगर में नरेन्द्र मोदी स्टेडियम के निकट आकार लेने वाले सरदार पटेल स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स तथा नारणपुरा स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में आवश्यक ढांचागत सुविधाओं का निर्माण करने के संबंध में प्राथमिक चर्चा-विचार किया गया। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने इस बैठक में 2036 ओलंपिक खेलों के लिए राज्य सरकार द्वारा चिन्हित किए गए स्थलों पर आवश्यक स्पोर्ट्स इंफ्रास्ट्रक्चर खिलाड़ियों एवं कोच आदि की आवास सुविधाओं सहित अन्य व्यवस्थाओं का ओलंपिक मानदंडों के अनुसार निर्माण सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक मार्गदर्शन दिया। इतना ही नहीं उन्होंने वाटर स्पोर्ट्स एवं माउंटेन स्पोर्ट्स के लिए चयनित किए जाने वाले स्थलों पर भी संपूर्ण सुविधाएं सुनिश्चित करने के आयोजन को लेकर मार्गदर्शन दिया। अमित शाह ने यह सुझाव भी दिया कि मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल और खेल मंत्री हर्ष संघवी समय-समय पर राज्य सरकार द्वारा बनाई गई कार्य योजनाओं की समीक्षा करें। केंद्रीय गृह मंत्री ने कहा कि यह स्पष्ट है कि 2036 का ओलंपिक अहमदाबाद महानगर को दिल्ली मुंबई और कोलकाता जैसे देश के अति विकसित महानगरों की तुलना में अधिक तेजी से विकसित महानगर बनाने वाला साबित होगा। बैठक में मुख्य सचिव पंकज कुमार शहरी विकास विभाग के प्रधान सचिव मुकेश कुमार तथा खेल सांस्कृतिक मामले विभाग के प्रधान सचिव अश्विनी कुमार ने ओलंपिक 2036 के लिए गुजरात की तैयारियों के संबंध में एक प्रेजेंटेशन प्रस्तुत किया। इस बैठक में अहमदाबाद महानगर पालिका के आयुक्त थेन्नारसन अहमदाबाद शहरी विकास प्राधिकरण (औडा) के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) डीपी देसाई तथा वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे।

नाबालिग लड़की से दुष्कर्म के दोषी को 10 साल की सजा 10 हजार का जुर्माना

राजकोट।

धोराजी की अतिरिक्त सत्र अदालत ने दो साल पहले के दुष्कर्म के मामले में आरोपी को दोषी करार देते हुए उसे 10 साल की सजा सुनाई है। साथ ही रु. 10 हजार जुर्माना और पीड़ित को 4 लाख रुपए का मुआवजा देने का आदेश दिया है। घटना 2020 की जब सूरत निवासी नाबालिग लड़की राजकोट जिले के धोराजी में अपने रिश्तेदार के यहां आई थी। 2020 में जन्माष्टमी के अवसर पर नाबालिग लड़की को संजय उर्फ चंदू नामक युवक भगा ले गया था। जिसके बाद सोमनाथ और द्वारका समेत विभिन्न शहरों में नाबालिग लड़की के साथ संजय रहा और उस दौरान उसके साथ कई बार शारीरिक संबंध बनाए। मामला पुलिस थाने पहुंचा और पुलिस ने इसकी जांच कर आरोपी संजय को गिरफ्तार कर उसके खिलाफ चार्जशीट कोर्ट में पेश कर दी। राजकोट जिले के धोराजी की अतिरिक्त सत्र अदालत में सरकारी वकील अपनी दलील में कहा कि पीड़ित के 18 वर्ष पूरे होने में 4 दिन शेष थे तब आरोपी संजय उर्फ चंदू ने उसके साथ शारीरिक संबंध बनाए थे। वकील की दलील को ध्यान में रखते हुए अतिरिक्त सत्र न्यायालय के न्यायधीश राहुल कुमार शर्मा ने संजय उर्फ चंदू को भारतीय दंड संहिता की धारा 376(1) पोक्सो एक्ट की धारा 4 के अंतर्गत आरोपी को दोषी करार दिया। कोर्ट ने संजय उर्फ चंदू को 10 साल की सजा और रु. 10 हजार का जुर्माना किया है। साथ ही पीड़ित को रु. 4 लाख बतौर मुआवजा भी देने का कोर्ट ने आदेश दिया है।

एक्सिस बैंक ने MSMEs के लिए 'इवॉल्व' का 7वां संस्करण लॉन्च किया

एक्सिस बैंक, भारत का तीसरा सबसे बड़ा निजी क्षेत्र का बैंक, सूरत में सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) के लिए एक वार्षिक ज्ञान साझाकरण संगोष्ठी 'इवॉल्व' के 7वें संस्करण की मेजबानी की। इवॉल्व का 7वां संस्करण व्यापक विषय पर केंद्रित था - 'इंडियन एसएमई: शिफ्टिंग गियर्स फॉर नेक्स्ट लेवल ग्रोथ' उप-थीम 'डिजिटलाइजेशन टू बिल्डिंग इंडियन एसएमई' और 'न्यू वर्ल्ड ऑर्डर में एसएमई के लिए निर्यात सेमिनार को संग्राम सिंह, प्रेसिडेंट- कमर्शियल बैंकिंग कवरेज ग्रुप (सीबीजी), एक्सिस बैंक और श्री श्रेयांस ढोलकिया, एंटरप्रेन्योर- ब्रांड कस्टोडिया, श्री रामकृष्ण एक्सपोर्ट्स प्राइवेट लिमिटेड ने संबोधित किया।

इवॉल्व का 7वां संस्करण इस बात पर ध्यान देगा कि कैसे प्रौद्योगिकी और डिजिटलीकरण निर्यात से घातीय वृद्धि हासिल करने में मदद कर सकते हैं, जो कि एमएसएमई के लिए लाभप्रदता और बाजार में उपस्थिति बढ़ाने के लिए ध्यान देने का एक प्रमुख क्षेत्र है।इवोल्व के माध्यम से, एक्सिस बैंक का उद्देश्य एमएसएमई को उद्योग के विचारक नेताओं से बातचीत करने और सीखने के लिए एक मंच प्रदान करना है, जिन्होंने वर्षों से अपने व्यवसायों को बदल दिया है।

लॉन्च के दौरान, श्री संग्राम सिंह, प्रेसिडेंट, कमर्शियल बैंकिंग कवरेज ग्रुप, एक्सिस बैंक ने कहा, "हम दृढ़ता से मानते हैं कि एमएसएमई हमारे देश के लिए विकास के इंजन हैं और प्रगति में भागीदारों के रूप में, एक्सिस बैंक में हम वित्तीय और वित्तीय दोनों तरह की पेशकश करने का प्रयास करते उनकी यात्रा में एक सच्चे भागीदार के रूप में हमारी प्रतिबद्धता और भूमिका को मजबूत करने के उद्देश्य से, हमने बैंकिंग के पारंपरिक दायरे से परे एमएसएमई को हमेशा अपना समर्थन दिया है।"

एमएसएमई क्षेत्र में अपने निर्यात हिस्से को बढ़ाने की अपार क्षमता है।उद्योग की चुनौतियों के बावजूद, सरकारी समर्थन, डिजिटल उपकरण, वित्त और प्रौद्योगिकी तक बेहतर पहुंच, व्यापार सुगमता और वैश्विक बाजारों जैसे सकारात्मक रुझानों ने एमएसएमई को टेलविंड का लाभ उठाने और विकास को अगले स्तर तक ले जाने के लिए सशक्त बनाया है।एक्सिस बैंक अपने नॉलेज शेयरिंग पार्टनर डन एंड ब्रैडस्ट्रीट के साथ मुंबई, चेन्नई, इंदौर, भुवनेश्वर, लखनऊ, कोलकाता, अहमदाबाद आदि जैसे 20 शहरों में इवॉल्व की मेजबानी करेगा। ज्ञान श्रृंखला के प्रत्येक सत्र में नए जमाने की रणनीतियों, केस स्टडीज,विकास प्रक्रिया को आगे बढ़ाने के लिए परिचालन विशेषज्ञता, और नियामक ढांचे, ज्ञान और कौशल की समझ।

गुजरात हाईकोर्ट को राज्य सरकार से क्यों कहना पड़ा - 'भय बिन होय न प्रीत'

अहमदाबाद।

गुजरात हाईकोर्ट ने आज राज्य की सभी प्राथमिक स्कूलों में गुजरात विषय अनिवार्य रूप से पढ़ाने की मांग करती याचिका पर सुनवाई करते हुए सरकार से कहा कि अगर यह उसका निर्णय है तो इसे लागू करने में वह लाचारी ना बताए और इसे सख्ती लागू करे। हाईकोर्ट ने कहा 'भय बिन होय न प्रीत'। गुजरात हाईकोर्ट में 'मातृभाषा अभियान' नामक संस्था ने जनहित याचिका दाखिल कर राज्य की सभी स्कूलों में गुजराती भाषा को पढ़ाए जाने की मांग की है। याचिका में बताया गया कि राज्य की 14 स्कूलें ऐसी हैं जहां गुजराती भाषा नहीं पढ़ाई जाती। इसके अलावा अन्य कई स्कूलों में भी ऐसी स्थिति है। याचिका में सरकार के 13 अप्रैल 2018 के परिपत्र का अमल करने की मांग की गई है। जिसमें राज्य की प्रत्येक प्राथमिक स्कूलों में गुजराती विषय अनिवार्य रूप से सिलसिलेवार अलग अलग कक्षाओं में पढ़ाए जाने का उल्लेख है। सरकार के इस परिपत्र की अमलवारी राज्य में नहीं होने की हाईकोर्ट से शिकायत की गई है। इस याचिका पर सुनवाई करते हुए हाईकोर्ट ने कहा कि गुजरात बोर्ड समेत सभी बोर्ड पर राज्य सरकार की नीति लागू होती है। जो बोर्ड गुजराती भाषा अपने पाठ्यक्रम में शामिल नहीं करते उनके खिलाफ राज्य सरकार को कार्यवाही करनी चाहिए।

मातृभाषा की पढ़ाई बच्चों का अधिकार है और जो बोर्ड बच्चों की मातृभाषा को अपने पाठ्यक्रम में शामिल नहीं करते उनके खिलाफ राज्य सरकार को कड़ी कार्यवाही करनी चाहिए। हाईकोर्ट ने कहा 'भय बिन न होय प्रीत'। हाईकोर्ट ने कहा कि सरकार इसे लागू करने में लाचार है तो कोर्ट जरूरी आदेश देगी। सरकार की ओर से हाईकोर्ट में दलील दी गई कि राज्य की सभी स्कूलों में गुजराती भाषा पढ़ाई जाती है। जल्द ही संबंधित जिला शिक्षा अधिकारियों से जानकारी एकत्र कर कोर्ट में पेश करेंगे। गुजरात हाईकोर्ट इस मामले पर अगली सुनवाई 22 दिसंबर को करेगी।

काया ने सूरत में एक और नए क्लीनिक की शुरुआत के साथ भारत में अपनी उपस्थिति का किया विस्तार

सूरत। काया, जो कि भारत का एक प्रमुख स्किनकेयर ब्रांड है, ने सूरत के वेसु में अपने नए क्लिनिक के साथ अपनी ऑफलाइन उपस्थिति का विस्तार किया। साल 2005 में घोड़दौड़ रोड पर अपना पहला क्लिनिक शुरू करने के बाद काया का यह इस खूबसूरत शहर में दूसरा क्लिनिक है।

काया की निकट भविष्य में अपने विस्तार को लेकर एक आक्रामक योजना है, और जिसमे सूरत की पहचान एक मजबूत संभावनाओं के रूप में की गई है। विकसित होते, बेहतरीन यात्रा, ग्लोबल ब्यूटी ट्रेंड की आकांक्षी दृष्टिकोण की बिज़नेस कम्युनिटी के साथ, काया के आगे बढ़ने के लिए सूरत एक प्रमुख शहर के रूप में है।

नए लॉन्च पर बोलते हुए, राजीव नायर, सीईओ - काया ने कहा, "काया हमेशा से ही अपने समय से आगे रही है और लगभग दो दशकों से भारत में ब्यूटी और हेल्थ स्किन के लिए एक खास मानक के रूप में स्थापित है। अपने उपभोक्ताओं के साथ अपनी सेवाओं में लगातार सुधार करना और उन्हें फिर से परिभाषित करना काया के स्वभाव का एक अभिन्न अंग है। काया की कम्युनिटी का लगातार विस्तार होता जा रहा है और इसके साथ ही हमारा लक्ष्य उनके टेस्ट, क्वालिटी तथा समावेशिता के तमाम मानकों को पूरा करना है। इसके अलावा हमारी युवा ऑडियंस के लिए प्रासंगिक होने के नाते उन्हें 'खुद की सर्वश्रेष्ठ सुंदरता' खोजने के लिए 'स्वयं की पसंद' की स्वतंत्रता के साथ सशक्त बनाने के बारे में है जो कि समावेशी होने, व्यक्तिवादी होने और 'यू डू यू' की संस्कृति के बारे में है"।

नए क्लिनिक के लॉन्च पर उत्साहित श्री राजीव सूरी, ग्लोबल सीईओ - काया ने साझा किया, "हमने काया के प्रोडक्ट्स और सर्विसेज के लिए अपने सभी बाजारों में एक जबरदस्त प्रतिक्रिया देखी है। इसके साथ ही वैश्विक स्तर पर, हम ब्यूटी और वेलनेस से संबंधित प्रोडक्ट्स की खपत में भी लगातार वृद्धि देख रहे हैं; खासकर भारत में, इन सर्विसेज और प्रोडक्ट्स का उपभोग करने में काफी तेजी के साथ वृद्धि हुई है। इसके अलावा हम मिलेनियल्स के बढ़ते बेस को लेकर भी बात कर रहे हैं जो कि अपनी पर्सनेलिटी को अपने लाइफस्टाइल एवं वेलनेस प्रैक्टिसेज में अपनाने वाली हर चीज में शामिल करते हैं।"

लगभग 1465 वर्ग फुट में फैले इस नए क्लिनिक का लक्ष्य अपने बढ़ते कस्टमर बेस के एक कदम और नजदीक पहुंचना है। 90 से अधिक डर्मेटोलॉजिस्ट के साथ भारत में सबसे बड़े एस्थेटिक डर्मेटोलॉजी चैन में से एक होने के नाते, काया अत्याधुनिक तकनीक, विश्व स्तर पर प्रशंसित सेवाओं तथा त्वचा, शरीर एवं बालों के लिए समग्र समाधान के साथ अपना सर्वश्रेष्ठ सुनिश्चित करती है।

त्वचा के सूक्ष्म-विश्लेषण और उनकी डी2सी वेबसाइट दोनों के लिए क्लिनिक में संगठन को डी365 इंटीग्रेशन तथा आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस टूल के साथ सक्षम किया गया है, ताकि स्व-विश्लेषण (सेल्फ एनालिसिस) और मशीन लर्निंग बेस्ड सॉल्यूशन रेकमेंडेशन की अनुमति मिल सके।

काया अपनी इंक्लूसिव ब्यूटी फिलॉसफी के साथ अपनी प्रतिबद्धता को आगे बढ़ाता है, जिससे हर कोई अपनी 'खूबसूरती' को खोजने में सक्षम हो जाता है।

कल से पूरे भारत में तीन से चार लाख लोग 72 घंटे का उपवास कर विरोध करेंगे

सूरत।

हाल ही में केंद्र सरकार द्वारा पवित्र तीर्थ स्थल समेत शिखरजी जो झारखंड राज्य में स्थित है जिसमें 20 तीर्थंकर देवताओं का निर्माण किया गया है और करोड़ो आत्माओं ने सिद्धि प्राप्त की है। ऐसे पवित्र तीर्थ स्थल पर ईको-टूरिज्म घोषित कर जैन समुदाय की भावनाओं को आहत करने के लिए पूरे भारत में जैन समुदाय लगातार आक्रोशीत है। उसके लिए कल से पूरे भारत में तीन से चार लाख लोग 72 घंटे का उपवास करेंगे और लगभग 20 करोड़ लोग नवकार मंत्र का मौन रहकर विरोध करेंगे और अपनी भावनाओं का प्रदर्शन करेंगे। अभी विभिन्न शहरों में इसका बहुत गहरा असर पड़ रहा है, उनके समाज के हजारों लोग, लाखों लोग रैली के रूप में एकजुट हैं और कलेक्टरों को याचिका देकर अपना विरोध जता रहे हैं.

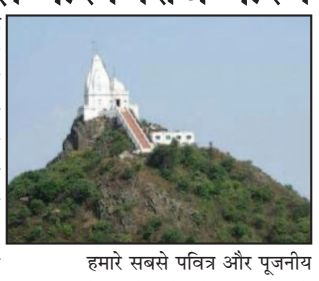

इस कारण यदि सरकार जाग्रत होकर जैन समुदाय की भावनाओं का आदर करती है और इस अधिसूचना को नहीं हटाती है तो जैन समुदाय फिर भी अहिंसा के माध्यम से आक्रामक कदम उठाने के लिए एकत्रित होगा इस अधिसूचना को हटाने का सरकार से अनुरोध है और हमारी धार्मिक भावनाओं को समझने का अनुरोध है। हमारे सबसे पवित्र और पूजनीय देवताओं को तोड़ कर हमारे दिलों के साथ खिलवाड़ किया जा रहा है और खेला जा रहा है।

जैन समाज हमेशा अहिंसा के रास्ते पर चलता रहा है और उसी रास्ते पर चलने वाले हम लोग हमेशा सरकार से उम्मीद करते हैं कि वह हमारी भावनाओं और हमारे धर्म की रक्षा के लिए हमारे साथ खड़े रहे।

रत्न और आभूषण निर्माता प्रदर्शनी सरसाना, सूरत में आयोजित हुई

सूरत

इस प्रदर्शनी का आयोजन 16 से 18 दिसंबर तक किया गया है। जिसमें रोज़ेटा डायमंड ज्वेलरी भारत का एकमात्र ब्रांड है जो पूरे भारत में ग्राहकों को संतोषजनक कीमतों पर असली हीरे के आभूषण प्रदान करता है।

रोज़ेटा के आभूषण 3999, 7999, 14999, 19999 और 29999 की मूल्य श्रेणी में हैं। जिसमें रोसेटा के 29999 की रेंज में नवीनतम संग्रह को आकर्षक डिजाइनों के साथ रूट्स प्रदर्शनी में प्रदर्शित किया गया है। इसमें अंगूठियां, कंगन और मंगलसूत्रों का विविध संग्रह है। रोसेटा डायमंड ज्वैलरी की पूरे भारत में 1000 से अधिक फ्रेंचाइजी हैं और 3 लाख से ज्यादा संतुष्ट ग्राहक हैं। रोज़ेटा डायमंड ज्वेलरी के संस्थापक श्री राजूभाई मोर्डिया का सपना "डायमंड सब के लिए" टैग लाइन के तहत भारत में हर ग्राहक के असली हीरे के आभूषण पहनने के सपने को पूरा करना है। रोज़ेटा का नया अभियान "पहनो तो रीयल हीरा" है।

इस बार एक मुट्ठी बादाम के साथ मनाएँ क्रिसमस का त्यौहार!

क्रिसमस बेशक साल के उन त्यौहारों में से एक है, जिसका लोगों को सबसे ज्यादा इंतज़ार रहता है। दिसम्बर के आते ही एक्स-मस ट्रीज, जिन्गलिंग बेल्स, कैरोलिंग क्वाइअर्स और सीक्रेट सैंटा का समय आरम्भ हो जाता है। भेंट-मुलाकातों और डिनर पार्टियों से शुरू होकर सरप्राइजेज, छुट्टियों और उपहारों तक, क्रिसमस के मौके पर हर किसी के लिए कुछ न कुछ होता ही है। कड़ाके की सर्दी और स्वेटर का मौसम होने के कारण यह और भी आनंददायक बन जाता है।

हालाँकि, क्रिसमस अनेक कारणों से उत्साहवर्द्धक होता है, लेकिन इस अवसर पर हममें से अधिकतर लोगों को ललचाने वाले अलग-अलग स्वाद का सबसे बढ़कर इंतज़ार रहता है। इस वर्ष, सोच-समझकर और होशियारी से भोजन के विकल्प चुनें और सेहतमंद तरीके से उत्सव का आनंद उठाएँ।

बादाम वास्तव में सुन्दर स्वास्थ्य का उपहार हैं जिन्हें आप खुद को, अपने दोस्तों और परिवार को भेंट कर सकते हैं। विटमिन ई, प्रोटीन, आयरन, राइबोफ्लाविन, मैंगनीज और फोलेट के साथ-साथ अनेक दूसरे आवश्यक पोषक तत्वों के स्रोत के रूप में विख्यात बादाम, पौष्टिक और स्वास्थ्यवर्द्धक स्नैक हैं। पोषणकारी फायदों के अलावा बादाम कुरकुरे नट्स हैं जिन्हें अनेक खाद्य पदार्थों के साथ मिलाया जा सकता है। क्रिसमस आपकी कुकिंग स्टाइल को ताजा करने और नए-नए स्वादिष्ट तथा स्वास्थ्यकर व्यंजन आजमाने का अवसर प्रदान करता है।

बॉलीवुड की जानी-मानी अभिनेत्री और सेलेब्रिटी, सोहा अली खान ने कहा कि, "क्रिसमस घर में हमारे लिए सबसे अधिक प्रतीक्षित त्यौहारों में से एक है। मुझे लाइट्स, सुंदर क्रिसमस ट्री से अपना घर सजाना और अपनी बेटी के साथ स्वादिष्ट मिठाइयाँ बनाना अच्छा लगता है। लेकिन इन सारे फन के बीच मैं हमेशा सुनिश्चित करती हूँ कि हमलोग अपनी सेहत बनाए रखने के लिए खाने के सेहतमंद विकल्पों और सामग्रियों का ही इस्तेमाल करें। मैं अपने घर के लिए क्रिसमस का स्पेशल केक मैदा के बदले आमंड के आटे से बेक करती हूँ। मैं इसे आमंड फ्लेक्स से गार्निश भी करती हूँ क्योंकि इससे केक ज्यादा पौष्टिक बन जाता है। आमंड में अनेक पौष्टिक तत्व, जैसे कि विटमिन ई, प्रोटीन, कैल्शियम, मैग्नीशियम, पोटैशियम आदि होते हैं जिनके कारण वे हमारी डाइट के शानदार साथी हैं।"

स्वात्वाधिकारी, प्रकाशक, सम्पादक: संजय रमाशंकर मिश्रा द्वारा ११४, न्यू प्रियंका टाउनशीप अपार्टमेन्ट, डिंडोली, उधना, सुरत (गुजरात) प्रिन्टर्स- भूनेश्वरा प्रिन्टर्स, प्लाट नं. 29, परमानन्द इण्डस्ट्रीयल सोसायटी, चौकसी मील के पास, उधना मगदल्ला रोड़ (गुजरात) से मुद्रित एवं ११४, न्यू प्रियंका टाउनशीप अपार्टमेन्ट, डिंडोली, उधना, सूरत (गुजरात) से प्रकाशित। कार्यालय फोन: 0261-22 142 11, (न्यायिक क्षेत्र सूरत रहेगा)